

NOT FOR SALE

त्रिशवित साधना विशेषांक

सितम्बर 2001

मूल्य : 18/-

मुख्य-तंत्र-यज्ञ

विज्ञान



इन्द्राक्षी साधना

तीव्र प्रभाव साबरणंत्र

लामुण्डा स्तोत्र

जगत् जगद् गणानन्दे

रश्मि चिकित्सा

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

श्रीवृषभकाश

॥ ३० पद्म तत्वाय जादायणाय गुक्क्या नमः ॥



साधना

इन्द्राणी साधना:	27
माहेश्वरी साधना	30
कौमुदी साधना	34
विनयदशमी साधना	56



सदगुरुदेव

सदगुरु प्रवचन	5
गुरु वाणी	44
स्तम्भ	
जिष्य धर्म	43
वाधक साधी	50
नशनों की बाणी	60
मैं स्वमय हूँ	62
वराहमिहीर	63
जीवन सत्त्वा	69
इस जीवन विलीन में	80
एक दृष्टि में	86



विशेष

चण्डिका स्तोत्र	46
सूर्य रेखा कथा कहती है	82
ऐतरेय उपनिषद्	64
सावर वंत्र	39

विवेचन

शक्ति साधना करें	23
सूर्य रस्मि चिकित्सा	71
शापोदार दीक्षा	75



सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोलाट इलाज, पीरगुरु, फ़ोन: +91-0034, फैक्स: 011-7182248, टेली फैक्स: 011-2196730
मंत्र-नृ-योग, वैद्यन, २८ श्रीमाली नगर, हाईकोट गोलानी जाह्या-343001 (राजस्थान), फैक्स: 0291-432233, टेलीफैक्स: 0291-432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

प्रेरक संस्थापक
डॉ. लालायणदत्त
श्रीमाली
(पद्मराहंस स्वामी
निर्विस्तरे द्वयवाचं ज्ञाते)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्दविजयोर
श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री वैश्वानाराचन्द्र श्रीमाली

संयोजक द्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन ललाहकार भंडल
जा० १० राम चैत्रनाथ गाल्ली,
श्री मुकु लेवक श्रीकाल्य,
श्री रमेश पाटिल, श्री एस. के. विष्णु,
श्री आर. नी. सिंह, श्री गणेशर
महाराज, श्री वसन पाटिल, श्री
सतीश विश्वा (बसवाई), श्री एम.
आर. विश्वा, श्री सुधीर मलोकर,
श्री विनय शास्त्री (हरियाणा),
श्री कृष्ण गोदा (कर्नाटक),
द०० एस. के. धीताम (नेपाल).

प्रकाशक गव्य नवायित्व
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
द्वारा
नील आर्ट इन्डियर्स
८०८०, नरायणा इडस्ट्रियल
रोड्या फैक्स १, नई दिल्ली
से मुद्रित तथा
मंत्र-नृ-योग विज्ञान साईकोट
कौलोनी, नृधनपुर से
प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 195/-

प्राथग्ना

नवनुजान सहस्रार पंकजसीन भव्यम् ।
 शुद्ध नृठिक संकाशम् शरव्वनद्वि निभाननम् ॥
 प्रकृतलोकीवशकार तेत्र द्वय विराजतम् ।
 मुखलग्नवर धरं शुक्लाग्नध्याख्यगतु लेपनम् ॥
 विभूचितं इति माल्ये वर्णभव कर द्रव्यम् ।
 बालाननवा शब्दन्वा सहितं स्वप्रकाशया ।
 सुरक्षलोपत धारिणया जानेमुद्दित मालसम्
 जिवेनेकर समुर्वीष्य ध्यायोत्परशुरुं धिया ।

उपर गत्तक के सहबदल काल में बोड हुए अविनाशी रन्धर भजनकालीन के घटाया कान्ति वाले, शरदवालीन चंद्रमा के समान भूष्ण वाले, विक्षेपन कमाल के समान, विशाल नेत्र वाले, अंत वस्त्र धारण करने वाले, ज्येष्ठ गंध और इन पृथग की माला को धारण करने वाले, दीनों हाथों में दराभग्न मुद्रा धारण किये हुये अपने प्रकाशित स्वर्ण के सरोने से गुरत होकर जग से प्रसन्न चिर वाले अपने परम

* संशय-त्वर्थ की जिज्ञासा *

एक बार मनुष्यपुत्र गौतम बुद्ध के पास आकर बोला,
 'ग्रामन! आपने आज तक यह कभी नहीं बताया कि मृत्यु
 के उपरांत पूर्ण बुद्ध रहते हैं या नहीं?'

इस पर बुद्धदेव बोले, “हे सलुक्यपुत्रा! मुझे यह बताओ कि भिक्षु होते समय क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम मेरे ही शिष्य बनना?”

मलुक्यपुत्र ने नकारात्मक उत्तर दिया।

मलुक्यपुत्र न गकारात्मक उत्तर
उब दुखदेव बोले, 'यदि किसी व्यक्ति के शरीर में अचानक
एक विषेला बाण आकर लगे और उब वह यह कहे कि जब
तक उसे यह मालूम नहीं होता कि बाण मारने वाले की जाति
कौन सी है, वह बाण नहीं निकालेगा और वह ही कोई इलाज
करायेगा, उब मलुक्यपुत्र! भला बताऊ तो, इस स्थिति में
उसका क्या होगा?'

‘तब तो भिश्वय ही उसकी मृत्यु ही जाएगी,’ मरुक्षयुग
ने जवाब दिया।

तब बुद्धदेव बोले 'अब तुम ठीक कह रहे हो, क्योंकि इसके लिए जिम्मेदार वाण मारने वाले से अधिक वह स्वर्य होगा क्योंकि उसने व्यर्थ का हठ और संशय किया था ठीक उसी प्रकार तुम शिष्य हो और व्यर्थ की बाटों के खिलाफ़ क्यों जिजासा प्रकट करते हो और क्यों व्यर्थ का संशय कर अपना बहुमूल्य स्वर्य नष्ट करते हो?'

मैंने जितना जान दिया है उसे ही जानो और उसके अनुसार
प्रयत्न करो। इसी में तप्तिमारा कल्याण है।

आचरण करने का प्रयत्न करो, इसी में तुम्हारा कहना क्या है? वास्तव में 'संशयात्मा विनष्ट्वा' अर्थात् संशय आत्मा को ही नष्ट कर देता है। जीवन संशय रहित ही होना चाहिए। क

लघु-दृश्य विज्ञान '५' ल

અદ્વાત-તુર્ય

हीम
से
था
हम
ने
है
वि
स
त
3
3

गुरु और शिष्य का सम्बंध ऐसे किस प्रकार विषय गुणत्व में लीन हो कर आनन्द्य पूर्वक जीवन व्यर्तीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के मत्त्येक क्षण को आत्मश्चेतना जापते करने से ज्ञानोन कर पृथिवा प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बंध में सद्गुरुलेख की ओज़नी वाणी यह महान प्रवचन।

गुरुर्धिन्न्यं रूपं ऋषेव ध्याने विचिन्न्यं परमेव पाद्यं
ग्राह्यं सतां पूर्णं बैदेव तुच्छं निर्वेद रूपं सपरं गुरुवै सहेतुम्
यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ज्ञान है क्षणि का, एक महत्वपूर्ण चिन्तन है आर्य का, महापि का, क्षणोंकि जीवन तब तक निष्पार है, ल्यथं है जब तक जीवन का कोई प्रयोगन न हो।

यदि जीवन का कोई लक्ष्य हो नहीं है, जीवन का कोई प्रयोगन ही नहीं है, जीवन का कोई चिन्तन ही नहीं है, फिर जीवन क्या है? विसे हम जीवन क्ये?

क्या सांस लेने की क्रिया को हम जीवन कह सकते हैं?
क्या जिन्दा रहने की कल्पना को जीवन कह सकते हैं?
क्या सन्नात उत्पन्न करने की भावना को जीवन कह सकते हैं?

यह सब तो जीवन नहीं है, इन तत्वों के माध्यम से तो जीवन का निमित्ता नहीं हो सकता, और जब जीवन का मूल्य और महत्व ही ज्ञान नहीं है, जब जीवन का अर्थ और जीवन का मत्त्यवद ही हमें पता नहीं है, तो फिर इमंवैसे ही पशु हैं जो डोलते रहते हैं, एक अज्ञात नकेल ढाले हुए, उनको स्वयं को जान नहीं, कि वे किस तरफ जा रहे हैं, उनको खद्द को पता नहीं कि वे कौन से रास्ते पर खड़े हैं? उनको नुद को यह जान नहीं कि उनकी मौजिल कहाँ समाप्त

होगी? जिस रास्ते का प्रारंभ पता नहीं है, जिस रास्ते का अंत पता नहीं है, उस रास्ते पर चलना तो अंधे की तरफ से चलना होता है, जिसका सूत्र हमारे हाथ में नहीं है, जिसका चिन्नन और ज्ञान हमारे हाथ में नहीं है, तो हम किन शब्दों में उसे जीवन कह सकते हैं?

हम तो केवल अपनी लाश को कन्धों पर उठाये हुए हमशान की ओर बढ़ने चले जाते हैं, एक दण रुक कर सोचने की जरूरत है.... कि क्या हमारा जीवन पशु जीवन से उपर उठा है?.... क्या हमने आपने जीवन के मकराद को समझा है?.... क्या हम जानते हैं कि हमें जीवन में कहाँ तक पहुँचना है?.... क्या हमने कभी निराश लिया है कि जीवन के किस भाग पर हम खड़े हैं?.... हमने कभी सोचा ही नहीं, हमने तो भाग-विनाश को ही जीवन मान लिया, हमने तो सांस लेने की क्रिया को ही जीवन मान लिया, हमने तो जिन्दा रहने की कल्यना को ही जीवन मान लिया.... यह किसी छोटी सी बात है। कपड़े पहिनना, कपड़े छोड़ देना, सांस लेना, सांस छोड़ देना, भोजन करना, पनी धीना, उपने जीवन के अन्य क्रियाकलाप करना, ये तो जीवन के प्रकार हैं..., जीवन तो नहीं है, जीवन तो किसी और ताने-बाने से बुना होता है।

जीवन तो वह होता है, जिसका सूत्र हमारे हाथ में होता है। जीवन तो वह होता है, जिसका मर्म हमें जात होता है। हम जिन्दा तो हैं... सामाजिक और वैज्ञानिक परिभाषा में हम जीवित हैं, मगर शास्त्रीय पद्धति में हम मृत हैं, क्योंकि विज्ञान नो यह कहता है कि जिसमें चेतना नहीं है, जिसमें इस बात का होश नहीं है कि मैं क्या हूँ? कहाँ जा रहा हूँ? कहाँ पहुँचना है? वह मृत है।

हम एक क्षण भर अगर सूक्ष्म कर के सोचें तो हमें जात ही नहीं कि हमें कहाँ पहुँचना है? हमने नो चाँदी के चंद ढकड़ों को इकट्ठा करने की क्रिया को ही जीवन मान लिया। दो-चार मकान बना लेने की जीवन पद्धति की ही जीवन मान लिया। यह तो जीवन का एक प्रकार है, भौतिक दृष्टि में, जहे निर्धनता में जीए, चाहे अग्रीरी में जीए, वेदव में जीए। जब तक जीवन के उस मूल चिन्नन को नहीं समझेंगे तब तक हम सही अर्थों में जीवित भी नहीं हो पाएंगे, तो फिर जीवन की परिभाषा को समझायेगा कौन?

कौन बतायेगा कि हमारे जीवन का मकराद क्या है?

कौन बतायेगा कि यह जीवन व्यर्थ है?

कौन समझायेगा कि यह जीवन प्रामाणिक है?

कौन समझायेगा कि जीवन को किस तरीके से जीना चाहिए?
 क्या आपाधारी में भागते रहने को जीवन कहते हैं?
 क्या हड्डियाँ में चलते रहने को जीवन कहते हैं?
 - क्या हर समय व्यक्त रहने और तनाव में से गुजरने को किया को ही जीवन कहते हैं?
 - क्या वृद्धता और जर्जरत, गीमारी, अधिक्षा, अभाव, कष और पीड़ा को जीवन कहते हैं?
 - क्या कफन और कर शवशाम में सो नाने को जीवन कहते हैं?
 शास्त्री तो इसको जीवन नहीं कहता जाता है। शास्त्री में तो इस किया को मात्र कहा जाता है, और हम यही उर्थी में जीवित मुद्दें हैं, जो चलते तो हैं, मगर होश नहीं है, जो ज्ञान-पाने तो है, मगर उसका कोई अप नहीं है, किंतु हमने कहाँ। इन रहस्यों को, उस चिन्तन को लोच-समझा हा तहीं... और मही सोचा-समझा तो उसका आनन्द भी नहीं लिया जा सकता। जीवन का आनन्द तो वह लेने हैं, जो जीवन को समझते हैं। जो कभी मानसरोवर के किनारे गया ही नहीं, वह मानसरोवर के आनन्द को समझ ही नहीं सकता। जो छोटी-छोटी तत्त्वाओं के किनारे बैठ रहा है, वह क्या जाने कि मानसरोवर में क्या आनन्द है, किंतु वह इसीले है, कितना अतल जल है, कितना सब्ज़ निर्मल पानी है, वह उसके उपर को, वह उसकी समझा को, वह उस झील की विशुलता को नहीं समझ सकता, वह उस तत्त्वाओं को ही जीवन मान बैठा है।
 मेढ़क जब कुएं के एक किनारे से चलना शुरू कर के और पूरा चक्कर लगा कर फिर उसी रथान पर आ जाए और
 कह यही पूरा विश्व है, तो उसके लियाँ यह तो बड़ी विष्णु है, चक्काके उपर पूरा चक्कर काठ है, माप वर्षि
 कर्मी मैड़क का तालाब में ढाल दिया जाए तो उसने जगह जल को बेखाल रख वह आश्चर्य में पड़ जाएगा-
 और! मैंने तो कुछ नहीं देखा था, दुनिया तो कुछ और है, सपार तो कुछ और है..., और यदि वह
 भूल से भी उस तालाब का पूरा चक्कर लादे और यह मन में प्रस्तुत व्यक्त कर ले, कि
 अब मैंने पूरा विश्व देख दिया है, पूरा जीवन देखा दिया है, अब इससे बड़ा तालाब,
 उससे बड़े जल की राजि, उससे बड़ा नलाशम व्यक्त शो रखदा है? यह तो बहुत
 लम्बा चौड़ा तालाब है, और मैंने प्रयत्न करके इसका पूरा एक चक्कर लगाया
 है, यही जो जीवन है... और यदि वह समुद्र में पर नाएँ और समुद्र के अधार
 जल को देखते तो उसे और अधिक ऊँचार्यकित हो जाना एहेगा, कि
 वह तो एक छोटा सा हिस्सा था, वह जीवन था ही नहीं।
 - तुम्हारी भी स्थिति उम्म कुए के मेढ़क की तरह है, तुम्हे
 भी एक जीपित बागर में घुमने की जिस्म की ली
 जीवन मान लिया है। पत्ती है,

एक -

दो पुत्र हैं, योद्धा सा धन है, मकान है, समाज में सम्पदा है, सम्मान है, और इसी को तुमने जीवन मान लिया है, क्योंकि इससे बाहर निकलने का तुमको जान ही नहीं रहा, कभी बाहर जावे ही नहीं, कभी देखा ही नहीं कि इससे बहु भी एक समाज है, स्थान है... और नब तुम वहां जाओगे, तो तुम देखोगे कि तुम जो जीवन जी रहे थे, तुम जिस घेरे में आबह थी, वह तो एक बहुत छोटा सा हिस्सा है, जिसमें कोई आनन्द नहीं है, वह तो एक विवशता है, एक मजबूरी है। समाज में जिन्हा रहना तुम्हारी मजबूरी है। परिवार का पालन-पोषण करना तुम्हारी मजबूरी है। समाज तुम्हारे साथ या परिवार तुम्हारे साथ नहीं चल सकता, परिवार का सहयोग तुम्हें जीवन में नहीं मिलेगा।

जब 'वालिमकी' ढूँढ़ थे... क्यिंतो बहुत बाद में बने... उन्होंने रामायण की रचना तो बहुत बाद में की, पहले तो वह भव्यानन्द डाकू थे, जिनके नाम से पूरा अर्थावर्त शब्दरता था, श्रव-श्रव बांधता था, उस रास्ते से कोई राहगीर जा ही नहीं सकता था... लूटना... खरोटना... मारना.... छीन लेना ही उसका कार्य था। एक बार नारद उसके हाथ में पड़ गये, नारद तो बीणा बजाते हुए नारायण-नारायण करते चले जा रहे थे, और बाहु वालिमकी ने उन्हें पकड़ लिया, मुख्ह में कोई शिकार मिला ही नहीं, बड़ी भृक्षिक थे यह आदमी नजर आया, उपने उनकी बीणा छीन ली।

नारद ने कहा- और तुम एक साधु को लूट रहे हो, तुम ये क्या कर रहे हो?

उसने कहा- जोर्ड दूसरा मिला ही नहीं, और जब तक मैं लूट-खरोट नहीं कर लूं, तब तक मैं भोजन करना ही नहीं, कोई कार्य करता हूं, तो भोजन करता हूं, तुम पहले ही व्यक्ति मिले, बोपहर हो गई, यह बीणा बेव कर कुछ तो धन मिल ही जाएगा, और तुम्हारे कपड़े भी खाल लूं, ये कपड़े भी बाजार में बेच देंगा।

नारद ने कहा- यह तो पाप है, यह तो अधर्म है... किसी साधु को, किसी सन्यासी को, किसी शामिलिक व्यक्ति को इस प्रकार से पकड़ना और उसका सामान छीन लेना क्या उचित है?

उसने कहा- उचित तो नहीं... मगर मैं यह करूँगा जरूर, क्योंकि मुझे अपने परिवार का पालन-पोषण करना है। नारद ने कहा- क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारा साथ देगा, क्योंकि तुम तो पाप कर रहे हो?

वालिमकी ने कहा- जरूरा! यह पाप कर्म है, किसी की हत्या कर देना पाप है, किसी को छल से लूट लेना पाप है... मैं जानता हूं कि यह पाप है, मगर मैं अकेला ही तो पाप नहीं कर रहा हूं, अपने परिवार के लिए कर रहा हूं, परिवार में यह साथ देगा ही।

नारद ने कहा- पहले तुम अपने परिवार बालों से पूछ लो।

वालिमकी ने एक रस्सी से नारद को ऐड से बांध दिया और उस गए।

बड़ी मां को पूछा- तू मुझे बता, कि मैं जो छीना-झपटा, लूट-खरोट, हत्याएं कर रहा हूं, यह पाप तो है ही।

मां ने कहा- बेटा जरूर पाप है।

वालिमकी ने बड़ा- मैं दसरे तुम लोगों को रोटी खिला रहा हूं, अन्न दे रहा हूं, आवास दे रहा हूं, तो तुम भी पाप में

भारीदार हो।

मां ने कहा - मैं तो पाप में भारीदार नहीं हाता, यह तुम्हारा करनव्य है कि मां को गोदा खिलाओ, तुम्हें करना कर लाता है वह तू जाने... पाप करेगा तो पाप का फल तू ही भुगतेगा, मैं तो भुगतनी नहीं... और मैंने पाप के लिए तुझे कहा भी नहीं, वै इसमें भारीदार नहीं हो सकता।

बालिमकी पत्नी के पास गए, पत्नी को कहा - देखा मैं डाकू हूँ, और ऐसे ही लोगों की हत्याएं की हैं, लूटा है, खरोड़ा है, मारा है, और तो के गहने छीने के और तुझे दिए हैं, नूस पहिनाए हैं, बया ढीनना, डापटना, लूटना, मारना पाप है?

पत्नी ने कहा - निःसंहेष पाप है।

बालिमकी ने पूछा - यह तुम्हारे लिए कर रखा हूँ, क्योंकि ऐसा करने पर ही तो मैं तम्हें अज्ञ वे लकड़ता हूँ, ऐसा जन दे लकड़ता हूँ, आश्रम दे सकता हूँ, गहने दे सकता हूँ, और तुम्हारे लिए ही तो कर रखा हूँ, तो तुम भी तो पाप में भारीदार हो।

पत्नी ने कहा - मैं तो पाप में भारीदार नहीं हूँ, मैं तो हूँ ही नहीं, एक पति का करनव्य है, धर्म है, कि वह पत्नी का भ्रण-पोषण करे, तुम मेरा भ्रण-पोषण करो... किसे करते हो, यह तुम्हारे लिएदरी है, वह तुम्हारा धर्म है, पाप का फल तुम्हें भोगना पड़ेगा।

बालिमकी बापस आ गए, नारद को बेड़े दे खोला और छोड़ दिया, उसी शृंग उन्होंने डाकू का कार्य छोड़ कर के छोना-छपटी का कार्य छोड़ कर साथु नीवन प्रारंभ कर दिया... क्या तुम भी बालिमकी डाकू से कुछ कम हो?... क्या तुम छोना-छपटी नहीं कर रहे?... छल नहीं कर रहे?,.. डाकू, कृष्ण और असत्य नहीं कर रहे?... और यह सब तुम परिवार बालों के लिए कर रहे हो, और तम्हें यह गलतफहमी है, कि ऐसा करने पर परिवार बालों दुम्हारा साथ देंगे, पाप में भारीदार होंगे। पाप में भारीदार तो वे नहीं होंगे, असत्य और अधर्म के वे भारीदार नहीं बनेंगे। तुम्हें अकेले ही यह पाप भोगना पड़ेगा, तुम खुद ही इसके लिएदर हो।

-फिर तुम कब उस चेतना को, इस जीवन को समझ देंगे?

-कब तम्हें नारद मिलेंगे?

-कब तम्हें वे कथि मिलेंगे?

-कब तम्हें भ्रमद्वा संकेंगे जि यह जीवन नहीं है, जो नम कर रहे हो?

-तुम अपने लिए, क्या कर रहे हो?

और जब तक तुम ऐसा करोगे तब तक जीवन में तुम्हें कुछ मिलना ही नहीं, तब तक नीवन का तुम अर्थ समझोगे ही नहीं, अच्छता तो तुम्हें यह है कि कोई कथि मिले, कोई नारद मिले, कोई गुरु मिले जो तुम्हें समझा लेके, जो तुम्हें ये जीवन दे सके, जो तुम्हारे हृदय पर ग्रहार कर सके, जो तुम्हें जीवन दे सके... यह चब कुछ बेकार है, जिस शस्त्रे पर तुम चल रहे हो उस शस्त्र से तो अम्भान की यात्रा ही सम्भव हो सकेगी, यह तो कफन और कर अम्भान में सोने की साधना है, प्रयोग है, जीवन है, इसमें कुछ बाल है ही नहीं, खोना ही खोना है, और तुम प्राप्त नहीं जर रहे हो... जो चांदी के चंद टुकड़े, वे कामन के चंद कुछ तुम प्राप्त कर रहे हो यह मकान, यह धन, पे

नोट,

यह पत्नी, यह पुत्र... यह तो मृत्यु के साथ पीछे रहे जाएंगे, यह तुम्हारे साथ साथ चलेगा ही नहीं, तुम्हारे साथ उनकी यात्रा नहीं है, और जो तुम्हारे साथ नहीं है, वे तुम्हारे भवयोगी नहीं हैं। साथ तो तुम्हारे जीवन चलेगा, तुम्हारी प्राणवचेतना चलेगी, तुम्हारे भावनाएं चलेंगी। यदि तुम ऐसा चिनान करते हो, यदि तुम्हारे मन में ऐसा विचार है, तो तुम जीवन का पहला सबक संभव गवते हो, पहला अश्वाद पहला सबकते हो, मगर उसके लिए जरूरत है, दमखुम के साथ कहने वाले गुरु की, समझाने वाले व्यक्तित्व की। एक ऐसे व्यक्तित्व की, जो तुम्हें ढाकू जीवन से मनुष्य जीवन दे सके, एक ऐसे व्यक्तित्व की जो तुम्हें भनजा लके, कि तुम जो कुछ कर रहे हो वह तुम खुद कर रहे हो, उसके लिए कोई सहयोगी नहीं है। तुम्हारे पाप कार्य में कोई प्रार्जिताएँ नहीं है, तुम जो शूठ और छल कर रहे हो उसका कल भी तुम्हें ही भोगना पड़ेगा... और जिन्होंने भी अपने जीवन में शूठ, छल, कपट और असत्य का आचरण किया, उनका बुद्धापा अन्यन्त दुखदायी अवस्था में व्यतीत हुआ... ऐसों में जर्जर, अशाओं से पीड़ित, असत्य, परेशान, दुखी, अनुस। जब वे उनको पूछते ही नहीं, जब बहुएँ उनका साथ देती ही नहीं और स्माज उन्हें धिक्कारता है कि इसने जीवन मार छल-कपट किया है।

-क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

-क्या तुम ऐसा बुद्धापा चाहते हो?

-क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मृत्यु तुम्हारा गला पकड़ ले और तुम छहपटाशो?

-क्या तुम ऐसा चाहते हो कि मरते समय तुम्हारी आँखों में से आँख छुलके, और कोई हमदर्दी दिखाने वाला न हो?

-क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो कि मृत्यु के बाद सब लोग तुम्हें धिक्कार, और कोई तुम्हारे प्रति कृतज्ञता जापित नहीं करे?

-किसी की आँख नहीं भोगे, किसी के मन में जलाई नहीं करे, क्या तुम ऐसा जीवन चाहते हो?

-ऐसा तुम्हारा जीवन किस काम आएगा, क्या प्रयोगन है इस जीवन का? क्योंकि इस जीवन को लाश की तरह उठा कर के तो तुम इस जीवन में कुछ प्रगत है नहीं बर सबकते, और इसीलिए नहीं लर सबकते कि यह सब जीवन है ही नहीं। जो जीवन है, वह तो पत्थरों के क्षेत्र की उठाकर है, कपट के पत्थर है, असत्य और व्यक्तित्व के उनसे प्राप्त होता है दुःखा, परेशानियां, अड़चने, बाधाएं, रोग, जर्जरता, बुद्धाम और

मृत्यु... यही तुम्हारे सामने है। वो चार

कदम चलने पर ही इनका सामना करना

पड़े गा, किर तुम चाहे किसी भी

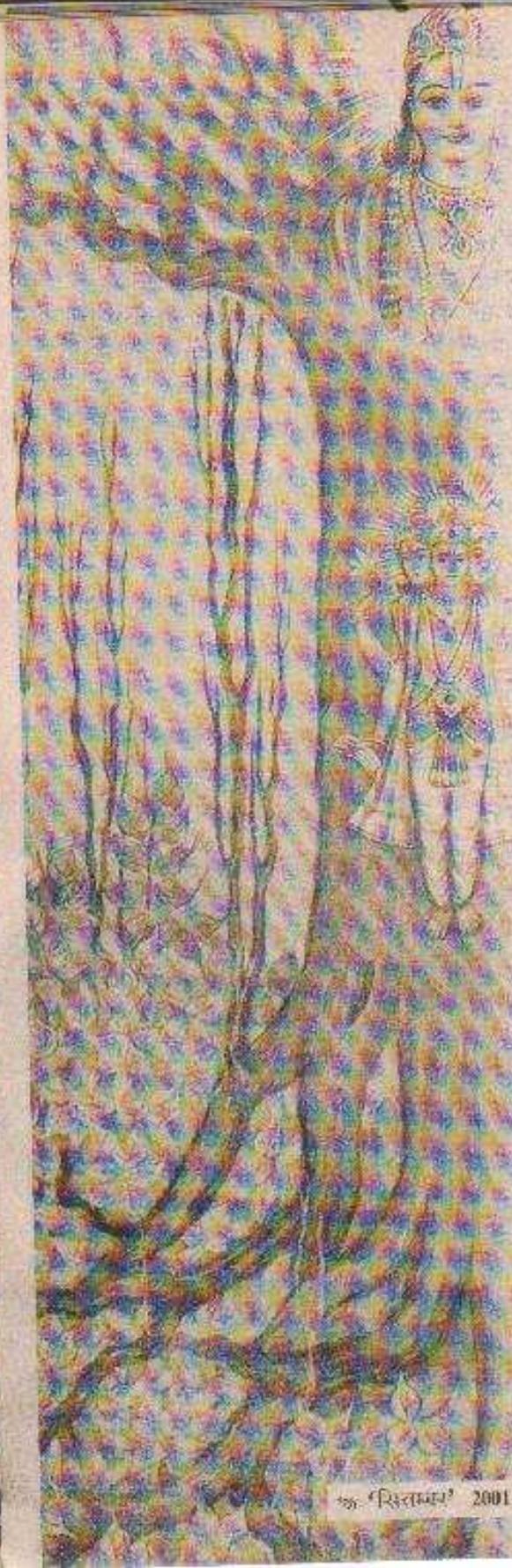
ओषधियों, व्यर्थ है... फिर तुम चाहे कुछ

मीं करो, बेकार है... फिर कोई तुम्हारा

साथ नहीं वेगा,

चलने की किया है... जो शूठ के पत्थर

पत्थर है, और



धर जाने की चौंक, जानी नहीं, पुत्र भी नहीं, बन्धु-बान्धव भी नहीं, सम्भव की नहीं।

क्योंकि तुमने इसे जीवन में ऐसा मार्ग दर्शक दूड़ा ही नहीं जो तुम्हे जान दे सके, इकड़ार सके, येतना दे सके, अमर्त्यम के साथ तृप्तिर सब लुड़ा हो सके, तुम्हें कह सके कि यह सब गलत है, तुम्हें कह सके कि तुम नज़लत रास्ते पर हो, तम्हें कह सके कि यह रास्ता अज्ञान की ओर जाता है... अमृत की ओर नहीं, सुख और सौभाग्य की ओर नहीं, आनन्द की ओर नहीं।

- और यदि आनन्द की यात्रा नहीं है, सौभाग्य की यात्रा नहीं है तो वह जीवन नहीं है। ऐसे तो तुम्हारे लाप-दादा, परदादा तिरारों लोग जीवन अज्ञान में मन्तु की प्राप्त हो गए, और आज उनका नाम लेने जाना भी कोई नहीं है। तुम भी उसी तरीके से मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे... और तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं होगा, कोई तुम्हारे जिवन विचार करने वाला भी नहीं होगा, कोई अहसास करने वाला भी नहीं होगा, कि तुमने कितना परिश्रम किया है।

- और इन्वेनिजर जीवन में गुरु की जस्तत होती है... जस्तत होती है जीवन के स्वयं में। उस गुरु को प्राप्त करने की खिलौनी भी तम्हें ही करनी पड़ेगी, गुरु स्वयं तुम्हारे पास आकर के खड़ा नहीं होगा, तम्हें ढूँढ़ा पड़ेगा। नवी को न्यून गंगोत्री से चलकर समुद्र की ओर जाना होगा, समुद्र उत्कृश गंगोत्री के पास नहीं पहुँचेगा। तुम्हें खुब उठ कर उन पत्तों के पास, पुष्पों के पास पहुँचना पड़ेगा, जहां सुगंधित हवा है, जहां आनन्द की हिलाई है... वे खिलखिलाते, दूमते पुष्प तुम्हारे पास आकर के स्वरूप नहीं हो जाएंगे।

यात्रा तो तुम्ह स्वयं को करनी होगी, तम्हें स्वयं को खोजना होगा। जिस प्रकार से तुम धन खोजते हो, पुनर्खोजते हो, उसी प्रकार से गुरु की खोज करना भी तुम्हारे लिए अनिवार्य है, आवश्यक है। ऐसा गुरु, जो सजावत हो- जो समर्थ हो- जो योग्य हो- जो प्रहार करने वाला हो- जो हाथ पकड़ के समझाने वाला हो- जो तुम्हें चेतना देने वाला हो।

इस यात्रा में तुम्हारे अनन्द कई प्रकार की धाराओं आएंगी, क्योंकि तुमने इन धारियों को ही पाल रखा है। तुमने अपने अंदर शक, सम्बेद, कपट और अभिचार पाल रखा है, और वे सब तुम्हारे सामने तन कर खड़े हो जाएंगे, तुम्हारे मार्ग को पथ छाप्ट करेंगे, तम्हें कुमार्ग पर नितीशील करेंगे, वे कहेंगे- गुरु की खोज व्यर्थ है, तुम्हें यह कहेंगे- यह समय बरबाद करना है। तुमने अपने जीवन में छल को पत्रिय दिया है। तुमने अपने जीवन में कपट का साथ दिया है, ले वे इस समय तुम्हारे सामने लड़े रहेंगे, क्योंकि वे सभे उनका स्वार्थ समाप्त होता है।

कायर और बुजदिल हताश हो जाते हैं, निराश हो जाते हैं, खोज

कह कर देते हैं, मगर जो शिर्मर्ती है, यह निश्चयी है, जो एक क्षण में जल छले डाले है, जो निश्चय कर लते हैं कि मुझे कुछ करना है, खोज करनी है, मुझे ऐसा घिसा, विदा जीवन नहीं जीना है, मुझे अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेना है, जो जीवन का आनन्द है, जो जीवन का गैरकर्य है, जो मृत्यु से अमृत्यु से अमृत्यु की ओर जाने वाला है, जो भानन्द प्रदान करने वाला है, ऐवर्य प्रदान करने वाला है, जो सही अर्थी में पृणा देने वाला है, धनवान बनाने वाला है, और उत्तरकी खोज में जो पहला कदम उन बड़ा देता है, वह साधक है, वह शिष्य है।

जो निश्चय करके यह प्रदान करता है कि मुझे गुरु को प्राप्त करना ही है, वह भन्यारी है, वह योगी है। दृभरा, जो इस रस्ते पर गतिशील होने की क्षिता करता है, वह सही अर्थी में तपस्वी है। जंगलों में खाक छानने वाले को तपस्वी नहीं कहते, चारों तरफ आग लगा कर बीच में बैठने वाले को योगी नहीं कहते, जो जीवन के मर्म को भगवाने की कोशिशा करते हैं, वे योगी और 'नन्दगामी' हैं, जो गुरु की खोज में आगे बढ़ते हैं, वे साधु हैं, जो गुरु को प्राप्त करके ली रहते हैं वे शिष्य हैं..., और जो प्राप्त कर लेता है उन जीवन में एक सभ्ता मिल जाता है, उसे जीवन में एक चेतना मिल जाती है, वह निश्चय ही उस जीवन पथ पर नेहीं के साथ अवधर हो जाता है।

-शिष्य किसी हाड़-मास के घिणू को नहीं कहते।

-शिष्य तो भाव है।

-शिष्य तो चेतना है।

-शिष्य तो समर्पण का एक प्रकार है।

-जिसमें समर्पण नहीं, वह शिष्य हो ही नहीं सकता।

किसी आश्चर्य, नाक, कान, हाथ, पैर वाले लो शिष्य नहीं कहते। चलने-फिलने वाले अकृति को शिष्य नहीं कहते, शिष्य तो उसे कहते हैं, जिसमें अद्वा और समर्पण है, जो उन वानों ते निर्मित होता है वह शिष्य कहलाता है... और उग्र वह शिष्य बनता है, तो उसे रासने का जान होता है, भान लेना है वह जीवन के रासने पर गतिशील हो सकता है।

मात्र दीक्षा लेने वाले को शिष्य नहीं कहते, फिर मंडाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, हाँग्लाएं में रननां करने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, और गुरु के पैर दबाने वाले को भी शिष्य नहीं कहते, यह तो सब उभें प्रबार हैं।

शिष्य का तात्पर्य है कि नजदीक होना। गुरु के बहुत अधिक नजदीक हो जाना और इन्होंने अधिक नजदीक हो जाना कि गुरु और शिष्य में कोई अन्तर ही नहीं रहे अगर उन्तर रह जाय तो वह शिष्य बना ही नहीं, फिर वह अपने आप को शिष्य नहीं कह सकता। गुरु और शिष्य में इन्होंना भी गैप नहीं रहना चाहिए, इन्होंना भी अन्तर नहीं रहना चाहिए कि बीच में ऐ हजा भी निकल सके... उसके जीवन का सर चिनान, सारा कियाकलाप गुरुमद ही हो जाना है... गुरु ही उसका ओढ़ना... गुरु ही उसका

बिछुना... गुरु ही उसका मोजन... और गुरु ही उसका स्वाना... गुरु की ही बाणी बौलना... और गुरु के शब्दों का श्रवण करना... और गुरु की सेवा करना... गुरुमय हो जाना... और उसकी आँखों में गुरु का भाव तैरने लगता है।

इस जीवन मार्ग पर केवल शिष्य चल सकता है, साधक तो बहुत छोटी सी चीज़ है, शिष्य के सामने साधक की कोई ओकात नहीं होती। योग, तपस्वी उसके सामने कहीं ठहर नहीं पाते, उसके सामने यह, गन्धव, किन्नर और देवता अपने आप में कोई मूल्य नहीं रखते, क्योंकि शिष्य एक चेतना पूँज होता है, एक वीपक होता है, वह जपने आप में शब्द का एक पूर्ण स्वरूप होता है। समर्पण की साकार प्रतिमा होता है जो गुरु के जागे से पहले जागता है, गुरु के सोने के बाद सोता है।

जो केवल इस बात का ही चिन्तन करता है कि गुरु की कैसे सेवा की जाए? इस गुरु के किस प्रकार से हाथ पैर बनें, नाक बनें, आँख बैंसिर बनें, विचार बनें, भावना बनें, धारणा बनें, किस प्रकार से बने? किस युक्ति से बनें? जो केवल इतना और केवल इतना ही चिन्तन करता है, वही सही ग्रन्थों में शिष्य कहनता है... और सब्बा शिष्य... नहीं अर्थों में बना हुआ सब्बा शिष्य ही अपने आप उस रास्ते पर खड़ा हो जाता है, जो पूर्णता का रास्ता है, जो पवित्रता का रास्ता होता है, जो ब्रह्म तक पहुँचने का रास्ता होता है। इसीलिए शिष्य की समानता तो देवता, यश, गन्धव, कर ही नहीं सकते, तपस्वी और साधु तो बहुत छोटी सी बात है।

शिष्य में कोई अलग तथ्य होता ही नहीं, वह गुरु का ही एक भाव होता है। गुरु की आख को गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता, गुरु के गुरु के हाथ की गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता, ठीक उसी सिर को गुरु से अलग करके देखा नहीं जा सकता, ठीक उसी प्रकार से शिष्य को भी गुरु से अलग करके नहीं देखा जा सकता। जो केवल समर्पण वृष्टि से गुरुमय हो जाता है वह शिष्य न होता है, और वही शिष्य बहुत बड़ा कार्य करता है, संसार का अद्वितीय कार्य। ऐसा ही शिष्य अपनी सेवा द्वारा गुरु को एक अवश्यक प्रदान करता है कि वह अपने जाग को संसार के सामने रख सके।

यदि गुरु छोटे-छोटे कार्यों में ही व्यस्त हो जायें तो जान किस समय देंगे? चेतना किस समय देंगे? जीवन के मूल्यवान कार्य किस समय करेंगे? इन छोटी-छोटी चीजों को शिष्य उपर लेकर गुरु को अवश्यक प्रदान करता है, कि वह जान की नदी प्रवाहित करे, उनके कार्यों और तनावों को वह अपने ऊपर लेकर के, उनको यह अवश्यक प्रदान करता है कि वह जान का मानस्यरोधर विश्व के सामने जागत करे, भैतन्य करे,

जिसमें हजारों लाखों लोग स्नान कर पवित्र हो सके, दिव्य हो सके, जिसमें शिष्ट अवगाहन कर सके... यह गुरु की सबसे बड़ी सेवा है, यहाँ शिष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

इन देवता गुरु की सेवा नहीं की जा सकती, मिठाई खिलाकर भी गुरु की सेवा नहीं की जा सकती। वह तो गुरु जो एक अवश्यर प्रदान करता है, उनको व्यस्तता को वह अपने ऊपर ढेल लेता है... और गुरु को भूल कर देना है, जिससे कि मन्य अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया जा सके। एक नए धर्म्या का रचना की जा सके। एक उपासना का मार्ग खोजा जा सके।

जाचोन ऋषियों के उन मूर्ति वाक्यों को नए सिरे से जागृत और चैतन्य किया जा सके। एक नए सिरे से व्युष्ट का अवगाहन किया जा सके... और एक नई गंगा बनाई जा सके... एक नया गंगोंत्री का स्थान बनाया जा सके... और यहि ऐसा थोला है तो शिष्य सामान्य शिष्य नहीं रहता, किंव उसका कद अपने-आप में बहुत ऊँचाई पर उठ जाता है... किर विश्व उसे छोड़ा और सम्मान की दृष्टि से डेखने लगा जाता है।

आप यहि शिष्य बनने तो जनक और राम जैसे, कृष्ण और महावीर जैसे, बुद्ध और चेनना पुरुष जैसे दो योग्यतम शिष्ट बने, जिन्होंने शिष्यता के उन भापदण्डों को छुआ, जो अपने-आप में

● तीव्र यंसकृति के निर एक बेतना पूँज है। यहि शिष्य इस बहुत और सम्मान बो लक्ष्य के, इस चरणेण को लेकर के अपने बहता है, तो पिर उसे ध्यान करने की जरूरत होती ही नहीं, क्योंकि वह तो दर क्षण खोया रहता है, अपने गुरु के चरणों में। उसे गुरु के चरण दिखाई नहीं देते, वहाँ हरिद्वार दिखाई देता है। वह उन चरणों को स्पर्श करता है तो उसे ऐसा लगता है, कि जैसे उसने काशी का

चरण स्पर्श किया। जब गुरु चरणमूर्त का पान किया तो ऐसा लगता है, कि

जैसे उसने गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी में अवगाहन कर लिया। वह उन चरणों में काशा देखता है, काशी देखता है, वह उन चरणों में मक्का देखता है, वह उन चरणों में अपने समर्पण देवताओं के दर्शन करता है, फिर उसे अन्य साधना करने की जरूरत नहीं रहती है, अन्य साधनाएं तो अपने-आप में गौण द्वे जानी हैं।

गुरु का शरीर अपने-आप में ही एक जीवित-जाग्रत मंदिर है, चलता-

फिरता मंदिर, जान का साकार पूँज... जब उस साकार पूँज को अपने

में समेटे हुए शिष्य आगे बढ़ता है तब शिष्य की आख बदल जाती

● वह उन सामान्य गृहस्थ लोगों की तरह जे गुरु को देखता ही

नहीं, उसे गुरु के रूप में ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, वरुण, यम,

कुबेर, विष्वामित्र अपने नामने साकार दिखाई देते हैं। जब वह

भास्त्र-माल से गुरु हो प्रणाम करता है तो उसे लगता है कि

सामने चारों ओर खड़े हैं, कङ्गेद, यजूर्वेद, समावेद, अथर्ववेद।

गुरु का प्रन्तोक शब्द अपने-आप में गंतव्य हो जाता है, वेद

वाक्य बन जाता है। गुरु की दृष्टि द्वारा है, जिस पाकर वह अपने-

आप को धन्य और गौरवशाली अनुभव करने लगता है।

धरान प्रक्रिया, तो अपने-आप को धन्य और

गौरवशाली अनुभव करने लगता है। धरान-प्रक्रिया,

तो अपने-आप को धन्य और गौरवशाली

अनुभव करने लगता है। ध्यान-प्रक्रिया तो अपने आप
में खो जाने की प्रक्रिया है, अपने-आप को अतल
गहराइयों में डुबा देने की प्रक्रिया है। ध्यान का तात्पर्य
तो इतना ही है कि उसे अपने शारीर का ध्यान नहीं
रहे, ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य यह है कि
मानसोब्द में बहुत गहराई में डुबकी लगाई ढंग।
ध्यान की प्रक्रिया का तात्पर्य तो यह है कि काहशी
मनसार बाहरी क्रिया-क्रान्ति को ऐसी अस्वीकृति,
कोई भान उसे नीचन पर नहीं है... और जब वह
चिक्षा बनता है, तब वह उस उच्चकोटि के ध्यान
में बनता ही जाता है, जो गतिशील ध्यान है,
जह ध्यान नहीं है। जह ध्यान तो आँखों बद
करके यालयों मार कर अपनी इन्द्रिय उत्तरन की
क्रिया है। वह तो बहुत सामान्य है, और आँख
स्वीकृत-ध्यान करने की प्रक्रिया तो अपने-आप
में बहुत की प्रक्रिया है, वह बहुत साधारण है,
गतिशील होते हुए ध्यान करो रहने को पूर्णतया
की साधना माना गया है।

‘पूर्णमद् पूर्णमिद् पूर्णात्मदमुच्यते’... गतिशील
है और पूर्ण बनता जा रहा है... गतिशील है
और ध्यान करता जा रहा है, ज्योकि
गतिशील होते हुए भी उसकी आँख में
गुरु का ही बिन्दु रहता है... हर
शरण... हर पत्र... प्रतिष्ठल।

उसके जीवन का कण-कण, रोम-रोम गुरुमय होता ना रहा है, लीन होता ना रहा है, उसका खुद का कोई अस्तित्व होता ही नहीं, उसको अपने शरीर का कुछ पान ही नहीं होता, उसे सुख-दुःख व्याप होता ही नहीं, उसे बकाबट लगता ही नहीं। वह अल्लास भी नहीं करता कि मुझे विश्राम की जरूरत है, उसे तो एक छी चिन्तन रहता है कि मैं गुरु के चरणों में किस प्रकार मेरे रहूँ? जिस प्रकार से ज्यादा से ज्यादा उनके कार्यों में सहयोग बनूँ? किस प्रकार से उनके ध्यान में डूबा रहूँ? रात्रि को वह अगर सोता भी होता उसके मन से ही नहीं, उसके रोम रोम से गुरु शब्द उच्चरित होता रहता है, गुरु मंत्र उच्चरित होता रहता है। उसका प्रारंभ, उसका सूर्योदय गुरु मंत्र उच्चरित होता रहता है। उसका प्रारंभ, उसका सूर्योदय गुरु मंत्र उच्चरित होता रहता है। उसकी निद्रा उवरथा गुरु से ही सम्पन्न होती है। यह गतिशील ध्यान है, यह अपने आप में 'समाधि' की किया है। जर्मीन में गड़ने का समाधि नहीं बहते, बड़े तो सुर्दे समाधिगत होते हैं, गड़ जाते हैं। तिरि अपने आप का मान रहता ही नहीं, जो सम्पूर्ण वेतना के साथा गुरु के जान को, गुरु के कार्य को, गुरु की भावनाओं को, गुरु के आवग को, उनके सम्मान को, उनके शरीर को, उनके सीष्टन को, अपने-आप में पूर्णता देने का प्रयत्न करता है,, वह समाधि है। जब उसमें कोई दूसरा विषय होता ही नहीं होती, जब कोई दूसरा कार्य होता ही नहीं तब वह समाधि है। और यह गतिशील समाधि है, और इसको 'पूर्णत्व समाधि' कहा गया है। जीवन के सम्पूर्ण आयामों में

४०१ प्राप्त करने केतु, ब्रह्मसत्र हने में वो ही तो मुख्य प्रकार है, जोकि तो अचलभृत सत्य है-‘ध्यान’ और ‘समाधि’।

जहां उपना मान नहीं रहता है वह ‘ध्यान’ है,, और शिष्य को जगना मन लेना ही नहीं, उसका खुद का कोई विचार ही नहीं होता। उसकी खुद की कोई क्रिया ही नहीं होती, वह जो जीवन है, वह अपने-आप में इब जाता है, निमग्न हो जाता है। गुरु उसे मानसरोवर में छलांग लगाने को कहते हैं। वह जहां है कि इस किनारे पर खड़े मत रहो, किनारे पर पड़े धोंधों और पत्थरों को मत उठाओ क्योंकि इन धोंधों से, इन बद्धों से तुम्हारे जीवन का मूल्य नहीं बन सकता।

इन छोटी-मोटी साधनाओं से तुम्हारे जीवन में पृथिवी नहीं आ सकती। तुम के जरूर अपनाएं कर लेणे तो ठीक वैसा ही होगा, जैसे तुम ने दो-चार कंकाल, दो-चार चमकोंने पत्थर छकड़े कर लिए हो। के-जरूर अपने जीवन से जीवन का सत्य, जीवन की पृथिवी का अपनानी ही सकता। यदि तुम्हें वास्तविक पूर्णत्व के दर्शन नहीं है, यदि तुम्हें ब्रह्मसत्र बनना है, तो तुम्हें किनारे का नेह छोड़ा नहीं सकता। यदि तुम्हें बीच मानसरोवर में छलांग लगाने चाहों, तिन किसी के साथ उस खनरे को उठाने दूर जाने उपर के चिनाएं देने हूँ, अपने आप को फौना करते हूँ।

ओर जो बीच धार में छलांग लगा जाता है, उसके हाथ मोतियों से भरे होते हैं। बाहर निकलने गमय उसके सारे शरीर पर, हाथों में मोती ही मोती होते हैं, उसकी आँखों में चमक होती है, उसके ललाट में एक ग्रशस्त्रा होती है, उसका भाल हिमालय से भी ऊँचा होता है,

उसका सारा शरीर केवीज्ञान हो उठता है... और यह जीवन का सत्य है, दूष जाना अपने-आप में जीवन की पूर्णता है, क्योंकि वह सही अर्थों में पहली बार अपने समान के बधन को तोड़ कर पंख फड़फड़ाने लगता है, पंख फड़फड़ाना सीखता है।

तुम पिंजरे में बंधे हुए राजहंस पक्षी हो, मगर तुम्हें अपने कुल और गोत्र का ज्ञान ही नहीं रहा, तुम्हें भान ही नहीं रहा कि पिंजरे के बाहर भी मेश जीवन है। तुम हर समय भयभीत रहे कि कोई भी झपट्टा मार सकता है, कोई भी तुम्हारे पंख नोच सकता है। हर समय तुम भय से आक्रान्त रहे कि कभी भी, कोई भी हमला कर देगा, और तुम्हारे जीवन का समाप्त कर देगा... यह जीवन तो पिंजरे में पड़े-पड़े थी समाप्त हो जाएगा... मन्त्र तो पिंजरे के अन्दर भी तुम पर झपट्टा मार देगी... उस समय तुम्हारे पास कोई चेतना नहीं होगी.... कोई लहायक नहीं होगा... मृत्यु को धकेलने की तुम्हारे पास कोई क्रिया नहीं होगी।

गुरु तुम्हें पहली बार पिंजरे से बाहर निकालता है, समाज के बन्धनों से बाहर निकालता है, एक चेतना देता है, एक विस्तार देता है, तुम्हारे पंखों में ताकत देता है। जब तुम शिष्य बनते हो, जब तुम्हारी आंखों में गुरु भाव होता है, तो गुरु तुम्हें सही अर्थों में राजहंसों की पंक्ति में खड़ा करता है। तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम बगुने नहीं हो, तुम्हें अहसास करवाता है कि तुम मामूली पक्षी नहीं हो, राजहंस बनाकर आकाश में उड़ने की क्रिया सिखाता है... और तुम निर्भय आकाश में अपनी पूणी क्षमता और गति के साथ उड़ते ही चले जाते हो, अनन्त की ओर, ब्रह्मानंद की ओर, पूर्णत्व की ओर... और तम सही अर्थों में उप आनन्द की प्राप्ति कर लेते हो, जिसे ब्रह्मानन्द कहा है। यही तो जीवन है, और इसके लिए अपने-आप को खो देने की क्रिया होनी चाहिए।

-मैं खो गया हूं।

-तुम्हें भी खो जाना है।

-क्योंकि गुरु भी पहले खोया है।

गुरु भी पहले अपने जाप से बीज रूप में था, एक छोटा सा बीज, एक चूटकी में आने लायक बीज, यदि उस बीज रूपी गुरु ने अपने-आप को मिठ्ठी में मिलाया, तो कुछ समय बाद वही बीज अपन्न विशाल बरपाद का पेड़ बना, विशाल वृक्ष बना, छापाशर वृक्ष, जिसके नीचे हनारो-लाखों लोगों ने विश्राम किया, आनन्द लिया, क्योंकि उन्होंने खो देने की प्रक्रिया का ज्ञान

प्राप किया, चेतना लिया कि मुझे लौटा करा है अपने आप को, अपने आप को समाप्त कर देना है।

जो अपने आप में समाप्त होने की किया जानता है, वह अपने आप में पूर्णता प्राप करने की किया भी जानता है। जो हृष सकता है, वह निकल सकता है। प्रशंसीत, कायर, बुनियान और नामदै अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते। जो जीवन में चैलेज लेते हैं, वे मृत्यु के नाल यह धृष्ट भी लग सकते हैं। जो जीवन में शिष्य बनने का भाव पैदा करते हैं, वे काल के भाल पर अपना नाम अंकित कर लेते हैं। आने वाली पीढ़ियों उनका नाम गौरव और मर्यादा के साथा लेती है, उनके जीवन में एक चेतना होती है, उनके जीवन में एक पूर्णता होती है। जो आज मिटते हैं, आज खो जाते हैं, जैसे बोज खो गया और गुरु के रूप में विशाल बटवृक्ष बना। यदि शिष्य श्री अपने बीज को समाप्त कर लेता है, मिटा देता है, खो जाता है, चेतना यकृत बना जाता है, तो कल वह भी हजार हजार लोगों के रूप में हजार हजार पीढ़ियों और पेढ़ों के रूप में विशाल बटवृक्षों के रूप में अवतरित होता है... और लाखों करोड़ लोगों को संलग्न से मुक्त कर सकता है, सात्त्वना य सकता है। वह सो लेने का भाव, यह अपने आप में चेतना शूल बना लेने का भाव शिष्यता है।

-श्रीकाले की किया को भी शिष्यता नहीं कहा जाता।

ठाठा लोहे से गुरु मन्त्र उच्चारण करने को भी शिष्यता नहीं कहा जाता। केवल लेठे से गुरु मन्त्र उच्चारण करने को भी शिष्यता नहीं कहा जाता। शिष्यता तो इससे बहुत ऊँची वस्तु है, तथ्य है। शिष्य वही बन सकता है जो खो जाकता है, अपने आप को मिटा सकता है, जो बीच समुद्र में कूदने की किया को कर सकता है, जो द्विना हिचकिचालट के आकाश में उड़ सकता है, जो सुराणिन पवन बनकर पूरे विश्व में फैल सकता है, जो सेवा का सफ़ार पूँज होता है, जो शब्दा

का आधार होता है, जो समर्पण का मूर्तिभान स्वरूप होता है।

शिष्य के माध्यम से ही समझा जा सकता है कि समर्पण क्या है? उसके द्वारा ही जाना जा सकता है कि ऐवा क्या कहीं जा सकती है? किसे कहने हैं? यह देवी-देवताओं की सेवा, पूजा और घट-घड़ियाल कनाना अपने-आप में ढोग है, पाण्डुष्ट है, वह तो अपने-आप में भलाने की एक क्रिया है।

यदि चैतन्य देवता, तुम्हें लाभ नहीं प्रदान कर सकते, तो फिर वे मूर्तियां तुम्हें क्या लाभ पहुंचा सकती हैं? वह तुम्हें क्या लाभ दे पाएंगे? जो प्राणवान शिष्य है, चैतन्य युक्त शिष्य है, जो मूर्तियों के पीछे मटकने की उपेक्षा उस गीवित-जाग्रत देवता की, उस चैतन्य स्वरूप की पूजा, अर्चना, साधना, आराधना करता है। उसके लिए कोई गंगा नहीं होती, कोई यमुना नहीं होती, उसके लिए गुरु के चरणों का जल ही गंगा होता है, उसमें स्नान कर वह अपने-आप को धन्य महसूस करने लगता है। उसके लिए किसी प्रकार के तीर्थ और पाठ नहीं होते, गुरु के शब्द उसके लिए वेद होते हैं, गुरु की कृपा दृष्टि उसके लिए अमृत वर्षा होती है, जिसमें भीग कर वह अपने-आप को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सकता है।

गुरु के शब्द ही वेद, शास्त्र, उपनिषद और मीमांसाएं होती है, जो शिष्य में सौधे उत्तर जाती है। पूस्तकों के अध्ययन के माध्यम से और बैठी के पठन के माध्यम से ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता। चिल्लाने और चीखने से वेद सामने प्रव्यक्त नहीं हो सकते हैं। गुरु-कृपा से वह शिष्य तो स्वयं वेदमय बन जाता है, शास्त्रमय बन जाता है, क्योंकि वह अपने-आप में सभी उर्ध्वी में श्रद्धा का एक स्वरूप होता है, समर्पण का एक भाव होता है। इसके माध्यम से ही वह अपनी शिलार का, गुरु की सिलार से जोड़ देता है, अपने प्राणों को गुरु के प्राणों से जोड़ देता है, अपनी चेतना को गुरु की चेतना से जोड़ देता है और सभी उर्ध्वी में वह गुरुमय बन जाता है।

-जब गुरुमय बन जाता है, तो अपने-आप ध्यान की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, फिर उसे पालथी मारकर ध्यान लगाने की जरूरत नहीं होती है। फिर उसे भूमि में गड़कर समाधि लेने की जिल्ला की आवश्यकता नहीं होती, फिर उसे किसी देवी-देवताओं के सामने मनीती नहीं माँगनी पड़ती, फिर उसे हाथा में नहीं जोड़ने पड़ते, गिरगिछाना नहीं पड़ता, देवताओं के सामने खड़ा नहीं होना पड़ता, क्योंकि वह स्वयं अपने अन्दर गुरु को समाझित कर पूरी तरह से खो जाता है, गुरुमय बन जाता है..... और फिर वह दूसरों को खोने की भावना दे सकता है।

ऐसा ही भाव तुम्हारे जीवन में बने, मैं आशीर्वाद दे रहा हूँ -

- सद्गुरुवेद परमहंस
स्वामी निखिलश्वरामन्द जी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका आपके परिवार का मन्त्रिक अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी रहरें में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक परिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस परिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अट्रिटीय और विशिष्ट उपहार

मंत्र साधना सिद्धिर्यंत्र

द्यावित जब साधना पथ पर शुरू-शुरू में कठुम रखता है, तो उसे सफलता प्रथम प्रयास में न मिल पाना चोई आहर्वर्ती तात्त्वी बात नहीं है। अमरवे हैं, कि अनुभवी न होने के कारण, साधना विधि में नुटि तथा मंत्र उत्तरादण में असुधि हो सकती है... और छुट तरह अपेक्षित कल प्राप्त नहीं हो पाता। लेकिन अनुभवी हो जाने पर भी यदि साधक को मंत्र साधनाओं में अंशिक रूप से भी सफलता हुतात्त्व नहीं होती, तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि साधक का अपले मन पर नियंत्रण नहीं है। बिना मन को एकाग्र किए मंत्र साधना में सफलता संकेत हो रही है।

छुट यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित करने से साधना स्थल के बातावरण एवं साधक के मन में विशेष परिवर्तन होता है, साधक का खिल थुढ़ होकर स्थान में एकाशमा को प्राप्त करता है और यहीं से तो प्रारंभ होता है मंत्र साधनाओं में सफलता का ब्रह्म। एक प्रकार से यह यंत्र, 'मंत्र साधना साफल्या यंत्र' भी है।

यह यंत्र पूर्ण लैजरिकला युक्त है। इसके लिए किसी मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है किंतु पूर्णिमा की रात्रि 6, बजे के बाद छुट यंत्र का पुष्प, अक्षर, धूप, वीप से संकेत पूजन कर पूजा स्थान में स्थापित कर दें। तीन माह बाद जल में विसर्जित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप परिका का वार्षिक सदस्य अपले किसी भिन्न, रिटेलर या उत्तराकृष्णी प्राप्त कर लकड़ते हैं। ऐसे आप परिका के सवार्या नहीं हैं, तो आप उपरोक्त विक्रेताकर यह उपहार प्राप्त कर लकड़ते हैं। आप परिका में प्रकाशित पोल्टकार्ड नं ४३ को उपर प्रक्षिप्त मंत्रकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम उपर्याहरणे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- द्वाक खर्च अनिवार्य 40/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमानी मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342003, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमानी मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342003, (राज.)

फोन: ०२९९-४२२२२०९ फैक्टरी - ०२९९-४२२०३०

भगवत्ता शिष्यप्रदाता

ॐ

शक्ति साधना प्रत्येक साधक कर्ते

सदगुरुदेव सदैव अपने शिष्यों साधकों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते थे। साधना शिविरों में स्वयं साधना संपर्क करता ही और साधना से एहले उस साधना का विवेचन पृथक्करप से रपष्ट अवश्य करते थे, जिससे प्रत्येक साधक यह समझ जाए कि वह यह साधना क्यों कर रहा है और इस साधना का क्या महत्व है?

बवराप्रि शिविर ९६ में शिविर में प्रारंभ में शक्ति साधना हेतु दिया गया उनका यह प्रवचन आश पूर्ण वर्णन है सकल जगत की अधिष्ठात्री भगवती जगदम्बा के सम्बन्ध में,

शक्ति के विभिन्न स्वरूप के संबंध में और साधना विधान -

भगवति जगदम्बा सकल विश्व की मातृ स्वरूपा आध्यात्मिक देवी है जो अपने मनों और साधकों की उपी प्रकार से रक्षा करती है जिस प्रकार से मां अपने अलोध बालक की रक्षा और प्रालीन करती है। वह अबोध बालक कुछ भी नहीं जानता, न वह उपके ममत्व को जानता है और न ही यह जानता है कि माँ कितने कष्ट सहन करती है और न ही उसे इस बान की किक्क ढोती है कि यदि कोई विषनी आ जायेगी तो कितना दुःख और कितना नगाध डेलना पड़ेगा। इसीलिए तो बालक निश्चिंत होता है, इसीलिए तो बालक माँ की गोद में निर्भीक लिंगाम करता है और माँ सभी वृष्टियों से उसका मार्ज दर्शन करती है। उसका पालन पोषण करती

है। और उसके जीवन में भाने वाली बाधाओं को दूर करने में सदैव लक्ष्य रहती है। भगवती जगदम्बा का भी ऐसा ही स्वरूप है। वह केवल देवी ही नहीं, वह केवल मातृ स्वरूप ही नहीं अपितु उसके तो कई चिन्तन, कई स्वरूप कई विचार, कई धारणाएँ हैं। वह देवताओं का पुन है क्योंकि भगवती जगदम्बा का जन्म तो हुआ ही नहीं।

जब देवताओं पर विपति आयी, जब राक्षसों ने देवताओं पर प्रहर किये, जब देवताओं के लिए कोई आश्रय स्थल नहीं रहा, जब देवताओं ने यह अनुभव किया कि इन राक्षसों से छुटका ना पाना अन्यतन कठिन और मुश्किल है, तब समरूप देवताओं के शरीर में सेज पूज निकला, विष्णु के शरीर से

भी ब्रह्मा के शरीर से भी, हनुम और वरुण के शरीर से भी जिनमें भी देवता थे उनके शरीर से तेज पूज निकल देते जाएं भूमि बनी, जो निव लगा या नो अवतरण हुआ उसे जगदम्बा कहा गया जो आठ भुजाओं वाली, जिनके हाथ में शश, जिनके चहरे पर अद्भुत तेज, जो युद्ध में हुकार करने वाली, शेर पर आरूढ़, शत्रुघ्नी का वर्णन करने में तरार, द्वारों में अवधर द्वेष वाली व देवताओं की सभी प्रकार से रक्षा करने वाली एक मूर्ति देवताओं के सामने प्रगट हुई।

देवताओं ने देखा कि यह स्वरूप तो अपने आप में विलक्षण है, अद्भुत है इसकी तेजस्विता तो अपने आप में सर्वार में प्रकाशित हो रही है। इसकी हुकार से साश विश्व चलायमान होने लगा है। इसकी आवाज से देवों के हृदय कापने लगे हैं, जो प्रहार करने में वज्र की तरह समर्थ है मगर साथ ही साथ मान स्वरूपा भी है, जो अपने भक्तों और साधकों की रक्षा करने में सर्वत्र तथ्यर रहती है जो एक साधा ही महाकाली बनकर शत्रुओं का वर्णन करने में प्रचृपड़ रूप है। महालक्ष्मी बनकर शिष्यों और साधकों की समर्पणता देने में समर्थ है। महा सरस्वती बनकर जो मनुष्यों को बुद्धि और चेतना देने में समर्थ है। ऐसी ही चिर्गुणात्मक स्वरूपा भगवती जगदम्बा का देवता लोग नमन एवं बद्धन करने लगे।

भगवती जगदम्बा कोई देवता ही नहीं अपिनु समरस विश्व की अधिष्ठात्री है जो निद्रा स्पृष्ट में विद्यमान है भूधा रूप में भी विद्यमान है, पालन पोषण करने में भी विद्यमान है। बुद्धि के सेत्र में भी श्रेष्ठता और अप्रेमयता देने में समर्थ है, जिसके सेकड़े नाम हैं सेहजों स्वरूप हैं, जिसके हाथ में अक्षय पात्र है, मधा, कुश, धनुष, दण्ड, और विभिन्न आयुध हैं, जिनके द्वारा वह शत्रुओं पर प्रहार करती है। समर्थ है, जो अपने आप में ही श्रेष्ठ और अद्वितीय है। ऐसी मूर्ति ऐसे विश्वह को देखकर देवताओं ने यह तो अनुभव किया ही उहोंने यह भी अहसास किया कि आने वाले समय में मानव जाति के कल्याण के लिए भक्तों और साधकों की समर्पणाओं को दूर करने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई विश्रह नहीं हो सकता क्योंकि यह एक मात्र ऐसा विश्रह है, जो प्रहार करने में भी समर्थ है, जो पालन करने में भी समर्थ है, जो उत्पत्ति करने में भी समर्थ है, जो शत्रुओं का संहार करने में काल स्वरूप है, जो भक्तों की रक्षा और सहयोग करने में मातृ स्वरूप है। इसकी आराधना इसका चिन्तन, इसकी धारणा, इसका विचार जीवन का एक सोभास्य है। जीवन के एक पूजनी है।

मार्कण्डेय एक अद्भुत और अद्वितीय क्रिया थी। उन्होंने

**कलयुग में तौ
(कलौ चण्डी विनायको)**
केवल भगवती जगदम्बा और
गणपति ही शीघ्र सिद्धि
प्रदायक माने गये हैं। अन्य
देवताओं की साधना तहाँ
कठिन हैं, वही जगदम्बा की
साधना सरल है, स्पष्ट है और
शीघ्र सिद्धिदायक है, तिसकी
साधना करने से हाथों-हाथ
कल मिलता है।

अपने मार्कण्डेय पुराण में भगवती जगदम्बा के सम्पूर्ण स्वरूप का विवरण की। उनकी उत्पत्ति उनके कार्य और क्रिया प्रकार से साधना के माध्यम से उनका सहयोग लिया जाए। उन्हें प्रसन्न किया जाए, उन्हें साधा जाए। इसका विन्दुन् विवेचन मार्कण्डेय ने अपने ग्रन्थ में किया और उन्होंने स्पष्ट किया कि भगवती जगदम्बा तो भगवान शिवमृत्युजय का साक्षात् धियह है क्योंकि शिव अथान कल्याण वही हो सकता है जहाँ शक्ति है। शिव और शक्ति अपने आप में अद्भुत समन्वय है, जो मनुष्य कात्यर है बृजित है, जो हनुष परेशान और चिनित है, वह कल्याणमय नहीं बन सकता, वह न तो आपना कल्याण कर सकता है और न ही देख का और विश्व का कल्याण कर सकता है। ये तभी ढा सकता है जब उसमें शक्ति का सचरण हो, जब उसमें शिर्भकिता आए, जब उसमें प्रहार करने की क्षमता आये।

क्षमता प्राप्त करना प्रहार करने की शक्ति होना और फिर यह सब कुछ कल्याणमय होना, जीवन की पूर्णता है और इसीलिए इसे शिव और शक्ति का भायुज्य रूप माना गया है और जो शिव भक्त है उन्हें तो शक्ति की साधना करनी हो।

वाहिण क्योंकि विना शिव के शक्ति की साधना तो ही ही नहीं सकती और जो शक्ति के उपासक हैं उनके लिए तो जगद्वान शिव आराध्य है ही, जो मन्दु पर विजय प्राप्त करने में, जो आने वाली बाधाओं को दूर करने में जो काल का दूर छकेनमे में समर्थ है। इसलिए शिव और शक्ति का समन्वय उनकी साधना आराधना जीवन की पूर्णता मानी गई।

मार्कण्डेय पुराण में ब्रताया गया है कि जो साधक पूर्णता के साथ भगवती जगदम्बा को सिद्ध कर लेना है या साधना है उसकी आराधना करता है, उसे अपने हृदय में स्थापित कर लेना है, वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है, वह पूर्ण विजयी होता है, उनके जीवन में परेशानियां तनाव, अभाव-और दरिद्रता हो ही नहीं सकती वह निर्भीक होकर विशरण करने में समर्थ होता है, ऐकड़ों देवताओं को अराधना करने के स्थान पर मात्र जगदम्बा साधना करने से ही समझ देवताओं की साधना सम्पन्न हो जाती है। क्योंकि भगवती जगदम्बा तो समस्त देवताओं के शरीर का दैविक पुंज है। और इसलिए शास्त्रों में उसे शेष माना गया। जो साधक जगदम्बा की दोषों और अन्य देवी देवताओं की साधनाओं में समय व्यतीत करता है वह ठीक बैना ही है, नेम पेट की जड़ में पानी न देकर पत्ते और ढालियों की सीचता के।

जीवन की पूर्णता और पौधे का नहलनहाना तो जड़ में पानी देने से ही संभव है ठीक इसी प्रकार से जीवन को निर्भीक और क्षमतावान बना देने की किया नो जगदम्बा साधना से ही संभव है। और इसकी साधना सीख लेता है समझ लेता है जो इसकी आराधना कर लेता है। जिसे जगदम्बा को प्रसन्न करने की किया जात है उसके जीवन में कोई अभाव रह ही कैसे सकता है और जगदम्बा की साधना का तो कहीं कोई निवेद है ही नहीं चाहे वह शेव हो शिव की साधना करने वाला हो, चाहे वह बैण्डव हो स्थान विष्णु की साधना करने वाला हो,



चाहे नात्रिक हो, चाहे योगी हो, चाहे मन्यासी हो, चाहे किसी धर्म का मानने वाला हो, चाहे किसी विचारक या चिन्तक का प्रणेता हो।

जगदम्बा की साधना तो सबके लिए सर्व सुनाम है। किसी भी युक्ति से, किसी भी स्थिति में जगदम्बा की साधना सम्पन्न की जा सकती है। ऐकड़ों प्रकार है, जगदम्बा के साधना करने के- मंत्रों के माध्यम से, सोन और स्तुति के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से, योग के माध्यम से, स्वद्वायामल के माध्यम से, शशान साधना ए, अधोर पथ से, नागा पथ से और जिनने भी पथ है जिनने भी सम्प्रदाय है, जितनी भी साधनाएँ हैं, उन सभी सम्प्रदायों में भगवती जगदम्बा की साधना है, आराधना है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मात्र जगदम्बा ही ऐसी साधना है जो प्रत्येक पथ परं प्रत्येक रामप्रवाय में विद्यमान है।

प्रत्येक संवारी, साथक, योगी, इस प्रकार की साधना को करने में गौरव अनुभव करता है।

और किर कल्युग में तो (कली चण्डी विनायको) केवल भगवनी जगदम्बा और गणपति ही शीघ्र सिद्धि प्रदायक माने गये हैं। अन्य देवताओं की साधना जड़ों कठिन है, वहीं जगदम्बा की साधना सरल है, स्पष्ट है और शीघ्र सिद्धिदायक है। जिसकी साधना करने से हाथों-हाथ फल मिलता है। वह चाहे रक्षा करने हेतु रक्षा साधना ही, वह चाहे आध्यात्मिक उत्तिः की साधना को, वह चाहे धन प्राप्ति या व्यापार वृद्धि साधना हो या परिवार उन्नति साधना हो या स्वास्थ्य कामना की साधना हो और चाहे अन्य फल इच्छा की साधना हो। सभी प्रकार की इच्छाओं का परिपालन जगदम्बा की साधना में निहित है और साधक जब साधना करता है तब साधना करते-करने उसको अनुभव होने लग जाता है, उसके कार्यों में पूर्णता प्राप्त होने लग जाती है।

कल्युग में सभी साधकों को स्पष्ट किया गया है कि जो जगदम्बा साधना नहीं करता और जगदम्बा भाधना नहीं कर सकता वह अपने आप में ही नुकसान प्राप्त करता है। क्योंकि इस साधना से जीवन की समूर्णता का बोध स्वतः होने लगता है। क्योंकि इस साधना के माध्यम से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसका लक्ष्य हो, चाहे मुकुटमें विजय प्राप्त करनी हो अथवा आर्थिक उन्नति की इच्छा हो।

यह अलग बात है कि इस साधना को सीखना और समझना अवश्यक है। पर इस साधना में कोई जटिलता नहीं है, कोई विशेष क्रिया कलाप नहीं है, किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। जगदम्बा की साधना तो अत्यंत सरल है। हर कोई कर सकता है चाहे किसी भी जाति का हो, वर्ग का हो, रंग का हो। जगदम्बा की साधना के द्वारा तो सबके लिए खुले हैं। और यह एक ऐसी साधना है जो कम से कम ताम आम के द्वारा, कम से कम, उपकरणों के द्वारा की जा सकती है। जिसमें कोई लम्बा चौड़ा मंत्र नहीं होता, जिसमें कोई लम्बी चौड़ी क्रिया क्रताप नहीं होती, जिसमें किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होता। क्योंकि मार्कण्डेय ने तो स्पष्ट कहा है कि यदि कोई साधक जगदम्बा की साधना सम्पन्न करता है और साधना बोच में ही ढूँढ़ जाए या अनुष्ठान किसी वजह से पूरा न हो सके या अनुष्ठान में कोई तुटी रह जाये तब भी उसे कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता और जितनी भी साधना की है उसका फल अवश्य ही मिलता है।

इसीलिए शालों में जगदम्बा की साधना को जीवन की श्रेष्ठ साधना माना गया। इसीलिए मानव जाति के कल्याण

के लिए इस साधना को प्राथमिकता दी गई। इसीलिए तो जीवन के सारे ऋमार्गों को दूर करने के लिए यह साधना बतायी गयी। इसीलिए तो वेदों से लगाकर शंकराचार्य तक सबने जगदम्बा साधना को महत्व दिया है। उमशान प्रवेग से भी चण्डी को सिद्ध किया जा सकता है और घर में बैठ करके भी जगदम्बा की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

दिन को या रात्रि को सुबह हो या शाम किसी भी समय जब साधक मनोवेग पूर्वक साधना करने की इच्छा प्रगट करे तब समय इस साधना को किया जा सकता है। यहीं तो इसकी विशेषता है। इसीलिए तो इस साधना को जीवन का एक अद्भुत प्रयोग कहा गया है।

मैंने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया है कि जो कार्य अन्य प्रकार में या अन्य देवताओं की साधना से सम्पन्न नहीं होता वह भवती जगदम्बा की साधना से शीघ्र, सहज और सिद्धिदायक तरीके से सम्पन्न हो जाता है। मैंने कह बार इस साधना के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान किया है। और उस स्थितियों को प्राप्त किया है, जो अपने आप में अपराजेय है, अप्रतिमय है, अद्वितीय है। जो श्रेष्ठता और उच्चता अन्य साधनाओं के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती वह इस साधना के द्वारा सहज संभव है। शरीर को किसी भी स्थिति में अनुकूल बना लेना, कहीं भी किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शत्रुओं के बीच भी स्थित प्रज्ञ बने रहना और शरीर के चक्रों को जागत करना, कुण्डलियों और सहस्रार के रहस्यों को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड घेदन कर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को प्राप्त कर लेना भी इस साधना के माध्यम से संभव है। भौतिक कामनाओं की पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सहज संभव है।

ऐसा हो-हो नहीं सकता कि हम इस साधना को करे और उसका फल प्राप्त न हो। और इसके साथ-साथ, सन्यास जीवन की उच्चता का प्राप्त करना और श्रेष्ठ गुरु को प्राप्त कर लेना और गुरु की निकटता, गुरु की प्रसन्नता प्राप्त कर लेना केवल जगदम्बा साधना से ही सहज संभव है। समस्त विद्याओं, ज्ञान और साधनाओं में निष्पात हो जा जाना, उच्चताम भाव भूमि पर स्थापित हो जाना, कण्ठ में सरम्भता को स्थापित कर हजारों हजारों श्लोकों को स्मरण कर लेना केवल भाव जगदम्बा साधना से ही सहज सरल संभव है। और साथ ही इस साधना से वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो हमारा अमिष लक्ष्य है। जब मैं कुछ, जगदम्बा से संबंधित उन साधनाओं को स्पष्ट कर रहा हूँ जो हमारे लिए आवश्यक हैं।

भौतिक जीवन में पूरा वर्तमान

इन्द्राणी शिवस्तुताधिका

शक्ति साधना का यह सौम्य रूप जिसे एक बार सम्पन्न कर लेने
मात्र से साधक के जीवन की धारा ही बदल जाती है थुल्क जीवन
से तस्वीर जीवन बनाने की विशेष साधना जो दुर्जा के
११वर्षीयान सौन्दर्यविना॒ भौतिकता से परिपूर्ण साधना है-

देवताओं के अधिपति इन्द्र माने गये हैं और यह भी माना जाता है कि रघुनाथके राजा इन्द्र है जिनके सहयोगी रूप में वस्त्रा, अभि, चन्द्रमा पवन इत्यादि देवता कार्य करते हैं, जिसमें इस संसार की व्यवस्था चलती है। देवास्तुत संग्राम में भी देवताओं के अधिपति इन्द्र और उरुओं के युद्ध का वर्णन आता है।

यामनव में इन्द्र का नाम्पर्य है 'अधिपति' अथोन जो अपने जीवन में पूर्ण सफल होकर मनुष्यों पर ही नहीं देवताओं पर भी राज्य करता है। वह इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र एक व्यक्तिविशेष नहीं होकर किया वाचक रूप है, जो भी व्यावित अपने जीवन में भौतिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न जी जाता है, वह इन्द्र के सामान ही है। इन्द्र का तात्पर्य यह भी है कि निसने अपनी इन्द्रियों को पूरी रूप से वश में कर रखा हो और जीवन में धरावन, उच्छ्रवा इत्यादि रूपों से विमुक्ति हो। वास्तव में इन्द्र का तात्पर्य विष्णु से ही है। क्योंकि वही देवताओं के पूर्ण अधिपति है। जिस प्रकार भगवान शिव की सहयोगी उमा, गौरी, पर्वती भावेश्वरी, अपणी इत्यादि हैं, इनी प्रकार भगवान विष्णु का ऐश्वर्य वानरस्तुत इन्द्र है और इन्द्र रूप में सहयोगी शक्ति स्वरूप को इन्द्राणी कहा गया है। इसका स्वरूप अर्थ है

कि इन्द्राणी का तात्पर्य इन्द्र की पत्नी नहीं अपितु इन्द्राणी का तात्पर्य है लक्ष्मी क्योंकि इन्द्राणी शब्द संस्कृत के 'इदि' धातु से बना है और 'इदि' का अर्थ है ऐश्वर्य इसीनिए ऐश्वर्य का गणित स्वरूप 'इन्द्राणी है'।

रामान्वर स्तुत में भी जब लक्ष्मी दी को आरती गायी जाती है तो यही कहा जाता है कि,

'त् इंद्राणी इद्याणी न् ही है कमला रानी ॥'

अथोन इन्द्राणी लक्ष्मी का ही एक स्वरूप है और इसको साधना गृहस्थ साधकों के लिये विशेष आवश्यक है सामान्य रूप में विश्वासी जीवन में बालक को निरंतर सरखनी साधना, सूर्य साधना सम्पन्न करनी चाहिए। वही गृहस्थ जीवन में व्यक्ति की भौतिक सूखों दी परिपूर्णता के लिये सभी प्रकार की शक्ति साधनाएँ लक्ष्मी साधनाएँ, कृष्ण साधना, शिव साधना तथा नव यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

तीसरे उक्त के रूप में अपने जीवन को पूर्ण रूप से ब्रह्म बनाने के इच्छुक साधकों को शिव साधना, कौल साधनाएँ प्रशान्त साधनाएँ इत्यादि नाम्पन्न करनी चाहिए।

इन्द्राणी के संबंध में एक कथा पुराणों में विशेष रूप से आती

इच्छान्
मा
म
तो
ड
अर्थ
नशा पर
मदमस्त
क लमा
ताल मे
देवता उ
भगवती
मंत्र
मी हु
सा
यत, औ
यह
बजे के
करके
बाद ३
विशा
आ
सामन
प्नान
मे गु
लिए

है, उस समय इन्द्राणी का नाम शचि था और पृथ्वी लोक पर राजा नहुष अत्यंत प्रतापी राजा थे। उन्होंने पृथ्वीलोक रवर्गलोक पर विजय प्राप्त कर ली और शचि को देखकर उनके मन में उसे वरण करने का विचार आया। राजा नहुष ने इन्द्र को पराजित कर दिया था और इन्द्राणी विवश थी, उन्होंने राजा नहुष को कहा कि यदि तुम राम क्रष्णों को पालकी का कहार बनाकर आओ तो मैं तुम्हें वरण कर सकती हूँ। क्रष्णों ने भी राजा नहुष की आजा मान ली, लेकिन आधे रास्ते में राजा नहुष ने गवं में एक क्रष्ण को लात मारकर जल्दी चलने का कहा, इस पर क्रष्णों को क्रोध आ गया और उन्होंने पालकी वहाँ गिरा दी। क्रष्णों ने श्राप दिया कि जीवन ने तुम कभी भी सख्ती नहीं दी जाकोगे, यह तक की तुम्हें पल्ली और शातान का सुख भी प्राप्त नहीं हो सकेगा।

आगे कथा अनुभार नहुष का विवाह देवर-गुरु गुरुकाचार्य की पुत्री वेवगंगा में अवश्य हुआ। जबकि वे स्वयं देवर राजा कृता सुर की पुत्री शार्मिष्ठा से विवाह करना चाहते थे। वेवगंगा से उपरान्त पुत्र कमज़ोर और कायर हुआ शार्मिष्ठा से उपर पुत्र य वाति हुआ लेकिन उसका सुख राजा नहुष नहीं प्राप्त कर सके और पूरा जीवन दुःख में ही करा।

कथा का शारांश यह है कि शक्ति रूप में इन्द्राणी को बल पूर्वक कोई भी वरण नहीं कर सकता है।

इस प्रकार की अनेकों कहाएँ इन्द्राणी के सम्बन्ध में अवश्य आती है वास्तव में इन्द्राणी भगवती दुर्गा का सौन्दर्य वान ऐश्वर्य स्वरूप है।

आज के युग में पृथ्वी लोक, देव लोक, पाताल लोक में शक्ति अपने विभिन्न रूपों में विद्यमान है, और जो साधक जिस भावना से इक्ति की साधना करता है उसी रूप में शक्ति की विद्यि अवश्य ही होती है।

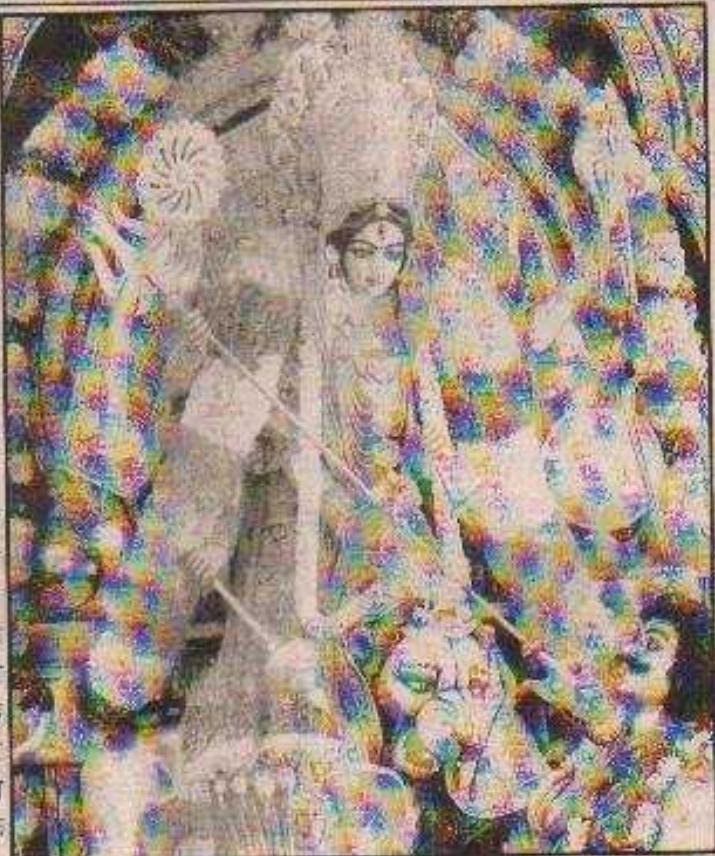
नवरात्रि और उसके पश्चात दीपावली तक का समय विशेष साधनात्मक समय है, और इस काल में भौतिक दृष्टि से पूर्णता, ऐश्वर्य, सौन्दर्य रस, आनन्द, उमंग प्राप्त करने हेतु इन्द्राणी शक्ति साधना अवश्य ही करनी चाहिए।

आगे साधना और इसका विधान स्पष्ट किया जा रहा है ये साधना नवरात्रि में किसी भी दिन अथवा किसी भी शुक्रवार को प्रारंभ की जा सकती है।

नवरात्रा विधान

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग पर्ये।

विनियोग-



ॐ अस्य इन्द्राधी मंत्रस्य द्रुहिण ऋषि, कृतिच्छन्वः
इन्द्राणी देवतामय मनोवांछितं सिद्धये जपेविनियोगे।
जल घूमि पर छोड़ दे।

क्रष्णादिन्याम- ॐ द्रुहिण ऋषये नमः शिरभि,
कृतिच्छन्वस्ये नमः मुखे,
इन्द्राणी देवता नमो हृदि,
विनियोगाय नमः स्वांगे।
इस संदर्भ का पढ़ने हए अपने विभिन्न अंगों को डाहिने हाथ
से स्पर्श करें

करन्यास-

ॐ ब्रह्मवादिन्ये अंगुष्ठाम्यां नमः ।

ॐ इन्द्राणी तज्जनीभ्या नमः ।

ॐ नारायणी मध्यमाम्यां नमः ।

ॐ सूर्याणी अनामिकाम्यां नमः ।

सहस्राश्र्ये कनिष्ठिकाम्यां नमः ।

स्वाहा करतल कर पृष्ठाम्यां नमः ।

इवयादि बंगन्यास ॐ ब्राह्मवादिन्ये द्रुहयाय नमः ।

शिवाय शिरसे स्वाहा । नारायणी शिरपाये बबद

सूर्याणी कवचाय हुम् । सहस्राश्र्ये नेत्र

व्राय वीषट् । स्वाहा अचाय फद

इत्यानु मंत्र

मात्स्याय कृश पद्म युग्मकरां माहसेनकरां,
मनेरावत् पृष्ठमां शशिमुखीं चेनोक्य रक्षापद्मो
कौमिणीनरता सरोजसदृशीं ब्रह्मादिदेवैः स्तुताः;
इन्द्राक्षीं जनमातरं हृष्टि भजे कल्पय विश्वपिणीम्

अर्थः : मुन्दर कण्ठ में पृष्ठहार पहनी हुई, तो दाढ़ों, में कुश
नदा नदा, मण्डलार्य धारण की हुई, एक हजार आँखों वाली,
ब्रह्मस्त ऐरवत् हाथी के पृष्ठ पर विश्वामान स्वच्छ चन्द्रमा
के समान मुख वाली, वैनोक्य की मुरक्खा में व्यरुत गीतों के
तल में रत हाथों वाली निर्मल कमल जनान रूप युक्त, ब्रह्मादि
देवता ओं से न्युन, लकल लोक मान, कल्पणामय चंदना युक्त
भगवती इन्द्राणी का अपने हृदय में ध्यान करना है।

मंत्र- कीं कीं हुं हु भौं हीं श्रीं ऐ इन्द्राणि वज्रहस्ते श्रीं हीं
हुं हुं कीं कीं ऊंऐं फद् स्वाहा।

साधना सामग्री- इस साधना में ग्राण प्रतिष्ठित हन्त्राणी
वत्र, वैश्वद लिङ्गिमाला, (कमल गड़ी की), सापल्य गुटिका।

यह रत्रि कालीन साधना है। साधक को यह साधना शत्रि ९,
बजे के बाद शुरू करना चाहिए। साधना शुरू करने से पूर्व स्नानादि
करके पश्चात्य हो ले, थोड़ी पहल कर गुरु चाहर औढ़ ले, इसके
बाद अपने साधना कक्ष में गोला या सफेद आसन बिछा ले, पूर्व
द्विषा की ओर, बैठु, सबसे पहले धूप तथा दीप जला ले।

अपने बामने पहले गुरु चित्र स्थापित करे, उभी पूजन
सामग्री को अपने पास रखें। पंच पात्र के जल से गुरु चित्र को
स्नान करावें, इस तरह तिनक, अक्षत, पुष्ट तथा धूप-दीप
में गुरु पूजन सम्पन्न करे। फिर अपनी साधना में सफलता के
लिए दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव ने प्रार्थना करें।

गुरुर्वृष्णा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः;

इसके बाद, गणपति पूजन करे गणपति विश्व हो किसी
प्लेट पर स्थापित कर दें, यदि विश्व हो तो एक सुपारी पर
मौली लंपट कर स्थापित करें। पूर्ववत् पंचोपचार से गणपति
पूजन करे, इसके बाद अपने दालिने दाय में अक्षत तथा दूर्वा
रख कर अपनी मनोकामना को उच्चारण करके निम्न प्रार्थना
के सहित गणपति पर अक्षत आदि चढ़ायें। फिर दोनों हाथ
जोड़कर प्रार्थना करें।

ग्नाननं भूतगणाधि सेवितं,
कपित्यजम्बु फल चारू भक्षणं
उमासुतं शोक विनाश कारकं
नमामि विद्वेश्वर पादं पंकजम्।

इसके बाद इन्द्राणी यत्र किसी प्लेट या थाली पर कुकुम से
स्वस्तिक बना कर स्थापित कर दें। फिर निम्न मंत्र बोलते

हुए मंत्र को गंगा जल या शुच जल से स्नान करावें-
गंगा सरस्वती ऐवा पयोऽपि नर्मदा जलैः
स्नापितोऽसि मया देवि! तथा शार्णि कुम्भ में
ॐ भगवति इन्द्राण्ये नमः।

इसके बाद यत्र के चारों दिशाओं में कुकुम या केशर से
चार तिनक करें।

श्री ऋषद्वयन्दन विद्यु गन्धादयं सुमनोहर
विलेपनं सुरश्वेष चन्दनं प्रतिश्वेषताम्।
चन्दनं सगर्भपयापि ऊँ जगद्वम्बाये नमः।
अशतानु सगर्भपयापि ऊँ जगद्वम्बाये नमः।

फिर अक्षत स्थापित करें।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर भाव्याप्ति करें-

ॐ तं पूरुषं व्यवधूः : कतिधा विकल्पयत
मुख विमस्यासीत किम बाहू विष्णुः पादं उच्चरे
माल्यार्पणं समर्पयामि ॐ जगद्वम्बाये नमः;
धूपं तीपं नवेद्यं समर्पयामि ॐ जगद्वम्बाये नमः।

रुग्धित अगरबती जलावें। फिर यत्र के चारों ओर चार
धी के दोपक ज-नावे जिसमें धन अर्थ काम तथा मोक्ष की
प्राप्ति हो, पूरे मन तक दोपक जलाने चाहिए। इसके बाद
कोई मिठाई भोग लगावे। इसके बाद, सापल्य गुटिका एवं
माला को गोलाकर अनाकर यत्र के सामने रखकर इनका भी
पचोपचार से पूजन करे। फिर कुकुम से रंगे हुए चावल तथा
दूब लेकर निम्न नामों का उच्चारण करने हुए मंत्र पर चढ़ावें।

ॐ इन्द्राण्ये नमः ॐ महोवर्येनमः;
ॐ इन्द्राण्ये नमः ॐ शिवाये नमः;
ॐ गायत्र्ये नमः ॐ इन्द्रस्त्रियायेनमः;
ॐ साक्षिण्ये नमः ॐ महालक्ष्मये नमः;
ॐ शक्तिवर्ण्ये नमः ॐ अस्विकाये नमः;

ॐ ब्रह्माण्ये नमः;

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवती प्रार्थना करें-
इन्द्राणी इन्द्रस्त्रिया च रुद्रशक्तिं परायणा।
शिवा च शिवस्त्रिया च शिवशक्तिं परायणा
मदा च मोहिनी देवी मुन्दरी भुवनेश्वरी
महिषासुरं हन्त्री च चामुण्डा सम मातरः।
श्रुति: स्मृति भूतिर्मेघा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती
अनन्ता विजया पूर्ण मानस्तो का पराविता।

नवरत्नि के किसी भी दिन या शुक्रवार से साधना आरंभ
करें यह स्थापह दिन की साधना है, इसमें २१ दिनार मंत्र जप
होना चाहिए। मंत्र जप पूरा होने पर एक या पांच कुमारी
कन्याओं को भोजन करावें अन्त में लाल वस्त्र में सभी सामग्री
को बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट- 360/-

जीवन शिवसु बनाना हौं

शिव बनना है तो आवश्यक है भगवान् शिव की शक्ति माहेश्वरी
भगवता साहृदयी साधना

नवरात्रि का पर्व शक्ति साधना का महाकल्प है, शक्ति का माहेश्वरी स्तरप
 भगवान् शिव और शक्ति का संसुक्ष्म दरबर है। शक्ति साधना के लिए शिव
 साधना आवश्यक है और शिव साधना के लिए शक्ति साधना आवश्यक है,
 क्योंकि शक्ति के बिना शिव भी शिव दरबर हो जाते हैं। अपने जीवन को
 पूर्णरसमय और जीवन में आनंद प्राप्ति की यह अतोरक्षी शिव साधना शक्ति
 साधना जिसे भगवतो माहेश्वरी साधना कहा जाता है-

शक्ति साधना ग्रन्थ की मूल आवश्यकता है। अनेक साधनाओं से योग्य होने पर भी शक्ति के बिना उस साधक में कुछ न्यूनता रह ही जाती है। वेदान्त के उद्घोषक भगवन् शक्तिराचार्य को अस्तु जान में परिपूर्ण होने पर सर्वत्र अपने भीतर कुछ न्यूनता अनुभव होने लगती, अन्त में उन्हें जाकाशाचार्यी है, जिन्होंने शक्ति साधना के एकाकी शिव तो शब्द जैसे है, इस साधन के बिना तुम अस्तु और उद्दित ही रहोगे, इसके बाद शक्तिराचार्य ने भगवतो ललितगवा की उत्कृष्ट साधना की। इसके बाद आनंद जान संबोधी परिपूर्णता उन्हें प्राप्त हुई। सिद्धांश्म प्रवेश के लिए तीन महा विद्याओं की सिद्धि आवश्यक मानी गई है। यह भी एक शक्ति माध्यना का अकाल्य प्रमाण है। उस स्थिति में शक्ति साधना अवश्य करनी चाहिए। दस महाविद्याओं की सात उपशक्तियां हैं, उनको भी पूजा समान धर्म के कर्मकाण्ड प्रक्रिया में अवश्य होती है। ये सभ

मात्रिकां कहलाती हैं। ये मात्रिकां सूर्य की रथ पद निरन्तर विद्यमान रहने वाली शक्तियां हैं। इन सभ भात्रिका में भगवती माहेश्वरी की भी गणना होती है। जैसे

1. शाली - सांषु कर्ता ब्रह्मा की शक्ति कही जाती है।
2. माहेश्वरी - रेणु-सृष्टि लंघारक महेश्वर की शक्ति।
3. कीमारी - देव सेनापति कुमार कालिकेद की शक्ति।
4. वाराही - विष्णु के नृतीय अवतार वराह की शक्ति।
5. इडापी - देवराज इन्द्र की शक्ति।
6. वेष्णवी - सुषु पालक-विष्णु की शक्ति।
7. चामुण्डा - (काली, अपराजिता) - भगवती चण्डी की शक्ति।

साधनाओं के रूप में भगवती माहेश्वरी की साधना सोम्य मानी जाती है, इनके स्वरूप वर्णन में सौम्य रूप का वर्णन जितता है। भगवती माहेश्वरी शीघ्र प्रसन्न होकर अपने

उपासकों को अभीष्ट सम्मतिया प्राप्त करती है।

इन मात्रिका भौं के विषय में लड़ा गया है कि-

न विद्या भासुका परा।

भासुका से परे और कोई विशेष इक्षित नहीं है।

ये स्थान की सचालिका शक्ति है। इनकी जाकिन प्रणव से कही गई है, अतः साधकों को मोक्ष प्रदान भी यहाँ करता है। ये परब्रह्म स्वरूप हैं, सर्वशक्तिपूर्णी हैं।

भासुका के वर्णन में इनके स्वरूप के विषय में बड़ा कि-

मात्र, सहस्रशिखो नाना लकार भूषिता ।
परिवर्त्य महान्नमान समानतात् पर्यवस्थिता ॥
जंख गोक्षीर सकाश ऐशान्यो त् वर्णने ।
माहेश्वरी महानेनस सिष्टते सुरशृजिता ।

अर्थात् - अनेक अलंकारों से सुशोभित सभी अविन्द्यों को अपने भीतर आवेदित करके समस्त संसार में व्याप है। शंख और गोदृश के समान स्वच्छ तथा महानेन से दुक्ता भगवती माहेश्वरी देवता भी डाल गृहित तथा ईशान दिला में चित्त रहती है।

‘घोणिनी इवत्य में भगवती माहेश्वरी के विषय में कल्याणशा है कि-

माहेश्वरी अद्विवणा निनेना शूलधारिणी।

कपालस्थिं परशु वशना पाणिपि प्रिया।

माहेश्वरी इवत्य वाग है, नीन नेत्रो वाली विश्वल धारण की हई, हाथों में कमाल, एग (मण), परश (विशूल) धरण की हुई है। भगवती माहेश्वरी की साधना जीवन में रज चिह्न अन्यात आनन्द, उमंग मन्त्री आदि की प्राप्त के तिष्ठ की जाती है, स्व का धर्ष है आनन्द। यदि जीवन में रज नहीं है तो जीवन के त्रितीय आस्था का भाव और जीवन की मूल उद्देश्य ही स्पास हो जाता है। मृत तुल्य होना है, ऐसी स्थिति में रस यिदि के लिए माहेश्वरी साधना अवश्य करनी चाहिए। इस साधना में प्रह्ला द्वारे के विग्रहेशी स्थिति चो, धुम अवसर मिले तो अवश्य करनी चाहिए। यह कुण्डलिनी जागरण के



लिए मूलतम साधना मानी गई है। इस साधना की सम्पन्नता के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता होती है।

माहेश्वरी ब्रह्म, रसेश्वरी भाला, स्वेश्वर, शिवलिंग, तथा द्वे रुद्राक्ष

नवरात्रि में अध्यात्म किसी भी भास के द्वयल वक्ष के सोमधार से या पुष्प नक्षत्र के दिन साधना प्रारंभ करें। यह प्रातःकालीन सारांश है। प्रान, स्वान आदि निषय किया से निवृत होकर स्वच्छ इवत्य वरब घनो, लाल या सफेद रंग के सुन्दर आप्तम विद्युतकर पूर्व दिशा के ओर मुख करके बैठें। सभी पूजन सामग्री को अपने समीप कर ले धूप तथा दीप जलाले। वहाँ दोपक वा पूजन करें, दोनों हाथों में कुंकुम और अदान लेकर निम्न भूमि का उच्चारण करें-

ॐ अन्नो मित्रः शं वसुण शत्रो भवत्यर्थम्

शत्रु उन्द्रो वहस्यति शत्रो विष्णुसस्त्रामः

शब्दो वातः पवतां शक्षमतपत् सर्वः।

अन्नः कनिकदेहः पर्जन्यो अभिवर्षत् ॥

अक्षत तथा कुकुम को दीपक पर चढ़ा दे। अपने सामने पंचपात्र में जल रखे तथा बरुणदेव का सामान्य पूजन करे, उसमें कुकुम अक्षत, पुष्प डालें पात्र में तिलक लगाकर मौली बाधे, फिर दोनों हाथ जोड़कर बरुण देवता से गृहस्थ जीवन में सुख प्राप्ति के लिए तथा विघ्न नाश के लिए प्रार्थना करें।

कलशस्य मूखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाध्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये महामणः स्थितः ॥

कुक्षी तु सागरः सर्वे सप्त द्वीपा वसुन्धरा ।

वास्तवोऽथ यजुर्वेदः समोवेदोऽर्थवर्णः ॥

अंगेश्व शहिता सर्वे कलशं तु समाध्रितः ॥

अन्न गायत्री सावित्री शांतिः पृष्ठिकरस्तथा ॥

आयान्तु यजमानास्य दुरितं क्षयकारा ॥

अपने नामने गणपति पूजन के लिए किसी जल पर कुकुम ने स्वस्त्रिक बनाकर उसमें गणपति विश्व हस्तापति करें। इसके बाद भगवान गणपति को पंचपात्र के जल से स्नान करायें।

ॐ गणे थ यमुने चैव जोगावरि सरस्वति ।

नमदि सिन्धु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृहाताम् ॥

स्नान के बाद धूप, द्वापरे पूजन करे, फिर दाहिने हाथ में कुकुम अक्षत नया दूर्घा लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें।

ॐ लं नमस्ते गणपतये,

त्वं वांगमयस्त्वं चिन्मयः,

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः,

त्वं सच्चिदानन्दाऽङ्गिरीयोऽसि,

ॐ गणाधिपतये नमः ।

हाथ में लिये हुए कुकुम और अक्षत को विश्व पर चढ़ाकर प्रणाम करें।

गुरु पूजन- दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें।

आनन्द भाव मकरन्द मनन्त गन्धः,

योगीन्द्र सुस्थिर मपास्त बन्धः:

बेदान्त सर्वं किरणीक विकाश ओल

नागवणस्य चरणाम्बूज मानसोऽस्मि ।

श्री चरणेष्यो नमः । भगवन्तं

निरिखेवरम् आवक्षयामि स्थपत्यामि नमः,

आसन- इह पुष्पासन समर्पयामि नमः,

पुष्प का आसन दे।

पादयोः पादम् चरण धोने के लिए दो आचमनी जल है।

ॐ श्री गुरवे नमः- अभिषेक कल्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- तिलक समर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- अक्षतान् समर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- पुष्प समर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- धूप दीप समर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- नेवेद्य समर्पयामि नमः ।

ॐ श्री गुरवे नमः- पृष्ठांजलि समर्पयामि नमः ।

इसके बाद दोनों पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण

करते हुए पून्य मद्गुरु के शीतरणों में चढ़ा दें।

गुरुर्वै गुरोः स प्राण आत्म ब्रह्माण्ड वे प्रचः ।

श्री गुरु चरणेष्यो नमः विशेषार्थं समर्पयामि ।

विनियोग- दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण

करे-

ॐ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः विराट छन्दः,

माहेश्वरी देवता जपे विनियोगः ।

जल धूमि पर छोड़ दें।

कृष्णायि न्यासः निम्न संदर्भ का उच्चारण करते हुए दाहिने

हाथ से निर्किंषु अंगों का स्पृह करें-

ॐ ब्रह्मा ऋषे नमः शिरसि,

विराट छन्दसे नमः मुखे,

माहेश्वरी देवताय नमो हृति,

विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

अक्षत शत्रु के उपासकों के लिए नवरात्रि का समय अन्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है इस अवसर पर की गई कोई भी साधना अवश्य ही निश्चियत फलदायी होती है क्योंकि ये तांत्रिक दिवस माने जाते हैं। ये दिवस अपने आप में इतने महत्वपूर्ण कहे गये हैं, कि इस अवसर पर की गई प्रत्येक साधना लघु प्रयास से भी चमत्कारिक फल प्रदान करती है। जो श्रेष्ठ साधक हैं, वे तो इनके महत्व को समझते ही हैं, इस अवसर की वे प्रतिक्षा करते हैं, जिससे प्रत्येक साधना को पूर्ण कर सकें।

कर न्यासः

ॐ उं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ हीं तजनीभ्या नमः।
ॐ नमः मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ भगवतीं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ स्वाहा करत्वा कर पृथ्राभ्यां नमः।

हृवय न्यासः

ॐ ॐ हृदयाय नमः।
ॐ हीं शिरसे स्वाहा।
ॐ नमो शिखायै वषट्।
ॐ भगवतीं कवचाय हृम्।
ॐ नेत्र ब्रह्माय बीषट्।
ॐ स्वाहा स्त्राय फट्।

संकल्प - दाहिने हाथ में जल लेकर उत्कल्प बोलें-
ॐ विष्णु-विष्णु-विष्णु; महापूरुषस्य अमुक मासे,
अमुक पथे अमुक दिने, अमुक गोत्रः, अमुक शम्भाऽहं,
अमुक मनोकमना यित्ति निमित्तं माहेश्वरी साधना करिष्ये।
जल की भूमि में ओऽ तितिरा।

ध्यान-

वृथास्त्वां भालचन्द्रां त्रिनेत्रां शशिस्त्रिभाम्।
तथातीं शूल इमरु महाहि वलयो भजे॥

रसेश्वर महादेव को किसी पात्र में स्थव कर के पूजन शरू करें। पहले पृष्ठ का आमन देकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

स्त्रं सुशोभनं दिव्यं सर्वं सौख्यं करे शुभं।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
पृष्ठासनं समर्पयामि ॐ शंभवाय नमः।
पादयोऽपाद्य अध्यै अन्वमनं समर्पयामि नमः।

स्नानम् - निम्न मंत्र बोलते हुए शिव जी को स्नान कराये
ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः।

शंकराय च मयस्कराय च नमः।
शिवाय च शिवतराय च।
वर्त्तं, तिलकं, पूष्पं भालां च समर्पयामि।
लूःशिवाय नमः।
धूपं धीषं नेवेद्यं निवेदयामि।
लूःशिवाय नमः।

चार पुस्त्राद्य धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष के प्रतीक स्वरूप चार

स्त्राक्ष को निम्न मंत्र के साथ शिव जी पर चढ़ा दें।

इस तरह चार स्त्राक्ष को चढ़ाते हुए चार बार भव त्र उच्चारण करें।

ॐ अद्योर अद्योर अथत्वा अजोरेत्वं शिवोऽहं शंकरोऽहम्।

उसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान शंकर से प्रार्थना करें-

ॐ कर्पूरं गौरं करुणावतारं संसार सारं भूजगेन्द्र हारं,

सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवेष भवानी सहितं नमामि-

यत्र को किसी प्लेट पर स्थापित करें जल से स्नान कराये

ॐ गंगायै नमः, ॐ यमुनायै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः, सर्वेष्यो तीर्थेष्यो नमः।

तिलकं अक्षतान् पुष्पाणि, धूपं, धीषं समर्पयामि।

इस पूजन के बाद कुकुम, अक्षत को मिलाकर निम्न
मंत्र बोलते हुए यत्र पर चढ़ाये-

ॐ जयायै नमः।

ॐ विजयायै नमः।

ॐ अन्तितायै नमः।

ॐ अपराजितायै नमः।

ॐ नित्यायै नमः।

ॐ माहेश्वरीयै नमः।

ॐ विलासिनीयै नमः।

ॐ अद्योरायै नमः।

ॐ मंगलायै नमः।

इसके बाद मूलमंत्र का ? ? माला मंत्र जाप करें।

ॐ हीं नमो भगवति भाहेश्वरीं स्वाहा।

यह प्रातः कालीन अद्वितीय साधना है, भगवान शिव
एवं भगवती माहेश्वरी की अनुकूल्या से कुण्डलिनी जागरण
किया प्रारंभ होती है तथा भीतिक ऐश्वर्य एवं मनोवांछित कार्य
को सिद्धि हस नाधना की विशेषता है।

यह ? ? दिन की साधना है, यदि चाहें तो इसी सामग्री
से दो बार प्रयोग कर सकते हैं। साधना पूर्ण होने पर शिवलिङ्ग
को पूजा रथान में स्थापित कर दें। शेष नामगी को जल में
प्रवाहित कर दें। यह सात्यक साधना जीवन में शुद्धता प्राप्ति
के साथ उच्चतम सफलता प्रदान करती है।

आप अपने दो भिन्नों को पवित्रका स्वरूप बनाए तथा काँड़े के ६ पर
अपने दोनों भिन्न का पना लिखकर भेजें काँड़े मिलाने पर स. ४३८/
-की बी.पी. द्वारा आपको मंत्र यित्त ग्राम प्रतिष्ठ माहेश्वरी वंज,
रसेश्वरी भाला, रसेश्वर शिवलिङ्ग, तथा ४ स्त्राक्ष भेज दें तथा
दोनों भिन्नों को एक दर्प नक नियमित रूप से पवित्रका भेजो जाओगी।

जो सिद्धि एवं सफलता
किसी भी तन्त्र से प्राप्त नहीं होती

४६

कौमारी तंत्र साधना

क्ये तो होती ही है

प्रत्येक गृहरथ व्यक्ति के लिए अनिवार्य साधना

गृहस्थ व्यक्तिसे के लिए। अपने जीवन में गृहस्थ धर्म सिद्धाना ही बहुत बड़ी भाँधना हो जाती है, गृहस्थ व्यक्ति उपने नौकरी में इनसे अधिक लक्षणों पे शुक्रन रहता है, कि उसके लिए घर- बार छोड़कर साधना करना, गुलझिन में अपने आप को पूर्ण चिलीन कर देना संभव नहीं होता है, उसके लिए तो प्रातः से ही गृहस्थ धर्म का जो चक्र प्रारंभ होता है, वह गति शयन तक भी पूरा नहीं हो पाता है, कभी पत्नी की चिन्ता, कभी बच्चों के स्वास्थ्य की चिन्ता, तो कभी अपने माता पिता की दिनता वह नीकरी अथवा व्यापार भी तो उपने गृहस्थ व्यक्ति शशान जा कर नीत्र विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न नहों कर सकता है, और न ही वह फिरी विशिष्ट समय के लिए विशेष शक्ति पाठों पर कर साधना की विशेष अनुभूति प्राप्त कर सकता है, क्योंकि उसके साथ गृहस्थ धर्म इस प्रकार से जुड़ जाता है, कि उसका मन दूसरे स्थान पर जा कर भी धर्म में अटका ही रहता है।

अब प्रश्न यह उत्तर है, कि भारिवर गृहस्थ व्यक्ति क्या करें? ऐसा क्या पूजन करें, ऐसी क्या साधना करें जो कि उसके गृहस्थ धर्म की मयाद के अनुकूल हों, पीर वह उन साधनाओं को अपनी पत्ती के साथ, पुणे परिवार के साथ

सखलता पूर्वक यमपत्र करे रखें, जिसके प्रशाय से उसे अपने कार्यों में, अपना जीवन धर्म निपाने में अनुकूलता प्राप्त हो, उसे मानसिक शांति प्राप्त हो, सगाज में उसका सम्मान बढ़े, उसकी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताएं कम होती जाए।

जाठी शावित्र साष्टि

नारी जनि के महाव ये लिखी भी प्रकार मूरु नहीं भोड़ा
जा सकता, नारी-गवित ही किसी भी व्यक्ति में पूर्णांग प्रदान
करनी है, आप कल्पना कीजिए, कि व्यक्ति अपने कार्य से
दिन भर का बका हुआ घर आए और उसे अपनी पत्नी से
मधुर स्वागत और मधुर वदन प्राप्त हो, तो वह निश्चय ही
स्वप्रकार के स्नान और दिग्ध भर की धकान भूल ही जाता है,
और यदि उसे अपनी पत्नी के कदु वचन सुनने पड़े, तो उस
व्यक्ति को यही लगता है कि शायद नरक थी उस जीवन से
अच्छा होना होगा, नारियों के संबंध में जिन्हें गल्थ पुस्तकें,
स्माहित्य कविता, प्रेरो-शायरी लिखी गई है, उतना चिन्तन
वर्णन किसी अन्य वस्तु के बारे में लिखा ही नहीं गया है, प्रेरो
हृष्ट तो हर समय अपनी प्रेमिका के चिन्तन में ही गम्रा रहता
है, और उसकी एक झलक के लिए दीवाना रहता है, और उस
संबंध में, प्रेम से अपने जीवन को उत्तर्ग कर देने वालों की

1

दिनांक : सितम्बर 2001
 कृपया मुझे साधना के लिए चिन्ह साझी
 किजवा है, वी.सी.पी. आने पर मैं उस छुड़ा दूगा।
 मेरा नाम :
 प्राप्त :
 तिला :
 सामग्री का नाम □

प्रिय सम्पादक जी,

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रथिरा निम्न अनमोल कृतियाँ वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दें कर छुड़ा लूगा पुस्तकों के नाम –

दिनांक : सितम्बर 2001

2

मेरा नाम/पता :

वर्ष से तेरह वर्ष तक की कल्प्या 'कुलजा' कहलाती है, और

उसमें देवता का निवास समझ कर पूजन करना चाहिए।

"ल तंत्र" के अनुसार कीमारी साधना से साधक को इ प्राप्त हो जाती है, कि वह साक्षात् शिव को अपने र "ब्रह्मेकश महादेव" से किसी भी प्रकार का वर नहीं है।

श्री साधना तो अत्यन्त सख्त, शान्त एवं पूर्ण करने साधना है, जिससे साधक अपने कुल, वंश का उद्धार अभी देवताओं को प्रसन्न कर, सौभाग्य एवं सम्पत्ति प्राप्त सकता है, "गारदा तिलक" में लिखा है कि जो साधक कीमारी साधना एवं पूजन सम्पन्न करता है, उस पर इस जन्म का तो क्या पूर्व जन्म का भी पाप मच्छ हो जाता है, जिस पर

इसका पारावण करना चाहिए।

साधना विधि

इस साधना में विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है, केवल "कीमारी वन्त्र चिव", "नीलाश्म माला", मुष्प माला, पुष्प तथा अङ्गत आदि आवश्यक है।

इस साधना में विशेष ब्रात यह है, कि पति पत्नी दोनों पूजन में साथ बैठें तो अत्यन्त उत्तम रहता है, पुरुष मुन्दर वस्त्र पहन कर पूजा-स्थान में सुगन्धित वातावरण कर, शूद्र धी का दीपक लगा कर, पूजन से पहले भगवती कीमारी को पूजन हतु ऊर्मित्रित कर, स्वयं को कृतार्थ अनुभव कर, प्रदक्षिणा कर, पूजन कार्य करें, स्त्री स्नान कर सुगन्ध का प्रयोग करें, ललाट में सिन्दूर, आखों में कानल तथा आभूषण इत्यादि पहन कर आपने पात के साथ पूजन सम्पन्न करें।

संख्या भी कम नहीं है, और प्रत्येक लोक साहित्य में ऐसी कथाएँ भिलती हैं, जिनका बड़े उत्साह से गायन किया जाता है।

यह नरी-शक्ति ही है, जो इस सृष्टि-क्रम में निरन्धरण के साथ स्थिरता प्रदान करती है, पार्वती के बिना शिव, लक्ष्मी के बिना विष्णु, राधा के बिना कृष्ण, सीता के बिना राम तथा मणिवती के बिना नारायण की बल्पना नहीं की जा सकती।

कीमारी साथबा

साधनाएँ तो प्राचीन समय से ही बली आ रही हैं, और कुछ पूजाएँ जीवन का अंग बन गई हैं, इन पूजाओं के पीछे विधिवत मान्यता क्या है, और किस प्रकार से हमें सभी रूप से सम्पन्न किया जाना चाहिए, इसका जान बहुत कम लोगों को है।

नवरात्रि में नवमी के दिन, नौ कुंवारी कन्याओं, बालिकाओं का पूजन, भोजन एवं दक्षिणा की परम्परा भारतवर्ष के करीब-करीब सभी प्रान्तों में मानी जाती है।

इसके पीछे मूल कारण कुमारी-शक्ति का पूजन ही है, जो कि विधिवत रूप से सम्पन्न की जाए तो गृहस्थ व्यक्ति को हर प्रकार का सुख, एवं शांति देने में जगर्थ है, इस संबंध में शास्त्रों में विशेष विवरण दिया गया है, “रुद्रयामल तत्” के उत्तर खण्ड के सातवें पटल में लिखा है, कि किसी भी जालि की कुमारी पूजन के योग्य है, और इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए, कुमारी ही समस्त विद्या-स्वरूपा, महासिद्धि-प्रदाता है, “कुञ्जिका तत्” में लिखा है, कि आठ वर्ष से तेरह वर्ष तक की कन्या ‘कुलना’ कड़लाती है, और इसमें देवता का निवास समझ कर पूजन करना चाहिए।

“आल तत्” के अनुसार कीमारी साधना से साधक को वह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह साक्षात् शिव को अपने वश में कर “बटुकेश महादेव” से किसी भी प्रकार का वर मांग सकता है।

कीमारी साधना तो अत्यन्त सरल, शान्त एवं पूर्ण कल युक्त साधना है, जिससे साधक अपने कुल, वंश का उद्धार कर, सभी देवताओं को प्रभव कर, सौभाग्य एवं सम्पत्ति प्राप्त कर सकता है, “शारदा तिलक” में लिखा है कि जो साधक कीमारी साधना उवं पूजन सम्पन्न करता है, उस पर इस नन्म का तो क्या पूर्व जन्म का भी पाप नष्ट हो जाता है, जिस धर में कीमारी साधना सम्पन्न की जाती है, वह निश्चय ही पवित्र

हो जाता है, “रुद्रयामल तत्” में लिखा है कि यदि कम बुद्धि वाला जन्म रे हो दुर्भाग्य वाला व्यक्ति भी कीमारी साधना विधिवत सम्पन्न करता है, तो वह पूर्ण विजय और मंगल फल प्राप्त करता है, तथा महा सूख की ओर अग्रसर होता है।

कीमारी पूजा स्वरूप

कीमारी पूजा वो प्रकार से सम्पन्न की जाती है, प्रथम विद्या मात्र में और दूसरी बार मात्र में, इन दोनों ही भावों में विशेष अन्तर नहीं है, विद्या भाव साधना में साधक को मानसिक दृष्टि से शांति प्राप्त होती है, तत्त्व भव का साक्षात् फल प्राप्त होता है तथा साधक विशेष सिद्धियों का स्वामी बनता है।

वार शाव में कीमारी साधना सम्पन्न करने से धन तथा विद्या की विवरण होती है, कीमारी पूर्ण रूप से प्रचल होने पर साधक के जीवन में कान्ति ली उत्पन्न कर देती है, और “बृहस्पील तत्” के अनुसार ऐसे साधक को जीवन में किसी प्रकार से उपद्रव, विद्यु, घृत-बाधा, नहीं सता सकते।

कीमारी साधना साक्षात् पवित्री साधन है, और यह समस्त सिद्धियों का स्वरूप है, कीमारी में बाल मैरव स्थित होते हैं और इसी कारण इस साधना से पार्वती-जी सरस्वती स्वरूप है, उनकी सिद्धि प्राप्त होती है, और मैरव प्रसन्न होते हैं।

यह साधना प्रत्येक पक्ष की नवमी तिथि को सम्पन्न की जा सकती है, इस वर्ष छिंतोय आजिवन शुक्ल शारदीय नवरात्रि नवमी दिनांक २५-१०-२००९ सिद्धि दिवस है, उस दिन गृहस्थ साधक इस सुन्दर, शान्त, शांति देने वाली साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें, और सात नवमी तक निरंतर पूजन कर इसका पारावण करना चाहिए।

साथबा विधि

इस साधना में विशेष स्मारणी की आवश्यकता नहीं है, केवल “कीमारी यन्त्र चित्र”, “नीलाश्म माला”, पुष्प माला, पुष्प तथा अक्षत आदि आवश्यक हैं।

इस साधना में विशेष बात यह है, कि पति-पत्नी दोनों पूजन में साथ जैरें तो अत्यन्त उत्तम रहता है, पुस्त्र सुन्दर वस्त्र पहन कर पूजा-स्थान में सूशनिधि वालावरण कर, शुद्ध धो का दोपक लगा कर, पूजन से पहले भगवती कीमारी को पूजन हेतु आमंत्रित कर, एवं को कृतार्थ अनुभव कर, प्रदक्षिणा कर, पूजन कार्य करें, स्वीं स्नान कर सुगन्ध का प्रयोग करें, ललाट में लिन्दूर, ऊँझों में काजल तथा आभूषण इत्यादि पहन कर अपने पति के साथ पूजन सम्पन्न करें।

पति-पत्नी दोनों अपने दाएँ हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि

अमुक फल प्राप्तये उमुक कर्मण्यमुक देव्या:
प्रीतयते कुमारीं पूजने करिष्ये ॥

यहाँ अमुक के स्थान पर साधक जिस विशिष्ट कार्य में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करना चाहता है, चाहे वह संतान संबंधी कार्य हो, शत्रु बाधा निवारण संबंधी कार्य हो अथवा आर्थिक उत्तमि हेतु कार्य हो, उस विशेष कार्य का नाम लेकर, संकल्प कर जल छोड़े, साधना एक ऐसा कार्य है, जिसमें साधक को किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए, संकल्प में अपनी इच्छाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देनी चाहिए, वीर भाव से कीमारी साधना में साधक को दृढ़ संकल्प के अनुरूप ही सफलता प्राप्त होती है।

अब साधक अपने बाएँ हाथ में जल ले कर दाएँ हाथ से शरीर के सभी अंगों तथा स्थान, आसन इत्यादि पर शुद्धता हेतु छोटे केंद्रे, उसके पश्चात् देवी कीमारी का मानस ध्यान करें, इस ध्यान मन्त्र के पांच बार उच्चारण के साथ प्रत्येक बार रामने यन्त्र चित्र पर पृष्ठ अर्पित करें, और अन्त में पृष्ठ माला अर्पित करें।

ध्यान मन्त्र-

ॐ शंखकुन्वेन्दु भवलां दिभुजां वरदाप्रयाम्
चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभावविराजिताम् ॥
बाल रूपां च त्रिलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् ॥
नानालंकार नश्रांगीम्भद्र विशाप्रकाशिनीम् ॥
चालाक्ष्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥

अब कीमारी देवी को समाने रखे पात्र में जल, पृष्ठ, अक्षत, दहो, धूप, दीप, सुपारी, नेवय, पान अर्पित करें, प्रत्येक बार अर्पण के समय - “ऐ हीं श्रीं हुं हस्तौः कुल कुमार्ये नमः जलं समर्पयति” कहे जिस चीज का अर्पण करें, उस चीज का नाम उपरोक्त ‘जल’ के स्थान पर लेते हुए, उपरोक्त मन्त्र से समर्पित करें, और किर अपने दाहिने हाथ को यन्त्र-चित्र पर रखते हुए यह भावना है कि शुक्ल वर्ण, सर्वमय नीलानन्दन प्रधा, अरुण के समान तेज, तेजस्वी नेत्र, रक्त वर्णीय देवी को साधक का प्रणाम है।

कीमारी के सोलह स्वरूप हैं, इनमें प्रत्येक स्वरूप का नाम लेते हुए जप निम्न प्रकार से करें-

“ॐ हे संध्याये नमः, ॐ हे सरस्वत्ये नमः, ॐ हे विष्णवे

नमः, ॐ हे कालिकाये नमः, ॐ हे सुग्रगाये नमः, ॐ हे उमाये नमः, ॐ हे मालिन्ये नमः, ॐ हे कृष्णकाये नमः, ॐ हे कालसंकर्षित्ये नमः, ॐ हे अपराजिताये नमः, ॐ हे रुद्राण्ये नमः, ॐ हे द्विरथ्ये नमः, ॐ हे महालक्ष्मीये नमः, ॐ हे वृत्तिकाये नमः”।

इससे ही यह स्पष्ट होता है कि कीमारी साधना का स्वरूप कितना विशिष्ट है विशिष्ट कारक है।

सबने बड़ी विशेष बात यह है, कि कीमारी साधना में बाल भैरव की सिद्धि प्राप्त होती है और उसकी स्वाप्ना भी कीमारी के साथ आवश्यक है, इस कारण साधक-साधिका प्रणाम कर “उकुलकुमारिकाये सपरिवार बाल भैरवाये नमः” मन्त्र का स्पारह बार उच्चारण कर भैरव एवरथ्प-बाल भैरव स्थापित करें और सिन्दूर, पुष्प इत्यादि अर्पित करें।

अब साधक और साधिका नीलानन्द माला ने कीमारी के बीज मन्त्र का पांच माला जप करें, माला पति-पत्नी दोनों में से किसी एक के हाथ में रहें।

हीड़ नंत्र

॥एं हीं श्रीं कल्ली हुं हस्तोः कुलकुमारिकाये नमः स्वाहा ॥

जब मन्त्र जप, अनुष्ठान पूरा हो जाए तो पति-पत्नी दोनों उस पूजा स्थान की परिक्रमा करें, गुरु-ध्यान करें, आरती इत्यादि स्मरन करें, और किर कुमारी कन्याओं को मोलन कराएं, और उन्हें यथायोग्य दक्षिणा दें।

कीमारी साधना के बारे में यदि फल लिखा जाए तो एक पूरा साहित्य ही रचा जा सकता है, सक्षिप्त में जो वर्णन “रुद्रयामल तन्त्र” में दिया गया है, वह इस प्रकार कि-

इस साधना से माधक वाणी-शक्ति प्राप्त करता है, वीर भाव प्राप्त कर दिव्य महासिद्धियों का स्वामी बनता है, उसे परायन का सामना नहीं करना पड़ता, और शिव की सदैव उस पर कृपा रहती है, समस्त दिक्षाल तुष्ट होते हैं, जिससे उसके कांठों में विघ्न नहीं आता है, महाविद्या के चरण कमलों का आशीर्वाद निश्चित रूप से प्राप्त करता है, उसकी कीर्ति और लक्ष्मी रत्नैव बदती जाती है।

यदि प्रत्येक नवमी को बैत्री जप कर कुमारी कन्याओं को भोजन कराएं, तो भी निश्चित अनुकूलता प्राप्त होती ही है।

साधना सामग्री पैकेट- 300/-

साबरयंत्र

गुरु गोरख नाथ नेकला चेला तू वीर फेरा बदल तू जीवन का फेरा

बनाना है जीवन सफल तो अपनाएं ये पांच सूत्र

गुरु मत्स्योन्दु नाथ गोरख संप्रवाद के आदि गुरु हैं और साबर साधनाओं की उच्चता करके उस काल के व्याकेलीं के लिए साधना के सरल शुरु प्रवान किए। उनके प्रधान शिष्य गुरु गोरख नाथ ने गोरख पंथ बलावा जो कि साबर पंथ भी कहलाता है। साबर साधकों के गुरु शिष्य ही होते हैं और शिष्य की आराद्य मानकर उनकी पूजा अर्चना कर साधना करते हैं। गुरु गोरख नाथ, द्वारा दिये गये विभिन्न साधनात्मक सुन्न आज भी हर क्षणीय पर खड़े हैं।

दुःखी जीवन, निर्दृष्ट जीवन, डाढ़ाश जीवन जीता भी कोई जीवन है। जीवन तो ऐसा हीना चाहिए जिसमें प्रत्येक रंग उभर कर स्पष्ट हो। प्रस्तुत अंक में गुरु गोरख नाथ द्वारा वरिति मुद्रिका रहस्य स्पष्ट किया जा रहा है। जिसे धारण कर आप भी अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकते हैं।

इस को पूरे शरीर का प्रतिबिन्द कस जा सकता है। इस सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध शिलों के लिए कह याया है—
कराणे बसते लक्ष्मी कर मध्ये सरल्यमी।
कर पृष्ठे स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दशनम्॥

इस सम्बन्ध में जो वास्तविक हो जह है, उससे यही स्पष्ट हुआ है कि प्रत्यक उंगली के पूर्व में जो छाटी-छाटी नाड़ियां होती हैं, उनका सम्बन्ध भीष्मा मस्तिष्क से रहता है, अलग-अलग व्यक्तियों में काई विशेष नाड़ी जड़ा ग्रस्त रहनी है, और उसका प्रभाव उपर नीचे नीचे ने पड़ता है। जैसे नज़रीनी उंगली का सम्बन्ध यह स्वरूपी, लेखन, वर्णन आदि से सफलता, उच्चति आदि ये रहता है, मध्यमा का सम्बन्ध आर्थिक आधार, व्यापार वुद्धि, मान्योदय, इत्युक्तिय, प्ररक्षण, अलिखन से

रहता है, जनामिका का सम्बन्ध भेद, वेवाइक जीवन, भधुरता, भावधीण के साथ, प्रसिद्ध, यमनां और यश से रहता है, कनिष्ठिका का सम्बन्ध भावनाओं से है, और यह भोग विशाम, ऐश्वर्य, आकर्षण, सम्मोहन से भी सम्बंधित है।

गुरु गोरखनाथ ने स्पष्ट किया है कि उंगलियों में यहि कोई व्यक्ति यन्न धारण करता है तो उस दंत के प्रभाव नाड़ियों के माध्यम में मनुष्य चौबीस घण्टे शहन करता रहता है, उसका मस्तिष्क उस विशेष कार्य पूर्ण हेतु अन्यन्त ग्रस्ति ले जाता है।

यन्त्र का महत्व तो प्राचीन ग्रन्थों ने भी पूर्णता के साथ स्वीकार किया है, “श्री यन्त्र” तो पूरे भंसार में विद्यात है, और एशियम के वैज्ञानिकों ने एक स्वर में यह स्वीकार किया

कि श्री यज्ञ अपने आप में जयित
उच्च-विद्यान हैं, और इसमें आर्थिक
उत्तमि का प्रभाव उत्पन्न करने में विशेष
महत्ता है, दूसरी प्रकार कुबेर यन्त्र,
कनकधारा यन्त्र, शत्रु स्तम्भन यन्त्र
आदि भी उपने आप ने महत्वपूर्ण हैं
और पिछले हजारों वर्षों से उच्च लोटि
के राजा-महाराजा, शत्रुभारियों इन
अंगूठियों को धारण करती रही हैं, और
शप्ते जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त
करती रही हैं।

इसके अलावा चौबीसा यन्त्र,
छत्तीसा यन्त्र, आदि भी अन्यतं
महत्वपूर्ण मार्म गये हैं, ऐह शत्रुओं
पर इन गदों को विश्व प्राण प्रतिष्ठा युक्त
किया जाना है, तभी इन यन्त्रों का
प्रभाव अचूक देखा है।

अनुभव में यह आना है, कि इस
प्रकार के घन्तों से अंकित मुडिकाओं
को धारण करते ही अनुकूल फल की
प्राप्ति गंभीर होने लगती है, और यदि
अनुभव के इन अंगूठियों को धारण किये
रहे और अपवित्र न होने वै, तो कुछ ही
दिनों में उसका पूर्ण अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है, इस प्रयोग
को ऐसे अपने जीवन में हजारों बार जाजनाया है, और हर बार
पूर्ण सफलता ही अनुभव बुझ है।

शत्रुओं पर हाथी होमे के लिए छत्तीसा यन्त्र

छत्तीसा छत्तीसा।

कथा करे जगदीश॥

मथ मस्मद्याग में वह कहावत प्रवलित है, कि जिसने अपनी
उम्मीदों में छत्तीसा यन्त्र अंगूठी पर अंकित करवा कर धारण
कर लिया है, उसका साक्षात् जगदीश भी अर्थात् ईश्वर भी
वहा बिगाड़ नहींता है।

छत्तीसा यन्त्र की यह विशेषता होती है, कि इसको किसी
शारीरिक से गिरा जाए, तो उसका कुल जोड़ छत्तीसा हो जाता
है, इसात्पिण्ड इसका अन्यतं महत्व माना गया है, इस अंगूठी
की मध्यमा उम्मीदों में धारण किया जाना चाहिए, और यदि
चौबीस घाटे यह अंगूठी धारण किये रहे, तो पहनने वाला



व्यक्ति कुछ ही विनों में शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर पाता
है, इस अंगूठी के द्वारा वह शत्रुओं पर तो विजय प्राप्त करता ही
है, शत्रु उसके सामने नस मस्तक रहते हैं, इसको पहन कर
मुकदमे में या कोर्ट में जावे तो पूर्ण वातावरण उसके अनुकूल
ही रहता है, यदि उसकी उगली में पहनी हुई अंगूठी पर
न्यायधीश की दृष्टि पड़े तो उसके विचार भी अनुकूल होने
लगते हैं, वास्तव में ही जिनको राज्यमय हो, इन्कम टैक्स,
सेल्स-टैक्स या अन्य किसी प्रकार की बाधाएं, अडचने,
कठिनाइयाँ, शत्रु-भय आदि अनुभव होता हो, तो यह अंगूठी
जपने आप में जाजबाब है।

अंगूठी पर सुन्वर ढंग से छत्तीसा यन्त्र अंकित किया हुआ,
अपने आप में सुन्वर तो दिखाई देता ही है, सामने वाले पर
मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी डालने में समर्थ होती है, हर अंगूठी
के पहनने से जीवन सभी दृष्टियों से निष्कट्क, निर्भय और
तनाव रहित हो जाता है।

इसके अलावा यह अंगूठी या दूसरे शब्दों में छत्तीसा यन्त्र मुद्रिका व्यापार बुढ़ि और भाष्यदेव में विशेष रूप से अनुकूल होती है, बास्तव में ही यह मुद्रिका सही शब्दों में कहा जाये तो जीवन का सोभास्य मानी गयी है।

साधना सामग्री 150/-

आश्चर्यजनक लक्षणी प्राप्त करने के लिए चौबीसायन्त्र

यन्त्र पहिर चौबीसा।

धन, सुख, भाग अनीसा॥

अर्थात् - जो अपनी उंगली में चौबीसा यन्त्र की अंगूठी छनवा कर धारण कर लेती है, वह आश्चर्यजनक रूप से लक्षणी प्राप्त करने लगती है, जिस प्रकार का भी भोग वह अपने जीवन में चाहता है, वह भोग सुख, ऐश्वर्य उसे, अनायास ही प्राप्त होने लगते हैं।

इस अंगूठी की विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरंतर उत्तम होनी रहती है, चारों तरफ का बातावरण कुछ ऐसा बन जाता है कि उसके आर्थिक स्रोत चारों तरफ से खुल जाते हैं, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और सम्पर्क बनता है, और उनके माध्यम से ही जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य ली प्राप्ति होने लगती है।

यह गोरखनाथ के अनुसार चौबीसा और बीसा यन्त्र का एक सा ही प्रभाव है, और दोनों ही कलियुग में तो अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इने बाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहिना जाना चाहिए।

मैंने इस अंगूठी का प्रभाव अनुभव किया है, यदि कहीं पर सप्ताह कम्सा होता हो या निकल न रहा हो, तो इसके पहिने से कर्त्त्य सम्पन्न होने लगता है, इस अंगूठी की यह विशेषता है, कि यदि व्यक्ति पर कर्जा हो तो वह शीघ्र ही कष मिटा देती है, व्यापार नहीं चल रहा हो, तो इसके पहिने से व्यापार बढ़ने लगता है, नथा व्यापार शुरू होने लगता है, सके हुए व्यापार में तेजी आने लगती है, व्यापार में विक्री बढ़ जाती है, और एक प्रकार से देखा जाए, तो घर में धन की बर्चा सी होने लगती है, बास्तव में ही यह अंगूठी कलियुग में कल्पवृक्ष के समान फलदाता है।

साधना सामग्री- 120/-

भोग वितास, समोहन वशीकरण के लिए कामदेव यन्त्र

यन्त्र काम पहरण।

इस प्रकार के सब्जों से
अंकित मुद्रिकाओं को धारण
करते ही अनुकूल फल की
प्राप्ति संभव होने लगती है,
और यदि श्रद्धापूर्वक इन
अंगूठियों को धारण किये रहे
और अपवित्र न होने टे, तो
कुछ ही दिनों में उसका पूर्ण
अनुकूल फल प्राप्त हो
जाता है।

पत्थर को बश करण।॥

नायों और प्राणीन ग्रन्थों में तो वह कहा वर्त है, कि कामदेव यन्त्र को पढ़िन लिया जाये, तो वह व्यक्ति पत्थर को भी अपने बश में कर सकता है, फिर पुरुष या स्त्री को नो विभान ही क्या है, इस यन्त्र ने कुछ ऐसी विशेषता है कि वह किसी को भी सम्पोषित करने में समर्थ है, सामने वाले को अपने आकर्षण में बांधने के लिए वह यन्त्र मुद्रिका अपने आप में लानवाल है, इस प्रकार की मुद्रिका को सबसे छोटी उंगली में धारण करना चाहिए।

वह अंगूठी जिस पर कामदेव यन्त्र अंकित हो, यदि पहली ली जाए, तो कुछ दी दिनों में पुरुष या स्त्री के शरीर में विशेष प्रकार का आकर्षण पैदा होने लगता है, उसका व्यक्तिगत चुम्बकीय हो जात है, और यदि अपने लड़िकाली से मिलते समय उसकी नजर अंगूठी पर पड़े, तो निश्चय ही वह अधिकारी पहिनाने वाले के अनुकूल होता ही है, और उसके कहे अनुसार कार्य करने लग जाता है।

इसी प्रकार यदि प्रेमी अपनी प्रेमिका से बात बोल करने समय उसका ध्यान आकृष्ट कर ले तो वह पूरी सम्भावन में बद्ध जाती है, और उसके कहे अनुसार ज्याद करने लगती है, इसी प्रकार प्रेमिका भी अपने प्रेमी को इस मुद्रिका के माध्यम

से आकर्षण में बाध राकरी है, परन्तु अपनी पन्नी को या पन्नी अपने पति को इस प्रकार के कामदेव यन्त्र लकिन मुद्रिका के माध्यम से अपने अनुकूल बना सकती है।

बूझदार शब्दों में कहा जाए तो इस अंगूठी के माध्यम से किसी भी व्यक्ति, पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अपने सम्प्रदान में बाध यह राकरी है और जीवन भर उससे आपना मनोनुकूल कार्य सम्पन्न करवा सकता है, व्यापारी इनके माध्यम से महत्वपूर्ण ग्राहक बाते रह सकता है, अपने पालनवाले अनुकूल कार्य ग्रह राकरी है, वैद्यन के किसी भी थांग में यह अंगूठा अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

इस अंगूठी के माध्यम से सम्प्रदान, आकर्षण तथा वशीकरण किया जा सकता है, जीवन बल के जीवन में भोग-विनाश की भी बुद्धि होने लगती है, विशेष प्रकार से पुस्तकों का प्रभाव अनुधाव करने लगता है, वास्तव में इसे लिखने के लिए यह मुद्रिका लहड़ा चढ़ों में जीका का गोपन्य कही जा सकता है।

साधना सामग्री 150/-

अनुकूल विवाह इवं प्रेम के लिए-गवर्द्धन यंत्र

अपने अपने जीवन में निनी बार मो इस अंगूठी के प्रयोग को परखना चाहा, मझे पूर्ण अनुकूलता ही अनुभव हुई, मन्थर मुद्रिका तो देवता भी नक्का न धारण की है।

जन्मधर्व सारा संसार।

अब सब कोई हमारा॥

शुभ गोरखनाथ की इन पंक्तियों का लात्यर यह है कि गन्धर्व यन्त्र का यह विशेषना है कि इसको धारण करने पर साल सम्पाद उनके अनुकूल हो जाता है, यह अपने जीवन में जिसको चाहता है, जिस प्रकार से चाहता है वह कार्य होने लगता है।

यदि, लड़की बड़ी ही गई हो और उसका विवाह नहीं हो रहा हो, अथवा लड़के का विवाह नहीं हो रहा हो तो गन्धर्व यन्त्र मुद्रिका अपने छाप में महत्वपूर्ण उपाय है, पद्मनं वाला किसी निश्चित पुरुष या स्त्री से ही शारी करना चाहता है और साथने वाला स्वीकृति नहीं होना हो तो इसके धारण करने से साधने वाले व्यक्ति का आकर्षण स्वतः बढ़ जाता है, और अनुकूल लिंगित पैदा हो जाता है, यह नहीं अपितु शीघ्र मन की इच्छा के अनुरूप विवाह कार्य सम्पन्न होने का दृष्टि से यह मुद्रिका या दूसरे शब्दों में कहा जाये तो गन्धर्व यन्त्र लकिन मुद्रिका अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

विवाह के बाद पाते पहली में देग बना जहे, यहि अनुकूल बना जहे, इस दण्ड में भी यह यन्त्र महत्वपूर्ण है, यदि ऐसिका चाहे कि उच्चके प्रेमी का जितावाहन नहीं तो वह यन्त्र महत्वपूर्ण है, यहि कीटों परी प्रेमिका को, जीवन गप अपने अनुकूल बनाये रखना चाहे, तो यह यन्त्र सर्वाधिक बहुयोगी है।

वास्तव में ही यन्त्र मुद्रिका जीवन का गोपन्य है, इसे किसी भी शब्द का अनामिका उल्लंघन में अत्यनु बदला जाओगा।

वास्तव में ही वे मनुष्य का जीवनका कहे जा सकते हैं, जिनके नामने पर यन्त्र या गोपन्य उपलब्ध हो, और वह उपने जीवन में लाभने उठा सके या अपना उच्छ्वास के अनुरूप कार्य सम्पन्न कर सके, तो दुर्लभ के गलाका और क्या कहा जा सकता है? यह अंगूठा विशेष जीवन के पूर्ण स्पर्श से प्रभुर बनाये रखाने में विशेष रूप से बहुयक है।

साधना सामग्री - 120 /

पूर्ण उष्टुति के लिए- सरस्वती यज्ञ

जी अपने जीवन में पर्याप्ता में सफल होना चाहते हैं, जो यह चाहते हैं कि उनकी अवश्य गति तेज हो, जो सूज्य में प्रमाणन या उत्तात राहते हैं, जो जीवन के माध्यम से प्रसिद्धि, वश और अमान चाहते हैं, जो किसी भी प्रकार के इन्द्रग्रन्थ में सफलता चाहते हैं, उनके लिए सरस्वती यज्ञ मुद्रिका वास्तव में ही सबन आप में अद्वितीय है।

इसके धारण करने से अवश्य जनि तेज होने लगती है, उच्चका बुद्धि ताद रहती है, और निरनन्द उत्तमा अप्रसमान प्राप्त होना रहता है।

इस अंगूठी की लड़नी के मूल में धारण करना चाहिए, बालकों और बालिकाओं के जीवन में पूर्ण सकातता, चान्द्र्य, बुद्धिमाता और अद्वितीयता के लिए यह मुद्रिका जीवन का भीभावना कही जा सकती है।

साधना सामग्री - 99 /

विशेष तथ्य

उपर भें कहा विशेष यन्त्र और उसे सम्बन्धित मुद्रिका जी का वरण विवरण किया है, नांविक शब्दों और शार्च्छों में इनके बारे में विस्तार से विवेचन है, प्राचीन समय में पाणियों, यतियों, संन्यासियों ने तो अपने समाजों के सभाधारान के लिए मुद्रिका जी को धारण किया ही है, राजाओं, महाराजओं, शशांकों, राजियों मादारानियों और संसाधनियों ने भी अपने जीवन की पूर्णता के लिए इस प्रकार की मुद्रिका जी को धारण किया है और अपने जीवन में पूर्ण सम्पन्न बनाया।

शिष्य धर्म

* शिष्य के जीवन में चरित्र ही सफलता और असफलता का दौतक है चरित्र सफल है तो जीवन सफलता की ओर बढ़ेगा विपरीत चरित्र असफलता की ओर अबास है तो जीवन अवश्य पतन की ओर उम्मुख होगा ।

* शिष्य की समाज की अपूर्णता के विषय में नहीं अपनी अपूर्णता के विषय में विचार करना चाहिए । अपनी अपूर्णता दूर करने वाला समाज की अपूर्णता भी दूर कर सकता है ।

* शिष्य का महत्व हुसमें नहीं है कि वह कितने वर्ष तक जीवित रहता है । अपितु महत्व तो हुसका है कि तुम किस प्रकार ये जीवित रहे ।

* सत्त्वा शिष्य गुरु के किसी बाहरी काम पर लक्ष्य नहीं करता वह तो केवल गुरु की आङ्ग ली ही शोशा बाकर पालन करता है ।

* यदि तुम्हारी साधना करने की तीव्र उत्कण्ठा है तो भगवान् उसके पास सद्गुरु भेज देते हैं । सद्गुरु के लिए साधकों को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

* सत्त्वा और तीर शिष्य तो हुस संसार का बोझा उठाकर भी सद्गुरु की ओर प्रसन्न भाव से लिहारता है ।

* मनुष्य तभी तक अध्यात्म के विषय में तकि-वितकि करता है जब तक उसे अध्यात्म का रसाद नहीं मिलता जिस दिन तुम्हें यह रसाद प्राप्त हो जाता है उस दिन तुम-चाप साधना करने लगता है ।

* जैसे दर्पण को स्वरूप करने पर उसमें मुँह दिखलायी देने लगता है उसी प्रकार हृदय के स्वरूप होते ही उसमें सद्गुरु का रूप दिखलायी देने लगता है ।

* साधना की दाह में कई बार गिरना उठना हीता है । परंतु प्रयत्न करने पर सब साधक ठीक हो जाते हैं ।

* शिष्य के लिए प्रायशिष्ट की तीव्र सीदियाँ हैं आत्म ब्लानी, दूषणी बार पाप न करने का निष्पत्ति और आत्म शुद्धि ।

* अगर तुम दुनिया की परवाह करोगे तो दुनिया तुम पर चढ़ जाएगी, उससे विमुक्त हो जाओगे तभी तुम दुनिया पर चढ़ सकते हो ।

गुरुवारी

* आप जिस प्रकार के हैं उसी कारण से हैं कि आप ऐसे ही होना चाहते हैं। यदि आप वाटतव में अलग बनना चाहते हैं तो आज से ही परिवर्तन को छिना प्रारंभ कर दीजिए।

* साधक का मन कल्पतरु है मन के समुद्र में उठी हुई भवनाएं आत्मिक शक्ति में परिवर्तित हो जाती हैं। यदि साधक का मन पूर्ण विद्वान्, निर्मय, आदा और कल्पाण कारी भावों से भरा होना है तो उसे अनंत विद्वान् मिलते हैं। यदि वह विषेष स्थितियों से भयभीत हो जाता है और अमृत विद्वान् को लो बेठा है तो वह स्वयं को ही खो देता है तथा संश्ल के लिए नष्ट हो जाता है।

* वरदुओं के द्याग में भलि नहीं है। वह तो व्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। धर्म कभी भी मनुष्य को इंजिक कार्यों का द्याग करने को नहीं कहता, वह अर्थात् धर्म उसे केवल मानसिक असंतुलन, जैतिक बुराईयों तथा आत्मिक अङ्गान से छुटकारा पाने को कहता है।

* साधना तो सुबह से रात्री तक अथक परिश्रम की एक दिन चर्चा है। केवल होठों से मंत्र हुद-बुदाजे से साधना नहीं होती।

* साधक से अधिक संसार में कोई भी गुणी-व्यक्ति नहीं है।
वर्णोंके सामान्य व्यक्ति अविद्या से ब्रह्म होता है। अविद्या से अहंकार
उत्पन्न होता है। अहंकार से भ्रम उत्पन्न होता है। भ्रम से संशय उत्पन्न
होता है। संशय विश्वास से होता है तिष्य से शोग की कामना होती
है। औद्योगिक कामना से शोग उत्पन्न होता है। शोग से ही संस्कार बनते हैं।
संस्कारों से ही जन्म मृत्यु और पुलजीव तीज इथितियां मनुष्य के भीतर
दुःख और अशांति लाते हैं।

* वास्तव में सुखी रहने के लिए अविद्या, संशय और
अहंकार की जड़ों को गुरु द्वारा बतनाए गए साधनात्मक मार्ग से
पूर्ण रूप से काटना आवश्यक है।

* प्रार्थना और मन की भाव अभिव्यक्ति ऐसी स्वच्छ कर देने वाली
आवश्यक है, जो हमारे मन की गंदी, प्रकृति और सभी हुई वस्तुओं को साफ कर
देती है।

* हसका तात्पर्य है मन गुरु रूपी प्रभु से कोई भी बात न
छिपाऊ उबसे मन कुछ कह दो याथपि मह-गुरु मन-कुछ जानते हैं।
फिर भी तुम्हें अपने मन की गंदगी बिलाल डालने के लिए मन पुरुष
कहना ही पड़ेगा। रबके सामने अपने मन कार्य और दीव कह-डालो
आवश्यक गुरु के सामने वित्कुल कूदा और अबूज बबकट जाओ।

* तुम कहीं भी रहो तब तक तुम्हारा मन श्रेष्ठ चिन्तन साधन
आर उसके साथ गुरु कार्य में लगा है तो तुम श्रेष्ठ हो।

सर्व बाधा निवारण मह शपित प्राप्ति चार्दिका स्तोत्र

मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा सप्तशती संह के अनुसार भगवती उग्रदम्बा (दुर्गा के तीनस्थरू पों का वर्णन है,) महाकाली, महालक्ष्मी और महा सरस्वती / साधारणों एवं उपासकों के भौतिक सफलता एवं ऐश्वर्य सिद्धि के लिए महालक्ष्मी के उपासना, जाव एवं चेतना प्राप्ति के लिए महासरस्वती एवं शशुभादा, भूत, विशाच, शाकिनी, ढाकिनी, वधु, किन्नर, योगिनी तथा सपादि बाधाओं के शमन हेतु महाकाली की उपासना करनी चाहिए । इन्हीं दुष्ट शक्तित तथा तंत्र बाधा भूत बाधा निवारण के लिए चार्दिका स्तोत्र जाहना अपेक्षित है ।

भगवती महाकाली के आठ भेद बताये गये हैं - ऐसे तो उनके विभिन्न किया नाम तथा रूप के कारण अनेक भेद हैं, किर भी ये आठ भेद मूल्य हैं -

1. चिन्तामणि काली
2. स्पर्शमणि काली
3. सन्ततिप्रवाकाली
4. सिद्ध काली

5. तक्षण काली
6. काम कला काली
7. छम काली एवं
8. गृह्ण काली ।

भगवती महाकाली के विभिन्न में लोगों की धारणा है कि यह भव दायिनी उज सपा तथा अत्यंत भीषण जादि है, पर ऐसे ऐकान्तत, नहीं है, उनकी दो नवरूप हैं, उन तथा सीम्य दोनों

उपादय है। उपरोक्त उनके नमों से रमण है इस स्तोत्र के विशेषता यह है कि बीजाभरों के द्वारा उनके रूपरूप कथन किया है, जिन शब्दों के आशे बीजाभर है उनकी विशेषता को और अधिक अधिकतम करना है। जेये क्रों कीं कुं क्रोधमृति इस का अथ है अन्यत विशेषों क्रोध का अन्तिम विन्दु पर पहुँची हुई। धां धीं धू धोरस्त्रे का अर्थ है अन्यत भ्रायवह। इस स्तोत्र में उनके ऊरु रूप का ही वर्णन है।

या देवी खदगहस्ता स्वकलननपदव्यापिनी विश्ववृग्ना
अव्याप्तिं शुभलपाणा द्विनगणगुणिना ब्रह्म वेद्यादीवासा॥
जानानां साधयित्रा यतिगिरिगम्भनजान दिव्य प्रबोधा
भा वेदी विव्यमृतिः प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥

सरलार्थ - यजवती छात्र में स्वहुग जी हुई समस्त संसार में विचरण करना वर्ती यज्ञो विठ्ठाइयो ये वार करने वाली कोननगा हुआ हुई यो हथ म शमुनेधा के लिए पात्र हथ म तो हुई वेदविना ब्राह्मणों के ग्राम मृति की गई वक्षस्वरूपा, साधकों को जान प्रदान करने वाली पर्वत आदि गांगों में विचरण करने वाली विव्यमृति चण्डमुण्ड शत्रुओं को नाश करने वाली भवकर स्वरूप वाली भगवती चपड़ी मरी सभी बाधाओं को दूर कर।

चण्ड और मुण्ड दो रक्षस थे इनको मारने के कारण भगवती का नाम चपड़ी पड़ा। रक्षसों को परास्त करके वेताओं को स्वर्ग में पुन, स्प्रापित किया था।

हो हीं तं चर्यसुण्ड शक्वगम्भनहते सीषणे सीषवदने
क्रों कीं कुं क्रोधमृतिर्विकुत कुचमुखे रीढ तंछांकराले॥
कं कं काल धारिप्रमपि जगविद भक्षयन्ती भरननी
कुक्षर चोध्वस्ती प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥२॥

सरलार्थ - हे मुण्ड माला शाश्वत करने वाली, जब के ऊपर ऐरे रखे हुए शत्रुओं के भय पैदा करने वाली भयानक मूरक तथा दाती वाली, विकूत मुख और सरनों वाली वेंकाल को धारण का हुई, सम्मन विश्व में भग्न करके भयानक जंग करती हुई भगवती मेर समस्त बाधाओं को दूर कर।

इस इनाम में उमशान काली के ऊरु स्वरूप का वर्णन है, मृत विषाच आदि बाधाओं को दूर करने के लिए उमशान काली की अजाधमा का जाता है।

धां धीं धू धोरस्त्रे विभुवनमिते पाशहस्ते तिनेत्रे
रां रीं रुं रंगरंगे विलिकिलितरवे शूलहस्ते प्रचण्डे।
लां लीं लूं लम्बनिङ्के हस्ति कहकहा-शुक्रधोराहुहासे
कंकलीं कहत रात्रि, प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥३॥

सरलार्थ - हे ऊरुस्वरूपा, हात में पाश धारण की हुई, तीन नेत्रों वाली, शत्रुओं के खन से रंगे हुए हाथों, किलकिल इस तरह भवानक गर्वन करने वाली, विशूल हाथ में तेजे वाली, भयंकर स्वरूप वाली उणी लम्बी जिहा का बाहर निकली हुई कहकहा इस तरह हस्ती हुई, धार शहुहास करती हुई, ककाली, वाल रात्रि नग्रक गगड़ी गेरी रात्र आधाओं को दूर करे। काल रात्रि की भाधना दीपावली, होली और शिवरात्रि में की जाती है, बर्याकि ये तीनों दिन काल रात्रि कहलाती हैं।

धां धीं धू धोरस्त्रे धववधववटिते धुधुरारावधोरे
निमांसी शुष्कजंधे पिबतु नरवसाधृम धूमायमाने।
ऊं धां धीं धू वावयन्ती सकलशुति तथा यश गन्धर्वनगान
धां धीं धू धोधयन्ती प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥४॥

सरलार्थ - हे धोर स्वप्ने धुर-धुर की आवाज करने वाली, मांसरहित शरीर वाली, स्यरे हुए उंची वाली, मनुष्यों के सून व चर्बी का पान करने वाली, धूमवण वाली, सारे संसार में धुमकर भूत पिशाच आदि बाधाओं को दूर करती हुई, वक्ष गन्धवं तथा नागाओं को धुमित करती हुई चण्डमुण्ड विषातीनी भगवती मेरी सब बाधाओं को दूर करे।

भगवती के यह स्वरूप बहुत ही भयावह है कि साधना को सम्पन्न करने के लिए निर्भय होना चाहिए। कम जोर हवाय वाले व्यक्ति को यह नाधना नहीं करती चाहिए।

धां धीं धू चण्डगर्वे हरिहरनमिते रुद्र मतिश्व कीर्ति
श्वन्दादित्यो च कणीं नदमुकुलजिरावेधिता केतुमाला
स्त्रकम्बीं चोरगेन्दो अजिकिलणनिमा तारकाहार कणठा
या देवी विव्यमृतिः प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥५॥

सरलार्थ - हे चण्ड स्वप्न वाली, बद्या विष्णु आदि देवों के द्वारा स्तुति की हुई ल्लग्नीत अन्यत जीते से युक्त, स्वर्य-चंद्र स्त्री वाली, दीरे आदि मणिनिट केतु माला पहनी हुई, मांपों के हार पहनी हुई, तारों की नग्न चमकती हुई, दाढ़े में सूशोमित भगवती की वह दिल्लीनी जो प्रवहत हवा है मरी सब बाधाओं



को दूर करे।

सं खं सं खं खुदग हम्ने वरकनकनिभे गृह्यकान्ते स्वतेजो
विशु ल्लालावलीनां नवनिशितमहाकृतिका दक्षिणे च ।
थामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयन्ती
सा केवी दिव्यमूर्ति: प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥६॥

सरलार्थ - हाथ में खुदग ली हुई, सोने के समान वर्ण वाली,
गृह्य कोतमणि के समान लेज वाली अपनो नेत्रस्तिता से शत्रुओं
का परास्त करती हुई, दौड़िण हाथ में मंगी तलवार ली हुई,
बाये हाथ में मण से भरा हुआ खपर धारण की हुई वह
दिव्यमूर्ति भगवती चामुण्डा मेरी सब आधाओं को दूर करे।

हुं हुं फट काल रात्री सु ल सुरभयनी धूममारी कुमारी
हाँ ही हूं हतिशोरीभूषितु किलकिला आङ्ग अड्डा दुष्टासे ।
हा हा भूत प्रसूते किलकिलसमुखा कलियन्ती यशन्ती
हुकार चाचरन्ती प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥७॥

सरलार्थ - हे काल रात्रि स्वरूपा असूरों का मन्थन करने वाली,
धूम नोचन नामक असूर वा नष्ट करने वाली, कुमारी छोश से
मरी हुई किलकिल शब्द का अट्ठालास करती हुई शत्रुओं को
चबाकर जार-जोर से हकार करने वाली, भगवती चामुण्डा
मेरी सब आधाओं को दूर करे।

भृगी काली कपालीपरिजन महिते चण्डमुण्डनिन् ॥
रो रों रों कार नितये शशिकरधवले काल कटे दुरम्ने ।
हुंहुंकारकारी सुरगणनमिते कालकारी विकारी
वश्ये त्रैलोक्यपारी प्रवहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥८॥

सरलार्थ - श्रृंगी श्रृंगी आदि गयों के सहित हाथ में कपाल
धारण की हुई चण्डमुण्ड की मालने वाली, हुकार स्वरूपा चंद्रमा
के समान धबल रूप वाली कालकृट नाम वाली, देखने में
भयालह, हुकार करने वाली, देवताओं के द्वारा पूजित काल
को समाप्त करने वाली, सब जो वश में करने वाली, प्रचण्ड
स्वरूपा भगवती मेरी आधाओं को दूर ले।

श्रृंगी श्रृंगी और मैरव आदि भगवती के गाण कहे गये हैं जो

द्वयेशा सहयोग के लिए तथा आजा का पालन करने के लिए रहते हैं।

वन्दे दण्ड प्रचण्डा उमरु रुणिमणिष्ठोपटकार पष्टे
नृत्यनी याहुपातैरुट यट विभवैर्निर्भला भंत्रमाला ।
मुझो कहो बहनी खरखरितसखा चार्धिनि प्रेत भाला
मुच्छेत्तेष्याङ्गामे धूर रित्वा चर्म मुण्डा चान्युष्ण प्रचण्डा ॥ ॥

सचलार्थ - शारुओं को दण्ड देने के कारण भयंकर रूप वाला, उमरु, धूर आदि पुरुष वहन कर नुस्ख करती हुई, और नोर से पैर पटकती हुई, चमकदर वस्त्र पहनी हुई, भंत्रमनस्पा, सुन्दर कठि एवं स्तनी वाली घर घर की आवाज करती हुई, धून-धेत के भगवानी हुई, जोर-नोर से झटुहास करती हुई, धूर की आवाज करती हुई प्रचण्ड मगवती चामुण्डा को मैं बार बार प्रणाम करता हूँ।

त्वं ब्राह्मी त्वं च रोद्री शवशिखिगमना त्वं च देवी कुमारी
त्वं चक्री चक्रहस्ता धुरधूरितरवा त्वं वराह स्वरूपा ।
रोद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलमुवि परे स्थिते स्वर्णमार्गे
पाताले ग्रीलभृंगे हरिहरनमिति वेदि चण्डे नमस्ते ।

सचलार्थ - हे भगवती आप ब्रह्मस्पा हैं, अमशान भूमि में गर्भी पर वास करती हैं, आप देवी हैं कुमारी हैं, चक्रधारण करने के कारण चक्री हैं, शत्रुओं को भयभीत करने के लिए धुर-धूर की आवाज करती हैं इसलिए वराह स्वरूपा हैं, हे सूदरुपे चण्डमुण्ड धारण की हुई, सारे संभार में विचरण करने वाली स्वर्ग-पाताल तथा पर्वतों में रहने वाली, धक्का, दिष्टु आदि देवों से पुनित हैं देवी चण्डी आपको बार-बार नमन स्वीकार ही।

रक्ष त्वं मुण्डधारि गिरिवरविवरे निश्चरि पवति वा
संग्रामे शत्रुमध्ये विशविशभविके सकटे कुन्तिसे वा
व्याप्रे चौरे च सर्पेष्युदधिभुवि तथा वहिमध्ये च दुर्जे
रक्षेत सा दिव्यमूर्ति: प्रदद्यु दुरिते चान्युष्ण प्रचण्डा ।

सचलार्थ - हेनरमुण्ड धारण करती हुई भगवति चामुण्डे! शत्रुओं में, झरनों में, पर्वतों में युद्ध धैर में शत्रुओं के बीच में अप अन्दर धूल कर मेरी रक्षा करे। संकट में बुरे लोगों के बीच में, व्यापों में, चोरों के बीच में, सर्पों के मध्य, समुद्र में, अजनि में और कठिन समय में वह दिव्यमूर्ति भगवती चामुण्डा मेरी रक्षा करे।

इत्येवं दीजमन्त्रः सत्वनमति जिवं पातकं व्याधिनाशं,
प्रत्यक्षं दिव्यं रूपं शहगणमध्ये भर्दने शाकिनीनाम्
इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यं
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पर्यते स लभते प्रार्थितां मन्त्ररिच्छिष्ठा

सचलार्थ - इस प्रकार बीज उदासो से मुक्त यह मंगलकारी, व्याधीनाशक प्रत्यक्ष फल देने वाला दिव्यस्वरूप, यह दोषों को दूर करने वाला शाकिनी, डाकिनी आदि भाभाओं को दूर करने वाला अत्यंत वेग रूप सभी पर्य को दूर करने वाला यह मंत्र उक्ति-रूप है।

जो व्याधक इस दिव्य स्तोत्र का प्रति दिन पाठ करता है वह मन्त्र सिद्धि को प्राप्त करता है। वह स्तोत्र अत्यंत प्रमाणी और शीघ्र फल देने वाला है क्योंकि आज आप जिस वातावरण में हैं वह भवायडहे वीभूत्य है क्योंकि यह कलिकाल है, कभी भी आपके सामने उपरोक्त बाधाएं आ यक्की हैं, इन लिये तो घबराने और उसे यो अपेक्षा इस स्तोत्र का पाठ करें। प्रति दिन पांच बार, ग्यारह बार या उत्तरीर बार पाठ करने पे उपरोक्त बाधाओं से मुक्त हो सकते हैं, पतिकाओं में इस नरह का स्तोत्र पाठ देने का अद्य यही है कि आप इसले लाभ उठाएं।

जीवन का सार

जीवन वा सार जीवन की उज्जीति है... और जीवन की उज्जीति, जीवन की पूर्णता या जीवन की उपतविधि सामान्या तरीके से सम्भव नहीं है, क्योंकि जीवन को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने आप को समझें, अपने आप को वहियाने। मालव के शरीर को हम समझ ही नहीं पाए हैं, मालव के शरीर में एक दिल होता है, उसमें धड़कन होती है, एक मांस पिण्ड होता है जो धड़कता रहता है, मगर उस हृदय के पीछे एक और भाव-प्रवण पिच है और उस पिच को हम जब तक नहीं पहियानेंगे तब तक हम जीवन के जाजिद को समझ ही नहीं सकते। इसलिए पूरी तरह से जीवन को समझने के लिए गुरु और शिष्य को समझना जरूरी है।

ज्ञाधक भाषी हैं

तंत्र प्रयोग दूर हुआ

मनोविज्ञानी शिवका यताइन की बाती ३०-८-१९९२
को रात्रि १० में दूर, समुद्रल में उसे

तंत्र प्रयोग होने के कारण
अध्यात्म जीवा हो गई थी, जिसके
बाल में काफी परशान था।

मेरे एक भिन्न गेव राम ने
मुझ मार्च २००० की मन्त्र-तंत्र-योग
विज्ञान पत्रिका दी और गुरुदाम
दिल्ली जाकर गुरुदेव ने मिलने की

सलाह दी।

२३ फरवरी २००१ को गुरुदेव से व्यक्तिगत स्पष्ट
से जिलकर पूरा परिवार गुरुदीपा भास किए और दिविका को
समाज्य रामाधान हनु एक माह तक विद्य भगवता ब्रह्मामुखी
भान्नमंत्र के जात का स्वाक्षर हो दी। मेरी छोटी ने सब लाख भ्रष्ट जप
योग्य कर १४ अण्डों की पूर्णावृति भ्रष्ट की, जिसके प्रभाव से
१६ अण्डों को मेरे लघु जगता भया थे जो अरोप वापस ले
लिया गया तद दूसरी सफलता यह थी कि मेरी लड़की के
समुद्रल बांधे जा सकते हैं। मेरी लड़की का ८ माह से तिरस्कृत कर
दोहरे थे, स्वयं जाकर दूसरी जलती स्त्रीकार कर अपने
पर शयमर ले गये तथा मेरी लड़की दिविका को २ जून, २००१
को एक रात की श्रान्ति दी। अब मेरा लड़का पूर्ण कुड़ल है।

सद्गुरुदेव ने मेरे परिवार पर कृपा कर गमारी जिल
समाज्य का निवान किया है, उसके लिए मैं ऊँचा हवय से
आभारी हूँ।

— शम्भुकिंजन थवाइन (पटवारी)
जगजीर, चांपा (छत्तीसगढ़)

गुरु कृपा से जीवना रक्षा

दिनांक २८-८-२००१
को मुझे हाई अडेक हो गया था,
परिवार बालों ने मदो उरकारी
मडिकल, कालेज अम्पताल,
चार्झीगढ़ में भर्ती करवा दिया था

मैंने आज से चार बाल
पहले गुरु दीक्षा ली थी और अभी
बीड़ी समय पहले ही नदामत्युन्न
दीक्षा घटण की थी और आज दिविका बालों के बहुत लाल कि
आप महामन्त्युन्न योग संत्र का जाग लाने जै, विद्य करार में बड़े
प्रशीलन पर रखा गया था, वहां मुझे ऐसा जामास हआ कि
गुरुदेव सब्दों आकर हृष्ण कर रहे हैं, १५ जून को जब होवा
आया तो गुरुदेव ने अंतिम आहुति बकर मीलों से मेरा चरणार्द
बाध दी और कहने लगे कि अब इसकी मील नहीं आएगी।

उसी दिन मेरा आपाम आना शुरू हो गया, अम्पताल

क कर्मचारी मुझसे यार-यार पूछते रहे कि आपके पलंग के बासे और अंगों प्रकार की गंध है इन मानव अकृतियों क्यों दिखाई नहीं दी? मैं गुरुकर्मा ही उन्हें भीर क्या कहता। ३. अगस्त को गुरुवार को सक्रुत जो बाद कर रहता हो रहा, १० अगस्त २००१ को उर लौट आया।

ऐसकरुण नहीं कि वे द्यो दीदा भाने क्या-क्या कहते हैं, एसे सबकी शिक्षा आपने द्यावी गंगा नदीयों कर रखते हैं, फिर भी नम्रता बना बरने हो रहते हैं।



— सोभनाथ वेववान
चुड़ियाला, चण्डीगढ़

गुरुकृपा से नीकउरी मिट्टी

गुरुदेव जी की कृपा से मुझ नीकरी प्राप्त हो गई, तेरे एक मित्र ने मव-तंत्र-यंत्र विज्ञान

पत्रिका पढ़ने के लिए प्रारंभ किया

मैंने १०, मई, २००० को फोटो द्वारा गुरु दीदा जी, जोधपुर पत्र भवन के अपनी आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में लिखा था, गुरु जी ने मुझे पद्मावती साधना नंपन करने की आज्ञा दी। मैं किराने की दुकान करता हूं, लेकिन मेरा मन शुरू से ही सर्विस फ्री तरफ च्याला रहा, सन् ८५ से ९५ तक ब्रिजनेस ट्रैक रहा, लेकिन उनके बाद खराब होना चला गया, पद्मावती साधना के बाद ब्रिजनेस भी ट्रैक चलने लगा।

जून २००० को मैं भेजा मित्र और उसके पिता दिल्ली स्थित सिल्वाश्रम गये और गुरुदेव से मिले गुरुदेव ने मुझे लगभग चौन हेतु एक विशेष मंत्र दिया और मैं कान्ती हकीक मला से मोक्ष जपता रहा। इसी बीच ३०-५-२००१ को मेरा सर्विस का कारोबार लेटर आया १२-६-२००१ को मैं मेरिट लिस्ट में पीछा आ गया।

मैं गुरु जी का बहुत आभासी हूं, जिनकी कृपा से मुझे आर्द्धिनेत्र वर्ष्य कैफ्ट्रू में वरकरी नीकरी प्राप्त की। इसी प्रकार से मेरे जैसे शिक्ष्य पर दया दृष्टि बनाये रखें। मैं चंद्रेव गुरु दीदा में लगा रहूँगा।

— कमल सर्वदेव, राम नगर कॉलोनी
गाहनडॉपर, उत्तर प्रदेश

गुरुकृपा से धूमावती साधना सापड़लाता

मैंने गुरुदेव से सन् ०५ से गुरुदीशा प्राप्त की थी तब से लेके आज तक मैं शुभमत बरतती रहा इमरे परीवार के बहोन ही शबु है हम बहोन ही उत्तरान में थे कि क्या करें। हम साथ रहे थे इन लोगों ने कैसे बचे, और गुरुदेव ने हमे प्रेरणा दी की शबु दी के पर बत की तरह प्रभावी धूमावती साधन करें और हमने धूमावती साधना सामग्री मंगवाई और साधन स्पर्श की आज शबु हमसे नजर चुराते हैं हम से कूर ही रहते हैं। ये लब्ज गुरुकृपा से ही सम्भव हो पाया।

हनारी परिस्थिती ही ऐसी है की हम चाहकर भी आपके थाम तक नहीं आ सकते और आपसे आशीर्वाद नहीं ले सकते गुरुदेव आप करे और डमे आशीर्वाद दे की हम पर आपकी ऐसी ही कृपा बनी रहे और हमे इस राह में लक्ष्मी मिलती रहे और आपको कृपा हमेशा बनी रहे।

— मंजुला बेल चौहान, सहवा, भावनगर (गुजरात)

गुरु कृपा से जीवन रक्षा

जगन्नाथपुरी गुरुपूर्णिमा विविर में बहुत आनन्द आया ७ जुलाई को जगन्नाथ पुरी में ऑटो रिक्षों में परिवार सहित घूम रहे थे। ऑटो में मेरी पत्नी के अलावा और कई रिक्षेदार भी थे।

एक बच्चे के बचाने के लिए हाइवर ने रिक्षों को जो किनेजी से बढ़ा चला जा रहा था साइड में काटा। ऑटो लहराकर पलट गया और बुरी तरह क्षत विक्षत हो गया। इसके बाद भी गुरु कृपा से किसी को जान माल की छानि नहीं हुई केवल एक दो जन को मामूली भी चोट आई।

गुरु देव की कृपा ऐसे ही हम सब शिष्यों, प्रकों और साधकों पर बनी रहे। ऑटो की डालत देखने से ऐसा लगता था कि हम बच रिक्षे गये। क्योंकि जहाँ ऑटो पलटा था वहाँ बड़ा नाला था। यदि ऑटो उसमें चला जाता तो कोई नहीं बचता क्योंकि पिछुले कई दिनों में लगानार पानी बरसते रहे के कारण नाला पानी से लबालब भरा हुआ था।

गुरुदेव का आशीर्वाद सर्वेव हमारे साथ है। डमी आशा के साथ आपका शिष्य-

राम सिंह चौहान, मोर्चापुरम, मेरठ (उत्तरांश्च)

कर्मचारीवाच

कर्म का वरित्र पर प्रभाव

कर्म शब्द 'कृ' धातु से निकला है, 'कृ' धातु का अर्थ है करना। जो कुछ किया जाता है, वही कर्म है। इस शब्द का पारिभाषिक अर्थ 'कर्मफल' भी होता है। वार्षिक दृष्टि से यदि देखा जाए, तो इसका अर्थ कभी कभी वे फल होते हैं, जिनका कारण लगार पूर्व कर्म रहते हैं। परंतु कर्मयोग में 'कर्म' शब्द से हमारा मतलब केवल 'कार्य' ही है। मानवजाति का उग्रम लक्ष्य जानलाभ है। प्राच्य दर्गनिशाचर हमारे सम्मुख एकमात्र यही लक्ष्य रखता है। मनुष्य का अन्तिम ध्येय सुख नहीं बरन जान है, क्योंकि सुख और आनन्द का तो एक नए दिन अन्त हो जाता है। अतः यह मान लेना कि सुख ही उग्रम लक्ष्य है, मनुष्य की भासी भूल है। संसार में सब दुःखों का मूल यही है कि मनुष्य आजानकश यह समझ बैठता है कि सुख ही उसका उग्रम लक्ष्य है। परं कुछ समय के बाद मनुष्य को यह बोध होता है कि जिसकी ओर वह जा रहा है, वह सुख नहीं बरन जान है, तथा सुख और दुःख दोनों ही महान शिक्षक हैं, और जितनी शिक्षा उमे सुख से मिलती है, उसनी ही दुःख से भी। सुख और दुःख उग्रों ज्ञानों आत्मा पर से होकर नाले रहते हैं, त्यों लों ने उपर कुपर अनेक प्रकार के धृत्र अंकित करते जाते हैं और इन चिह्नों आद्या संस्कारों की समाहि के फल को ही हम मानक का 'चरित्र' कहते हैं। यदि तुम किसी मनुष्य का चरित्र देखो, तो प्रतीत होगा कि वास्तव में वह उसकी मानसिक प्रवृत्तियों परं मानसिक दृष्टिकोण की व्याप्ति ही है। तुम यह भी देखोगे कि उसके चरित्रगठन में सुख और दुःख दोनों ही समान रूप से उपादानरूप है।

चरित्र को एक विशिष्ट दांचे में ढालने में अच्छाई और बुराई दोनों का समान अंश रहता है, और कभी कभी तो दुःख सुख से भी बड़ा शिक्षक हो जाता है। यदि हम संसार के महापुरुषों के चरित्र का अध्ययन करें, तो मैं कह सकता हूँ कि अधिकांश दशाओं में हम यही देखेंगे कि सुख की अपेक्षा दुःख ने तथा सम्पत्ति की अपेक्षा दारिद्र्य ने ही उन्हें अधिक शिक्षा दी है एवं प्रशंसा की अपेक्षा निन्दारूपी आधात ने ही उसकी अन्तःस्थ ज्ञानग्नि को अधिक प्रभुरित किया है।

अब, यह जान मनुष्य में अन्तर्निहित है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब अन्दर ही है। हम जो कहते हैं कि मनुष्य 'जानता' है उसे ठीक ठीक मनोवैज्ञानिक भाषा में व्यक्त करने पर हमें कहना चाहिए कि वह 'आविष्कार करता' है। मनुष्य जो कुछ 'सीखता' है, वह वास्तव में 'आविष्कार करता' ही है। 'आविष्कार' का अर्थ है- मनुष्य का अपनी अनन्त ज्ञानरूप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना। हम कहते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकरण का आविष्कार किया। तो क्या वह आविष्कार कहीं एक कोने में बैठा हुआ न्यूटन की प्रतीक्षा कर रहा था? नहीं, वह उसके मन में ही था। जब समय आया तो उसने उसे हूँढ़ निकाला। संसार ने जो कुछ जान लाभ किया है, वह मन से ही निकला है। विश्व का असीम पुस्तकालय तुम्हारे मन में ही विद्यमान है। बाल्य जगत तो तुम्हें अपने मन की अध्ययन में लगाने के लिए उद्दीपक तथा सहायक मात्र है, परंतु प्रत्येक समय तुम्हारे अध्ययन का विषय तुम्हारा मन ही है। सेव का गिरना न्यूटन के लिए उद्दीपक

वारणस्वरूप हुआ और उसने अपने मन का भृत्यमन किया। उसने अपने मन में पूर्व से स्थित भ्राता-भ्रूखला की कहियों को उक बार पिल से अवशिष्ट किया तथा उनमें एक नयी कड़ी का आविकार किया। उसी का हम गुरुल्लाङ्करण का नियम बहुत है। यह तो सेव में शा और न पूछों के केद्र में स्थित कही अन्य वस्तु में ही। अनेक समस्त जान, चाहे वह व्यावहारिक हो अथवा पारमार्थिक, मनुष्य के मन में ही निहित है। बहुधा यह प्रकाशित न होकर ढका रहता है। और तब जावरण धीरे-धीरे छटना जाता है, तो हम कहते हैं कि 'हमें जान हो रहा है'। ज्यो-ज्यो हम आविकारण की क्रिया बदल जाती है, त्यो-त्यो हमारे जान की वृद्धि होती जाती है। जिस मनुष्य पर से यह आवरण उठता जा रहा है, वह अन्यव्यक्तियों की अपेक्षा अधिक जानी है, और जिस मनुष्य पर पह आवरण नहीं पर-तह पड़ा है, वह अज्ञानी है। जिस मनुष्य पर से यह आवरण किन्तु कल बला जाता है, वह सर्वज्ञ पुरुष कहलाना है। अतीत में किन्तु ही सर्वज्ञ पुरुष हो भुक्त हो और मेरा बड़वास है कि अब भी बहुत से होगे तथा आगामी युगों में भी ऐसे जसोंव्य पुरुष जन्म लेंगे, जिस प्रकार एक चक्रमात्र पत्त्वर के ढकड़े में अभ्यन्न निहित रहती है, उसी प्रकार मनुष्य के मन में जान रहता है।

उदीपक-कारण घर्षणस्वरूप ही उच्च जानाजिन का प्रकाशित कर देता है। ठीक ऐसा ही हमारे समस्त भावों और कार्यों के सम्बन्ध में भी है। यदि हम शान्त होकर स्वयं का अध्ययन करें, तो प्रतीत होगा कि हमारा हंसना-रोना, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, हमारी शुभ कामनाएँ एवं शाप, स्तुति और निन्दा ये सब हमारे मन के ऊपर बहिर्भूत के अनेक धारा-प्रवायत के फलस्वरूप उत्पन्न हुए हैं और हमारा, वर्तमान चरित्र इसी का फल है। ये सब धारा-प्रवायत विलक्षण 'कर्म' कहलाते हैं। अत्मा की आभ्यानन्तरिक अभ्यन्न तथा उसकी अपनी शक्ति एवं ज्ञान का बाहर प्रकट करने के लिए जो नामसिक अथवा भौतिक धातु उस पर पहुंचाये जाते हैं, वे ही कर्म हैं। यहां कर्म शब्द का उपयोग व्यापक रूप में किया गया है। इस प्रकार, हम सब प्रतिक्षण ही कर्म वरन् रहते रहते हैं। मैं तुमसे बात चीत कर रहा हूँ यह कर्म है, तुम युझ रहे हो-यह भी कर्म है, हमारा सोश लेना, चलना आदि भी कर्म हैं, जो कुछ हम करते हैं, वह वारीरिक हो अथवा मानसिक, सब कर्म ही हैं। और हमारे ऊपर वह अपना चिह्न अकिस कर जाता है।

कड़े कार्य ऐसे भी होते हैं, जो मानो अनेक छोटे-छोटे कर्मों की समष्टि है। उदाहरणार्थ, यदि हम समुद्र के किनारे खड़े हों और लहरों को किनारे से टकराने हुए सुनें, तो ऐसा मान्य होता है कि एक बड़ी मारी आवाज हो रही है। परंतु हम जानते हैं कि एक बड़ी लहर असंख्य छोटी-छोटी लहरों से बनी है। और यद्यपि प्रत्येक छोटी लहर अपना शब्द करती है, परंतु फिर भी वह हमें सुन नहीं पढ़ता। पर ज्यों ही ये सब शब्द आपस में मिलकर एक हो जाते हैं, त्यों ही हमें बड़ी आवाज सुनायी देती है।

इसी प्रकार हृदय की प्रत्येक धड़कन से कार्य हो रहा है। कई कार्य ऐसे होते हैं, जिनका हम अनुभव करते हैं वे हमारे हृद्विग्राह हो जाते हैं, पर साथ ही वे अनेक छोटे-छोटे कार्यों की समाप्तिस्वरूप हैं। यदि तुम सचमुच किसी मनुष्य के चरित्र को जांचना चाहते हो, तो उसके बड़े कार्यों पर से उसकी जांच मत करो। एक मूर्ख भी किसी विशेष अवसर पर बहादुर अन जाता है। मनुष्य के अत्यन्त साधारण कार्यों की जांच करो, और असल में वे ही ऐसी बातें हैं, जिनसे तुम्हें एक महान पुरुष के वास्तविक चरित्र का पता लग सकता है। आकर्षित अवसर तो छोटे-से-छोटे मनुष्य को भी किसी-न-किसी प्रकार का बड़प्पन दे देते हैं। परंतु वास्तव में बड़ा तो वही है, जिसका चरित्र सदैव और सब अवश्याओं में महान् रहता है।

मनुष्य का जिन सब शक्तियों के साथ सम्बन्ध आता है, उनमें से कर्मों की वह शक्ति सब से प्रबल है, जो मनुष्य के चरित्रगठन पर प्रभाव डालती है। मनुष्य तो मानो एक प्रकार का केद्र है, और वह संघार की समस्त शक्तियों को अपनी और सीधे रहा है, तथा इस केद्र में उन सारी शक्तियों को आपस में विलाकर उन्हें फिर एक बड़ी तरंग के रूप में बाहर भेज रहा है। यह केद्र भी 'प्रकृत मानव' (आत्मा) है, यह असर्वशक्तिमान तथा सर्वज्ञ है और समस्त विश्व को अपनी ओर खींच रहा है।

भला-बुरा, सुख-दुःख सब उसकी ओर दौड़े जा रहे हैं, और जाकर उसके चारों ओर मानो लिपटे जा रहे हैं और वह उन सब में ये चरित्र-स्वर्णी महाशक्ति का गठन करके उसे बाहर भेज रहा है। जिस प्रकार किसी चीज को अपनी ओर खींच लेने की उसमें शक्ति है, उसी प्रकार उसे बाहर भेजने की भी है।

(ओषध अगले अक्षर)

जीवन में पराजय शब्द नहीं चाहिए

बहुर्योगिकि

हम सम्पन्न कर सकते हैं पूर्ण विजय हेतु

विजयादशमी साधना

जीवन तो हर कोई जीता है और समय आजे पर काल का ग्रास बन जाता है। यह स्थिति मनुष्य के लिए भी है और पशु के लिए भी है। परमात्मा ने मनुष्य जन्म दिया है तो जीवन में समस्याओं के समाधान के लिए पूर्ण विजय आवश्यक है और यह विजय केवल विजयादशमी के दिन विशेष साधना से प्राप्त हो सकती है-

पराजय का तात्पर्य है, पीड़ा, हानि, नुकसान, बाधा, विरोध, कार्य में अपुणीता, अपमान इत्यादि, यदि कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है, तो वह आपकी पराजय है, और बार आर पराजय मिलती है, तो उत्साह भी समाप्त हो जाता है, पराजित होना अथवा न होना आप पर ही निर्भर करता है, क्योंकि आपमें स्वयं में ही कोई कमी रहती है, अथवा दोष होता है, चाहे वह दोष किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग से हो, अथवा घटदोष, पराजित होने का तात्पर्य है, आप पर कोई हादी हो रहा है, आप दब कर जी रहे हैं, और ऐसा जीवन में होता है, अपराजेय होने का तात्पर्य है, कि आपके दोष दूर हो जाय, आप अपने आपको पहिचान भरें, अपने मनकल्प के उन्नतार कार्य कर सकें, दृग्दर्श द्वारा आपको हानि भी पहुंचने का प्रयास करें, तो आपको हानि न पहुंचें, जो भी शब्द आप पर किसी भी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग करे वह उलटा रड जाय, आपको

प्रभावित करने की बजाय उलटा उसे ही हानि दे दें, तभी ते विशेषता है, जीवन का आनन्द है।

मनुष्य को यह जीवन इसलिए प्राप्त हुआ है, जैसे वह इस जीवन में पूर्णता प्राप्त करें, अपने जीवन में इन्द्रियनुष्ठ समान सभी रङ्गों को देखें, उन्हें अनुभव करें, और इन अनुभवों को ग्रहण करने के पश्चात् जीवन में प्रगति के उस स्तर पर हुए जायें, कि उसे पूर्ण मन्तुष्टि प्राप्त हो सके, जीवन इसलिए नहीं मिला है, कि आप एक लीक पर चलते जाएं, अपितु कुछ ऐसा करते रहें जिससे कि आजे बढ़ने का मार्ग निरंतर खुलता रहे, इस सफल मार्ग को, जो केवल उन्नति की ओर ले जाता है, का आधार निरचय ही कछु सहयोगी, कछु प्रेरणा प्रभु व्यक्तित्व अवश्य होते हैं, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति यह पहिचान नहीं पाता है, कि कौन उसके लिए कितना सहयोगी है, कौन तो उस उसका भला कर सकता है, उसे किसको कितना सहयोग से काम

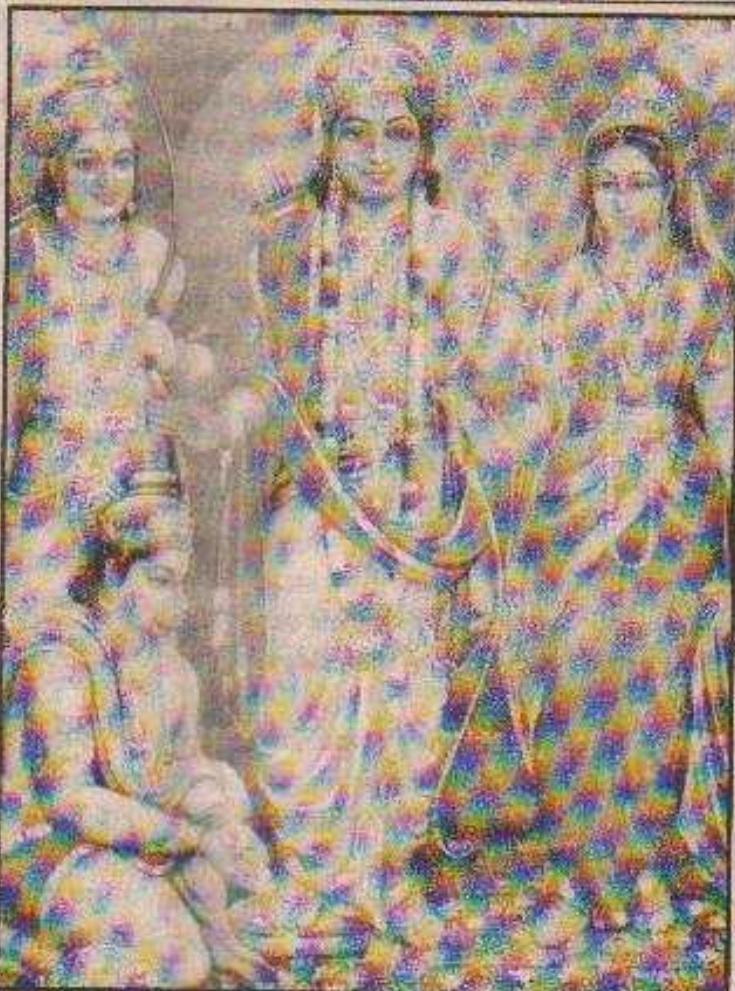
ज्ञान है, किसके प्रति पूर्ण आनंद्या में कार्य करना है, भावारण व्यक्ति नो बालहृ के बेल की तरह एक ही लोक पर चक्कर लगाना रहता है, और उसका जीवन पूरा हो जाता है, तब बुद्धाप में बड़ सोचता है, चिन्ता करता है, कि अरे, यह जीवन तो पूरा होने आ गया, कुछ कर ही नहीं पाया, मेरे साथ के लोग किन्तु आगे बढ़ गये।

यह सब ज्ञान है, यह कोई बुद्धि का चमत्कार नहीं है, यह तो केवल एक साधारण समझ है, जिसकी समय पर उचित प्रयोग नहीं सो व्यक्ति उचित की एक-एक सीढ़ी निरन्तर चढ़ता रहता है, जीवन श्रीनिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही स्थितियों संगम है, दोनों लोक पूर्णतः अलग-अलग नहीं है, कहीं न कहीं एक कूपसे भी अवश्य ही मिलते हैं, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि दोनों ही स्थितियों में सामनंस्य रखा जाये, वे व्यक्ति भौमात्यगाली होते हैं, जिन्हें अच्छे मित्र मिलते हैं, अच्छे सहयोगी मिलते हैं, और सबसे बड़ी बात उन्हें पूर्ण योग गुरु प्राप्त होते हैं, जिनके एक आशीर्वाद से ही, जिनकी कृपा से ही उनके इवय में हर समय उत्साह रहना रहता है।

नवरात्रि के नी दिवस, शक्ति के बह नी दिवस हैं, जो आपके भीतर पूर्ण आत्मविश्वास भरने में सहायक है, आपके एक-एक अणु को क्रियाशील करने में समर्थ है, और इस अस्ति का सभी उपयोग को पूर्ण क्रियाशील बना कर उचिति के विशेष मार्ग की ओर ले जाता है, लेकिन ऐसा क्यों होता है, कि प्रत्येक व्यक्तिको सफलता नहीं मिल पाती, यह दिन भर जी तोड़ परिश्रम करता है, नोकरी करता है, व्यापार करता है, लेकिन पूर्ण परिश्रम करने के बाद भी व्यापार में सफलता नहीं मिलती, जिस हिसाब से प्रति वर्ष उचिति होनी चाहिए, नहीं हो पाती है, केवल व्यापार प्रारंभ कर देने से ही भौतिक सम्पत्ति सम्पन्न नहीं है।

उचिति में बाधाएं

जब आप अपने जीवन में कुछ करने की सोच लेते हैं, तो उस देखते आपको कार्य तो करना पड़ेगा, केवल रवान देखन से कार्य नहीं होता, लेकिन यह भी आवश्यक है, कि आप



जितना परिश्रम करें, उस परिश्रम का उतना फल अवश्य पाल हो, कार्य के मार्ग में निरन्तर ब्राह्मण क्षेत्री आती है, इस सम्बन्ध में विवेचन अत्यन्त आवश्यक है, योगनालूक तरीके से कार्य करने के उपरांत भी आधिक दृष्टि से लाभ नहीं हो जाता है, लाभ होता है, तो ऐसा रुक जाता है, दूसरे आप से उधार लेने हैं, तो आपस इन समय पर नहीं आ पाना है, अथवा आप अपने कार्य के लिए अथवा व्यापार के लिए किसी से आधिक रहयोग अथवा उधार लेने जाने हैं, तो आपनो इन नहीं मिल पाता है, जबकि आप में बुद्धि, चानुर्ग, कार्य क्षमता पूर्ण रूप से है, इन सब के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य रहता है।

आप में कुछ भयनी बाधाओं द्वा भयने भाग्य का दोष मान कर शान्त हो कर बेट जाते हैं, कुछ लोग यहों का दोष यह चक्र, दधा मान कर शान्त हो जाते हैं, और और थीरे उचिति की भावना मरही जाती है, जबकि ऐसा विल्कुल ही नहीं होना चाहिए, क्योंकि भाग्य को बदला नहीं जा सकता क्यों

ग्रह दोषों को मिटाया नहीं जा सकता है, क्योंकि विरुद्ध किये गये तांत्रिक प्रयोगों को समाप्त नहीं किया जा सकता है, ये सब सम्भव हैं, इसके लिए चाहें जिस कार्य को अपनाना पड़े, चाहे जितनी साधना करनी पड़े, अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

तन्त्र साधना-मिथि साधना

तन्त्र तथा मंत्र का संसार अल्पतं विशाल है, और हमरे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने इन सभी स्थितियों को देख कर, भोग कर जापने अनुभव के आधार पर, जो ज्ञान गृन्थों में दिया है, वह अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक एवं सिद्ध है, उन साधनाओं को संपन्न करने के लिए हृदय में पूर्ण आस्था आवश्यक है, वहीं गुरु का पूर्ण आशीर्वाद एवं निर्देश भी, यदि आपको साधना का तत्त्व प्राप्त है और आप अपने कर्म पथ पर अग्रसर हैं, तो उन्नति अवश्य प्राप्त होगी, आपका जीवन साधारण जीवन से अलग होगा, इस हेतु यह आवश्यक है, कि आपके जीवन में बाधाएं नहीं रहें, आप जो भी कार्य करना चाहें वह आपके एक ही बार के प्रयास से पूर्ण हो जाय, जीवन में विजय श्री प्राप्त हो।

प्रत्येक साधना का एक विशेष समय अवश्य होता है, और उस समय साधना सम्पन्न करने से सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है, क्योंकि उस समय ग्रहों की गति, वायुगण्डल में वेतना उसी प्रकार की होती है, जो कि आपके मन्त्रों के जाप के माध्यम से, आपकी साधना के माध्यम से होती है, और आपका कार्य सफल होता है।

विजय मिथि

जीवन में अपराजित रहने का तात्पर्य है, प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना, अपनी क्षमता सामर्थ्य के अनुसार जो काम हाथ में ले, उसमें लक्ष्य सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाय, शास्त्रों के अनुसार अपराजिता के छ, अर्थ है-

1. किसी भी प्रकार के शत्रु को परास्त करना, और शत्रुओं पर हावी रहना।
2. जीवन में किसी भी प्रकार का भय, बाधा, रोग, कष्ट या परेशानी न होना, सर्वथा रोग मुक्त हो कर जीवन व्यतीत करना।
3. वाद-विवाद मुकदमे इत्यादि में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करना।
4. जीवन में अपनी आजीविका के सम्बंध में आने वाली बाधाओं की शांति और कार्य सिद्धि।
5. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा से पूर्णतः बचाव और

कोई विपत्ति आये तो उसकी निवारि।

6. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपराजित रहते हुए पूर्ण आनन्द के साथ जीवन की यात्रा।

विजयादशमी एक प्रेरणा मुहूर्त सिद्धि पर्व है, जो अपने प्राणों में ऐसी शक्ति भर सकता है, कि आप स्वयं पूर्ण चैतन्यमय हो कर विजयादशील हो सकते हैं, विजयादशमी विजय को आहान करने का दिवस है, जिसमें आपको अपने प्रत्येक कार्य में विजय ही प्राप्त हो, शत्रुओं पर आपका ऐसा तेजस्वी प्रभाव पड़े, कि वे आपके सामने झुके ही रहें, परं वर्ष में स्वास्थ्य, शत्रु बाधा निवारण तांत्रिक दोष निवारण देता, इस विकास को की गई साधना अल्पतं शोध फल कारब रहती है।

विजयादशमी के दिन की जाने वाली कुछ विशेष साधनाओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है, आप अपने अनुसार कोई एक प्रयोग अवश्य सभी प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, इन्हें डेतु केवल आवश्यकता इस बात की है, कि आप में साधना के प्रति दृढ़ निश्चय हो, व पूर्ण आत्मविज्ञान के साथ सम्पन्न करें।

विजय प्रदाता भैरव साधना

जब कार्य में निन्तर बाधाएं आ रही हैं, साथ ही साथ शत्रु आप पर जरूरत से ज्यादा हावी हो रहे हैं, अर्थात् आप कार्य को जिस रूप से सम्पन्न करना चाहते हैं, उस रूप में सम्पन्न नहीं कर पा रहे हैं, अथवा छोटी-छोटी बातों पर आपके शत्रु बन जाते हैं, तो उन शत्रुओं से सम्बंधित जी बाधा, मानसिक क्लेश प्राप्त होता है, उसके निवारण हेतु विजयादशमी की रात्रि को यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए। यह भैरव का एक विशेष प्रयोग है, जो कि विशेष तन्त्र ग्रन्थों में ही दी दिया गया है, इस हेतु आप कुछ विशेष सामग्री व्यवस्था पहले से ही अवश्य कर लें, क्योंकि साधना में बठन के पश्चात उठ नहीं सकते हैं।

इस साधना में आठ मिठ्ठी के दीपक, मिन्नूर, कागल, चावल, पूष्प, मीली, काला धागा, 'चार भैरवचक', 'विजय माला' काला वस्त्र, धूप, दीप, अगरबत्ती, भरसों, 'अष्टशन्ध' के अतिरिक्त अन्य सामान्य पूजा सामग्री आवश्यक हैं, या साधना शान्त मन से, धैर्य चित्त से, प्रबल आत्म विश्वास से साथ सम्पन्न करनी चाहिए, देवता भी उसी साधक पर प्रसन्न होते हैं, जो कि अपने आप में पूर्ण विश्वास सख्ते हैं।

सर्वप्रथम स्नान कर, शुद्ध कर आरण कर अपने सामलकड़ी के तख्ते पर काला वस्त्र विला कर बीचों-बी

‘भैरवसूर्ति’ स्थापित करें, अथवा ‘शालीमाम की मृतिं’ में भैरव का आलान कर स्थापित करें, इस पर स्त्रियूर, चावल, पूष्प, अट्टगन्ध आदि चढ़ाएं, चारों कोनों में दो दीपकों को जोड़ कर काले ढोरे से बन्त कर दें, और उसमें सरसों तथा एक-एक नूपारी अवश्य रखें, इनके पास ही बाहर प्रत्येक मिठ्ठी के दीपक के पास भैरव चक्र स्थापित करें, अब सारी तीयारी हो जाने के पश्चात दीपक जलाएं, एक बार दीपक जलाने के पश्चात इस साधना में स्थान से उठना चाहिए है।

सर्वप्रथम गुरु ध्यान कर गणेश पूजा करें, इसके पश्चात भैरव पूजा कर अपनी आधाओं के शमन एवं नाश देन प्रार्थना करें, यदि भैरव का चित्र प्राप्त हो सके, तो उसे भी अवश्य स्थापित करें, एवं बांया घृतना जग्नीन पर टिकायें, तथा दाया भैरव जग्नीन पर रखते हुए घोड़े बैठें, और इस बत्ते से तथा इस विजय माला से नीचे विद्ये गये बीज मंत्र की पांच मालाएं नपकरें, इस पूरे समय में दीपक निरंतर जलते रहने चाहिए।

बीज मंत्र

॥ॐ भू द्वी कर्णी शशुहन्नाये भैरवाय फट् ॐ॥

अन्तिम माला के नप के समय अपने पास एक बर्तन में सरसों ले कर प्रत्येक मन्त्र के जप के समय प्रत्येक दिशा में भैरवतर सरसों फेंकते रहें, इससे सभी दिशाओं में भैरव जाश्न हो कर किसी भी दिशा में स्थित शत्रु तथा कार्य बाधा नाश कर देते हैं, जैसा कि ऊपर लिखा है, यह साधना शत्रि १० बजे के बाद ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना के पश्चात साधक उसी स्थान पर सो जायें, और दीपक की रात भर अवश्य जलता रहने दें, और प्रातः उठ कर चारों मिठ्ठी के दीपक जो कि बन्द हैं, तथा उनमें सरसों हैं, तथा भैरव चक्र किसी चौराहे पर ले जा कर रख दें, रखने के पश्चात पुनः मुड़ कर उस तरफ न देखें।

यह साधना लिख हो जाने के पश्चात साधक के कार्य में बाधाएं एकदम धूर होनी प्रारंभ हो जाती हैं तथा शत्रुओं की बुद्धि, बल क्षीण होने लगती है।

साधना सामग्री- 390/-

दरिद्रता निवारक लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी से सम्बंधित साधनाओं की विशेष पुस्तक में इस प्रयोग का विवरण आया है, वैसे तो यह साधना कार्तिक मास में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, लेकिन विजय

दशमी को प्रयोग करने से विशेष सफलता प्राप्त होती है, इस रात्रि में आधी रात के पश्चात ही वह साधना प्रारंभ करनी चाहिए, विजया दशमी के दिन आधी रात को साधक लाल धोती या साधिका हो, तो लाल साड़ी पहन कर बैठ जाए, और सामने एक बड़ा सा तेल का दीपक लगा दें।

इसके बाद एक कासे की थाली या कासे की प्लेट की दीपक की लौ के ऊपर थोड़ी बैर रखने पर उस थाली में कालिख भी लग जाएगी।

फिर किसी तिनके से उस कालिख में ही भगवती लक्ष्मी का चित्र बनावं, यदि आप अच्छे चित्रकार न हों, तो इसमें चिन्ना करने की जरूरत नहीं है, एक स्त्रीकी आकृति बनालो, जो लक्ष्मी जैसी हो, फिर इस थाली को अपने सामने रख दें, और उस लक्ष्मी के चित्र के चारों ओर ‘११ कमल के बीज’ रख दें।

इसके बाद उस लक्ष्मी के चित्र और उस कमल बीजों की पूजा करें, उसके सामने घोग लगायें, और निष्ठ मन्त्र की २१ माला मंत्र जप करें, इस मन्त्र जप में ‘मूर्णे की माला’ का ही प्रयोग किया जाता है।

मंत्र

॥ॐ अहि यं लक्ष्मी श्रं अहि ॐ॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाए, तब चढ़ाए हुए प्रसाद को थोड़ा सा शृणु पर ले, और रात्रि को बर्ही सोयें, दीपक रात भर जलता रहना चाहिए।

सुबह उठ कर कमल बीजों को अपने घर में गाड़ दें, तो आगे के जीवन भर के लिए लक्ष्मी का वास बना रहता है, और साधक अपने जीवन में निरंतर उन्नति करता रहता है।

यदि साधक चाहे तो लाल बख्ल में उन बस्तुओं को बांध कर घर के किसी कोने में रख दें, तो वह भी गाड़ा हुआ माना जाता है, यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और चमत्कारिक है, यदि साधक कार्तिक मास में इस प्रयोग को करें, तो और ज्यादा अनुकूलता प्राप्त हो सकती है।

शास्त्रों में लिखा गया है, कि विजय दशमी के दिन शत्रु मारण प्रयोग, स्तम्भन प्रयोग, वशीकरण प्रयोग आदि सम्पन्न करने से पूर्ण सफलता तथा विजय प्राप्त होती है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि साधना पूर्ण विधि-विधान सहित शुद्ध सामग्री के साथ सम्पन्न की जाए।

साधना सामग्री- 210/-

आश्विन मास संवत् २०५८

कक्षी की रात्रि

भेद

कार्य की अधिकता के भानदिक नवाव अवश्य रुग्णा लेकिन कार्य सफल भी हो। उसमें उन्नता अवश्य अपेक्षा अपेक्षा लिखाएँ। एवं मन स्थिति के संतुलित बनाएँ। व्याजारी को किए शेष समय है। नवा कार्य भी पराग कर सकते हैं। इन्होंके लिए परिवर्तन सम्भान देवृति होती लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से धोई प्रतिशुद्धना। इन्होंके विद्यार्थी वर्ष के लिए व्यस्तता का समय है। शुक्र की स्थिति के अन्य शोक, भीज देवृति द्वारा अधिक होगा। परिवर्तन ने जोल बढ़ाए। साथ ही नीकरी पेड़ लोगों के लिए जाप व्यस्तता बढ़ जायेगी। इस मास का 'वाणपति साधना' अवश्य सम्भव करें। इस मास को शुभ नियमित ५, १५, २५, ३५ है।

शुष्ठ

इन आष्टकों नाशी औं दो स्थिति द्वारा कारण अनुप्रयोग दिताप होंगी। ऐसा जलना कि धन और न अनुप्रयोग चार ही प्रातः से रहे हैं। लेकिन विपरीत स्थिति में भी धौपरात्र का कार्य करें। यहांने १५ दिन ही थोड़े प्रतिकूल है। अपेक्षा के १५ दिनों में स्थिति अपेक्षा आप सुखजीवी विद्यार्थी अपेक्षा जाप में व्यवस्था रखें। व्याजारी जो के लिए कुछ रात्रीय नवालियों का सजोता है उसने ज्यव वर्ष भी न्युनन रखें। वज्ञे ऐसा न हो कि आपका कृता लेता पड़ जाए। परिवर्तन ने आप के लहरेज वर्ष सेम्प नकीरी पेड़ा व्याकुलियों के लिए कालीलय में अस्तर की विद्युति हो जायेगी। इस मास आप 'वाणपात्रामुखी नाशना' अवश्य करें। इस मास को शुभ नियमित ६, १५, २५ और २० है।

मिथुन

स्थिति नवी वान्नाप धना लेना आप का अवश्यक हो। जनने वाले व्यापक व्यवहार करने हैं। लेकिन उस दोनों द्वारा अपने नहीं रहता। आपकी योजना सफल हो जाती है। उठि आप उसे कार्य रूप में परिणाम लें। परिवर्तन ने वनाव तो बना लेना लेकिन उस कार्य अपने नहीं होता। इस नाप की बायीर रखी योजना या तीन साल के बायर फल देती होती है। इस मास शुक्र और शुक्र दोनों आपके सामों में विद्युत है उस कारण आप कार्य करने में सफलता लिनेगी तो कुछ कार्य में अस्तर जायेगा। विद्यार्थी योगे के लिए यह ज्येष्ठन नाश है। इनपर संगति के फल साधारण रहे। नीकरी जोड़ा व्यक्तियों के लिए पर जो कार्य अवश्य नेविन लक्ष्यसाधन-नाय नवालियों में हो जाता है। इन्होंके लिए यह अवश्य साधन्य है। परिवर्तन में व्यवस्था के विद्युति सेवना। योगी। इस मास को शुभ नियमित १०, १५, २५, ३५ है।

करकी

विद्युत हो आप मिथुने शुभ हो वेवाली में आपके प्रेय नहीं हैं। अपी आपकी स्थिति धोई अनुकूल है इस कारण नाप आपके करवा उठने के लिए चारों ओर गड़ा रहे हैं। निवं को परायन की अपनाना विकार करें,

शुक्र इस मास का प्राप्त होती है, स्वर्णमें कान्तिक वृद्धि होती, नीकरी जो निंग वृण रखे। व्याजारी दों के लिए उपर्युक्त वर्ष में चलते हुए उपर्युक्त को शाति से प्रवर्तन का समय है। अच्छी कई जाप कार्य नवाल नहीं करें तबा स्त्री वर्ष के प्रति अपने अकलिया में नियंत्रण रखे। अन्यथा व्यवस्था लेवार्थी हो सकती है। नीकरी पेड़ा व्याकुल व्यापक व्यापक में उत्पाद प्राप्त बर्दगे तथा उन्हें अधिकारियों से सम्पर्क भी प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ष की अन्युद्ध रुद्धा उसे लगाना कि उसके मिश्र करने हो रही है पर वह स्थिति अस्थायी है। इस मास आप 'दुर्मी शक्ति साधना' अवश्य सम्भव करें। जग्ना शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दें। इस मास की शुभ नियमित है - १, ३, १०, १५, २५, ३५।

तिंहु

(मा, मी, पू, ते, मी, ठा, ठी, ढा, ठा)

किसी व्यक्ति के बातें में आप में जो धारणा बना ली है उसी पर आप टिके रहने हैं। यह ठीक है कि आप शुद्ध नियंत्रण है लेकिन दूसरों के विद्युतों और गान्धा जी का सम्मन करना भी आपका कर्तव्य है। सबकी घटने और उनके बाद नियंत्रण हो। नियंत्रण लेने में जलवाया जी न जरूर। ये माह आपके देह की पीड़ियां का काल है। व्याजारी वर्ष के लिए उत्पाद बनक सम्भार अवश्य प्राप्त होगा लेकिन नया कार्य प्राप्त भ करने का उपर्युक्त नहीं आवश्य है। उत्पाद व्याकुल सुकूलों में उत्पादन बढ़ रहा है। नीकरी पेड़ा व्याकुल शनि नूप से कार्य करने वर्ष कायदालय की छोटी मोटी परेश नियंत्रण से विचलित न हो। विद्युतों के लिए स्वास्थ्य की दृष्टि से योद्धा प्रतिकूल समय अवश्य है, लेकिन इसी ग्राद अन्तर्वक्तु दृष्टि से प्राप्त हो जाएगी। आपके नियंत्रण कार्य परिवर्तन का दृष्टा आ रहा है। विद्यार्थी देहीरहने। इस मास आप नियमित लोगों 'ताणा स्नोत्र' का पाठ अवश्य करने रहे। इस मास की शुभ नियमित ३, ६, १२, २२, ३२ है।

ठठन्दा

(ठी, पा, मी, पू, य, य, ठ, वे, यी)

जुध या जी गोड़ी में नियंत्रण है जीर वह आपको वृद्धि से कार्य करने के लिए विद्युत अवश्य करेगा। जीवन में भ्रमनारं डोंगा आहिए लेकिन विद्युत वर्ष में लिया गया नियंत्रण ही आपके लिए युवा वृद्धि व्यावहार जीवनाओं में बहकर ज्यव जा सकने नहीं करें। इस मास के अक्षयसंक्रमक सम्भार अवश्य प्राप्त होंगे लेकिन आपके लिए शुद्ध ही होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठान वृद्धि होती कार्यक्रम आपके परिवर्तन और व्यापार के लिए बहुत कार्य किया है। छोटी-छोटी बालों पर विचार जरूर अपने आपको जरूर नहीं करें। वहां बनने वाली स्थिति विशेष सावधानी रहें। शुद्ध यज्ञा का योज भी इस वर्ष बन रहा है। नीकरी देहीरहने के लिए नो यह अवश्य शुद्ध अवश्य लेकर आया है। इसी से बद्रीनाली सम्भव है। आप 'विव लाशना' अवश्य सम्भव करें। इस मास की शुभ नियमित - १, ३, १०, १५, २२ और २० है।

तुला

(ता, गी, रु, ता, ती, तु, ते)

कठु मेषनात के दाद जो परिवर्तन प्राप्त होता है वही स्थायी है।

१८	अवर्धि, अनुत्त, रघि, पुष्य, द्विपुष्यकर, शिंद्वे योग
२५	सिंहमध्यर-सिंहमध्योग
१९-२६	सिंहमध्यर-सवर्धि सिंह योग
२७	सिंहमध्यर-विपुष्यकर योग
३६	अवकट्टुवर-सवर्धि योग
२४	अवकट्टुवर-सवर्धि योग
११	अवकट्टुवर-अनुप्त योग
११	अवकट्टुवर-गुण पृथ्वी योग

जल कार्य करे और कल ही फैल प्राप्त हो जाए तेज संभव योग लिंगिंडा होता है। इसका है यह आपके कार्य के लिए अनुकूल है? इसको कोई वज्र में बनने के साथ-साथ अपने न्यायालय को भी वज्र में रखें अपनी उकिल को जर्ह के कार्यों में खच नहीं होने दें। निरा, तालव्य, गोक, मीन ज्योतिर्याज जल कार्य में जट जाए। व्यापारिक वज्र के लिए स्पृह योग लिंगिंडा अनुकूल नहीं है। ग्रहकारी पश्च की ओर से थोड़ी प्रतिकूल स्थिति बन सकती है। जलम जले। जल नव मिह बनाये। नींवीं पेशा वर्षी किंवदं यह समय विशेष अनुकूल है। जल में स्वस्मान प्राप्त होगा। महिला जल यहि इस समय कोड जारी प्राप्त अनुकूल होता है। उपकार फल उहाँ अवश्यकी प्राप्त होता। उद्योगों की आवश्यकता इस मास 'शुक्र साधना' अवश्य करें। उमा मास की शुभ तिथियाँ १३, १५, २१, २४, २९, ३१।

तृष्णित्यक्त (तो, ला, की, लू, ले, लौ, या, दी, दू)

आत्म विश्वास ही आपके नींवन का साधन है। और इसे के कारण आपने जीवन में अब नक्ष सफलता प्राप्त की है। आपके ग्रन्थविज्ञान की नींवीं का यह स्पर्श है। विश्वास विश्वासी में भी जो वाजनार अपने पूर्व में बनायी है उन पर कार्य करने शहरी आपको सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। जिसी नये महायान के घर में आपने पैशिवार में परमत्वाके वातावरण बनाया। व्यापारी वर्षी नये कार्य लाह के जल में प्राप्त कर सकता है। एक दूसरे में तो सफलता नहीं मिलेगी। नींवन आपे नक्ष-नक्ष अवश्य प्राप्त होती नींवीं पेशा व्यक्तियों के लिए यह उचित ग्रेजा कि वे आवालीय का नगर वर्ष में न लाएं और दूर का नगर कार्यक्रम है तो न जाएं। अधिकारियों रे अनुलिङ्ग संबंध बनाये रखें। उमा मास जाप 'प्रत्ययीरा वशीकरण साधना' अवश्य करें। शुभ तिथियाँ १२, १३, २१, २४, ३१ और २६ हैं।

शत्रु (ये, यो, आ, झी, छा, छा, छो)

जो यी करी आप करना चाहत है, यंगम व नुक्कुल के साथ में अनियंत्रित हुए करें। नाईवेदी के माध्यालंसे संसर्वना बनाना आपलेक होगा। अपने वर्तनान कार्य के प्रति अनुकूलि का भाव उपर्युक्त दाने में कार्य परिवर्तन व ग्रहन विश्वास के विचार इह दोष व ऐसे नोकरी निर्भन होंगे। बदलावी शुक्लम आज्ञे, पक्ष में लेंगे व योग विकार का निवारण होगा। भवन निर्माण का योग बनेगा। नींवीं यात्रा और को लेवर जल जे उन्नत होगा। किसी से दूर्घट का विकार न करें। नींवीं स्थिति आप पर संवेद के माध्य और शुक्लाने का उत्तम करें। इस मास का प्रभावला सुखी साधना' समर्प्त करें। उमी भाट का अनुकूल तिथियाँ ३८, ४५, २०, २२, २० हैं।

मरुष्ट (झो, जर, जी, यू, रु, यो, या, जी)

इस भाष में आपके स्वामने कुछ निति विश्वासिति अपने से मकारी हैं। स्वयं विनियक निर्गत लेने में असमर्प्त रहने पर विश्वासी जाती और शुभचिन्तकों का सहयोग लेना भी आवश्यक होगा। जीवन साथी रे वैधानिका अनाप रखें। इस मतांश की विश्वास में संयम रखें। कारोबारी स्थिति में विस्तार होगा। किन्तु अनुवर्धों पर उन्न विचार करने के पश्चात्

ज्योतिश की दृष्टि से आश्विन २००१

इन मास के दृष्टि में राजनीतिक दृष्टि से परिवर्तनकारी समय रहेगा। विश्वासकर उत्तर प्रवेश में नये समीकरण बनेगे। आर्थिक दृष्टि से स्थिरता रहेगी और नियांत में भी विशेष बुलिं होगी। पड़ोसी देशों से सबधों में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। आनंदवाद में शोषी कमी अवश्य रहेगी। श्रीलक्ष्मी में भारी उथल-उथल बनेगी।

ही कोई निषेध नहीं। संतान पक्ष की ओर से जनकूल पर्व प्रसन्नतादात्यक समाचार प्राप्त होता। नागलिंग कार्यों में असन्तान रहेगी। किसी भी वार विश्वास की स्थिति में २००१ से कम हो। इस मास अप 'शुक्रान साधना' समर्प्त करें। इस मास का शुभ तिथियाँ १३, १५, २१, २४, २९, ३१ हैं।

कृष्ण (बू, बो, लो, सा, जी, यू, से, सी, का)

यह मास आपके नियन्त्रित अधिकारीयों द्वितीय होगा। साड़ोंदारी वे सम्बोधित कार्यों में आपको असफलता प्राप्त होगी। जिसी से भी मनव की बाजान करें। नींवनार्थी रे नन्दिन रहेगा, संतान की ओर लापरवाही न बरतें। नगन या कारे बाय परिवर्तन का लोग बन जाकर है, जैसी के बहकवे में आये, शुभ वर्षी भी आपके विलाप संक्रिय है, अन विलासधार से आवधान रहें। विवाह के विभिन्न से बचें। इस नाम से दूरा अनुकूलता प्राप्त करने के लिए 'मातृगी साधना' समर्प्त करना श्रेष्ठ रहेगा। इस मास आपकी अनुकूल तिथियाँ १२, १६, २३, २५ हैं।

मीठा (दी, दू, थ, ढा, दे, दो, दा, दी)

दृष्टि की दृष्टि आपकी गृहीं पर पढ़ रही है और हमीं कारण सामाजिक नामन अवश्य रहेगा। नींवन इस वर्ष अपने, जो भी ऊके हुए कार्य या पूरे से जापें तथा नींवीं जापीं पेशा वर्षी के लिए समय नामान्य रहेगा तथा वे रुप करम तुक फूल कर रहें। अधिकारी जांत कार्य से प्रसन्न रहें। इन्द्रिय विनाशी में नामान बनावर जाने धार्मिक कार्यों को नक्ष विकार करें। जैश व्यापार व्याक्तियों के लिए यह समय बहुत ही अच्छा है। इस वर्ष में कोई से संस्कृता मिलेगी। नान्दिन रहेगी। इस वर्ष आप 'माडाकली साधना' समर्प्त करें। इस मास आपकी अनुकूल तिथियाँ ५, १३, २१, २४, २८, ३० हैं।

इस मास के द्रव, पर्व एवं त्यौहार

- १७ नितान्तर- आश्विन कृष्ण पक्ष १० विधि ३- सोमवार समवर्ती आपवास, विवितन शार्दूलनियत लेना चाहे।
- १८ सिंहमध्यर- आश्विन शुक्रल पक्ष १० विधि ०३- बृंदलवार मल मास प्राप्त
- १९ विश्वास- आश्विन शुक्रल पक्ष १० विधि ०१- बृहन्पतितार पूर्णिमातम एकादशी
- २० अवकट्टुवर- दिनीय अश्विन शुक्रल पक्ष, विधि १५ दिन मंगलवार गल नाशपत्र इन पूर्णिमाएँ
- २१ अवकट्टुवर- दिनीय आश्विन कृष्ण पक्ष, विधि ०५, अनिवार जी गणेश अवर्धि
- २२ अवकट्टुवर- दिनीय आश्विन कृष्ण पक्ष, विधि ११ अनिवार एकादशी
- २३ अवकट्टुवर- आश्विन शुक्रल पक्ष, विधि ३० मंगलवार- आपवास
- २४ अवकट्टुवर- आश्विन शुक्रल पक्ष, विधि ०१ वृषभार- यदृश्वापन नवरात्री; आरंध
- २५ अवकट्टुवर- आश्विन शुक्रल पक्ष, विधि ०८ वृषभार- जी दुर्गा अष्टमी
- २६ अवकट्टुवर- आश्विन शुक्रल पक्ष, विधि १० शुक्रवार विनष्टवर्षामी

सामाजिक

सामाजिक

साधक पाठक तथा अर्वजन सामाजिक के लिए समय का वह रूप बहुं प्रस्तुत है।
जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उत्तिका कारण होता है तथा जिनके जनकर आप स्वयं
उपने लिए उत्तिका मार्ग प्रशस्त कर लकते हैं।
जीवन की अद्वारणी में समय को प्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया जाया है - जीवन
के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार ये सम्बन्धित हो,
नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो इत्यता
इन्ही कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस प्रेष्ठतम समय का
उपयोग कर लकते हैं और उपलब्ध का प्रतिशत 99.9% आपके भाष्य
में छोड़ते हो जाते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.१४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (७ १४ २१ २८ अक्टूबर)	दिन ७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से २.०० तक
सोमवार (१ ८ १५ २२ २९ अक्टूबर)	दिन ६.०० से १०.४८ तक १.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६
मंगलवार (२ ९ १६ २३ ३० अक्टूबर)	दिन ६.०० से ७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६
बुधवार (३ १० १७ २४ ३१ अक्टूबर)	दिन ६.४८ से ११.३६ तक ४.४८ से १०.४८ तक २.०० से ४.२४ तक
गुरुवार (४ ११ १८ २५ अक्टूबर)	दिन ६.०० से ८.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार (५ १२ १९ २६ अक्टूबर)	दिन ९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक २.०० से ८.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १.१२ से २.०० तक
शनिवार (६ १३ २० २७ अक्टूबर)	दिन १०.४८ से २.०० तक ५.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ६.०० तक



‘ज्यैतस्मृति’ २००१ मत्र-तत्त्व-व्यवहार विज्ञान ‘६२’

दंड दामन की विषया हमें बिहु के कहाँ

किसी भी कार्य को प्राप्ति करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि वह कार्य अपना होगा या नहीं, अपना होगी या नहीं, कामाएं तो उपरिकाल नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्राप्ति किस प्रकार होगा, दिन की समाप्ति पर वह त्वयं को तजागरण कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समझ प्रसुत हैं, जो वहांगिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित शब्दों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रसुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

उच्चार

1. प्रातः काल घर से बाहर जाने समय किसी स्थान पर गाय अथवा श्वान को रोटी डाले।
2. पूर्णमासी द्वत का पालन करें।
3. पुरुषोत्तम मास के प्रद्यम दिन वान का संकल्प अवश्य करें।
4. प्रातः काल गुरु पूजन कर निखिल स्तवन के 11 श्लोक अवश्य पढ़ें।
5. घर से बाहर जाने समय पहले दाइना पेर बाहर रखें।
6. भगवान गणेश की शिरो के दिन गणपति का विशेष मन्त्र
 - ‘ॐ श्री हौ कली ज्ञो गं गणपत्ये वशवाय नमः’ मन्त्र की एक माला का जप अवश्य करें।
7. आज कोई विशेष साधना का संकल्प लें।
8. ‘ॐ ह्री नू सः’ मन्त्र का उच्चारण कर भगवान शिव पर शिल्प पत्र बढ़ायें।
9. हनुमान मंदिर में जाकर हनुमान मूर्ति पर सिद्धू अवश्य चढ़ायें।
10. श्रीराम गुटिका अपनी जेव में दिन भर अवश्य रखें।
11. गुरु मंत्र के साथ एक माला देनाम मंत्र का जप अवश्य करें।
12. प्रातः उठकर थूप, अक्षत और जल का अधृत थूप भगवान को अवश्य अर्पण करें।
13. पुराणोच्चारण एक दशी के दिन विष्णु प्रशवन का मन्त्र ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय’ का जप अवश्य करें।
14. घर से बाहर निफलकर काली गाय के सिर पर हाथ अवश्य करें।
15. श्री सुखस का पाठ अवश्य सम्पन्न करें।
16. अमावस्या होने के कारण ब्रजरंग बण का पाठ अवश्य करें।
17. नवरात्री के प्रथम दिन घट स्थापन अवश्य करें।
18. आज दिन में भगवती दुर्गा को भोग लगाकर अवश्य नेवच गहना करें।
19. घर से बाहर निफलते समय 5 बाली मिठां भग्ने सिर पर घुमा कर दक्षिणा दिशा में फेंक दें।
20. शनि का वान, तिल, तेल अथवा कोई कारी वस्तु से अवश्य करें।
21. गुरु जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पूर्ण विष्णि-विभान महिला गुरु पूजन सम्पन्न करें।
22. निम्न मंत्र का 11 बार पाठ अवश्य करें। ॐ क्री क्री क्री हं हं ही ही दक्षिण कालिके स्वाहा।
23. परिवार के किसी सदस्य के लिए उपहार अवश्य लाएं।
24. ‘तु दग्धायि नमः’ मन्त्र का एक माला जप अवश्य करें।
25. कुवारी कल्याओं को भोजन कराएं अथवा दुर्गा महिला अवश्य जाएं।
26. गुबह उठने ही दोनों हाथों को मिलाकर निम्न मंत्र बोलें।
कराये वस्ते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्यती।
कर पृष्ठे लिखतो ब्रह्मा प्रभाते कर दग्धानम् ॥
27. भगवान गणपति का आवाहन कर उन्हें दुर्गा अर्पित करें।
28. निम्न मंत्र जप करें
ॐ महालक्ष्मये च विद्महं विष्णुपत्नी।
च धीमहिं तजो लक्ष्मी प्रचोदयत् ॥
29. धूमावती गुटिका (न्यौछापर ज्ञा-सूर्य) अपने परिवार के सब सदस्यों के सिर पर धूम कर निजेन स्थान में फेंक दें।
30. निखिल पंचरत्न का पाठ अवश्य करें।
31. लुधियार के दिन ‘ॐ ऐ स्त्री श्री दुर्गाय नमः’ का जप अवश्य करें।

उपनिषद् तो ज्ञान सागर है सृष्टि यात्रा क्रम

ऐतरेय उपनिषद्

अब तक अपने ईशावास्त्रोपनिषद्, केन उपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रथा उपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूर्योपनिषद्, तेतिरीयोपनिषद् का अध्ययन पत्रिका के पूर्व अंकों से पढ़ा है। इस अंक में ऐतरेय उपनिषद् का चारचालक विवेचन स्पष्ट किया जा रहा है।

इस उपनिषद् में सूर्यी की रचना का क्रम, जीवन का रहस्य, प्राणी का विकास, मनुष्य में देवताओं की स्थिति आदि का विषय विवेचन है। ऐतरेय उपनिषद् में तीन खण्ड हैं। प्रथम अध्याय में तीन खण्ड तथा द्वितीय और तृतीय अध्याय में एक-एक खण्ड हैं।

मानव शाकीक : देवताओं का निवास

ऐतरेय उपनिषद प्रथम अध्याय प्रथम स्तुष्ट

आत्मा व हृदयेक एवाश आसीचान्यत्किञ्चन
मिष्ठूं स ईक्षत लोकान् सृजा इति ॥१॥

यऽमौल्लोकान् सृजत । अम्भो
मरीचीर्मरमापोऽदोऽम्भः;
परेण दिवं द्यौ : प्रतिष्ठाऽन्तरिक्षं मरीचयः ।
पृथिवी मरो या अथस्तात्ता आपः॥२॥

स ईक्षतेमे नु लोका लोक पातान् सृजा इति
सोऽदभ्य एवं पुरुषं समुद्धृत्यामूच्छ्यत ॥३॥

हृदय निरभिद्यत हृदयान्मनो मनसश्चन्द्रमा
नाभिनिरभिद्यत
अपानोऽपानान्मृत्युः शिश्नं निरभिद्यत
शिश्नाद्रेतो रेतस् आपः॥४॥

अर्थ प्रथम श्लोक- यह सारा जग एक मात्र परमात्मा ही सृष्टि रचना से पहले था और उस परम पुरुष परमात्मा ने उस संकल्प किया कि मैं मिथिल लोकों की रचना करूँ ।

व्याख्या- परमात्मा का प्रथम संकल्प ये ही हुआ कि इस सृष्टि में विभिन्न ग्राणी होने चाहिये जाए ही विभिन्न लोक होने चाहिये । जिस प्रकार मे प्राणी कर्म करे उसी प्रकार उन्हें कर्मकल भोग हेतु प्राप्त होना चाहिये ।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सृष्टि रचना से पहले केवल एक आग का गोला सूर्य था और उसी में से अभिनिकलकर पृथिवी लोक के साथ ही साथ अन्य लोकों का निर्माण किस प्रकार हुआ है कि विवेचन नहीं हो पाया है । उपनिषदकार स्पष्ट रूप से कहते हैं कि पृथिवी लोक के अलावा अन्य लोक भी हैं और यह परमात्मा के संकल्प से संभव हुआ है ।

अर्थ द्वितीय श्लोक- परमात्मा ने इस प्रकार अम्भ, अर्थात् द्यौ लोक और उसके उपर के लोक अनन्तरिक्ष लोक, मृत्युलोक और जल के नीचे के लोकों की रचना की । द्यौ लोक जो कि अध्यात्मन् लोक है उसके नीचे अनन्तरिक्ष लोक भू-लोक हैं, भू-लोक के नीचे यह पृथिवी है । जिससे मृत्यु लोक कहा जाता है और इस पृथिवी लोक के नीचे पाताल लोक अर्थात् जल लोक है ।

व्याख्या- परमात्मा की क्रिया में कितनी अधिक स्पष्टता है । उपनिषद और स्मृतियां के अनुसार रचने लोक के ऊपर मह, जन, तप, और सन्य लोक हैं और इन पांचों लोकों का आधार द्यू-लोक है । इन पांच लोकों को 'अभ्य' कहा जाता है । आकाश मण्डल में विश्वासी देने वाले तारा गण इत्यादी के लोक को अनन्तरिक्ष-लोक कहा गया है । इसके नीचे 'म' अर्थात् मृत्यु लोक का निर्माण हुआ है ।

मृत्यु लोक वह लोक है जिसमें प्राणी मरता है और जन्म लेता है । साथ ही अपने जीवन की क्रिया द्वारा अपर-लोक अर्थात् द्यू-लोक मह, जन, तप, सन्य लोक की प्राप्ति करता है । इसके अतिरिक्त पृथिवी के नीचे भी जल में एक लोक हैं, जिसे पाताल लोक कह सकते हैं । उसमें भी प्राणीयों का निवास है ।

अर्थ तृतीय श्लोक- परमात्मा छारा लोकों की रचना करने के पश्चात् विचार किया की इन सब लोकों के लिए लोक पाल की रचना करनी चाहिए इसी लिए जल से ही एक हिरण्यगर्भ पुरुष का निर्माण किया ।

व्याख्या- परमात्मा ने यह तो निश्चय कर लिया कि लोकों की रचना तो ही गई लेकिन इन लोकों की रक्षा के लिए लोक पाल की अवध्य रचना करने चाहिए । इसलिए जल में से पुरुष की रचना की गई । वहां जल का तात्पर्य पानी नहीं है । अपितु पंचमहाभूतों के सूक्ष्म रूप, जिससे यह रचना की गई उसे जल कहा गया है ।

और पुरुष का तात्पर्य है जिसे 'हिरण्यगर्भ' कहा गया है इस प्राकृतिक सूक्ष्मतत्वों से रचित हिरण्यगर्भ के समस्त ऊंग-उपांगों से युक्त कर मूर्तीमान बनाया गया, कई घन्यों में सृष्टि के रवेषता के रूप में प्रथम पुरुष ब्रह्म की उपति जल के भीतर कमलनाल से हुई अर्थात् प्रथम पुरुष ब्रह्म को ही कहा जा सकता है ।

ब्रह्म से ही सब लोक पाल और प्रजा को बढ़ाने वाले

प्रजापतियों की उत्पत्ती हुई लोकन हिरण्यगम्भ पुरुष को उत्पन्न कर उसे मूर्छित कर दिया गया निष्प्रकार कल्प लोकों को नपा कर पानी में मूर्छित किया जाता है, जिससे वह दृढ़ हो जाए। यह जीवन का धूख सिद्धान्त है कि किसी भी रचना को बृद्ध बनाने हेतु उसे तपाना, ठंडा करना, फिर तपाना, फिर ठंडा करना आवश्यक है, इसी लिए जीवन में जिसने धुख-सुख सभी स्थितियों अनुभव की हो वही बृद्ध और पूर्ण व्यक्तित्व बन सकता है।

आर्थ-चतुर्थ श्लोक -इस प्रकार हिरण्यगम्भ पुरुष को संकल्प रूप तप से तपाने पर हिरण्यगम्भ अंडे की तरह पृथग् और उसमें मुख्यित्र प्रकट हुआ, मुख्य से वाक् हन्दी और वाक् हन्दी से अमिन-देवता प्रकट हुए, फिर नसिका के बोनों छिद्र प्रकट हुए-

इन बोनों छिद्रों से प्राण उत्पन्न हुआ और प्राण से वायु देवता उत्पन्न हुए। तदनन्तर नेत्र बने, नेत्रों से चक्र इन्द्री अश्रीत देखने की शक्ति प्रकट हुई और इसी से सूर्य प्रकट हुए, फिर बोनों कानों के छिद्र प्रगट हुए, कानों से श्रोत हन्दी अर्थात् सुनने की शक्ति प्रगट हुई तुरी श्रोत हन्दी से दसों दिशाएँ प्रगट हुईं।

उसके पश्चात न्यक्त प्रगट हुई और न्यक्त से रोप उत्पन्न हुए, रोप से विभिन्न औषधियों साथ बनसपतियों प्रगट हुईं, तदनन्तर हृदय प्रगट हुआ और हृदय से मन उत्पन्न हुआ, मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ उसके पश्चात नाभी प्रगट हुई और नाभि से अपान-वायु अर्थात् अपान देव मृत्यु प्रगट हुए तदनन्तर

लिंग का प्रगटिकरण हुआ और उससे वीर्य और रज स्पौ जल उत्पन्न हुआ।

व्याख्या- परमात्मा की इस रचना में कितनी अधिक स्पष्टता है यह आङ्गर्य का विषय है। मनुष्य के नीवन में सर्व प्रथम वाक् इन्द्री उत्पन्न हुई और वाक् में ही अमिन देव है। अर्थात् जो मनुष्य बोलता है वह अमिन तत्व है। इसीलिए वाणी का प्रमुख स्थान है।

परम पुरुष रचना में नेत्रों के देव को सूर्य माना है। अर्थात् यह प्रकाश नेत्रों के माध्यम से ही देखा जा सकता है जहाँ नेत्र नहीं वह अन्धकार ही है। इसके पश्चात् कानों से श्रोत हन्दी

प्रगट हुई जिनके देव-दिग्ग्ज-माने गये हैं।

विभिन्न दिशाओं से हमें जो भी जानकारी प्राप्त होती है, वह कानों के माध्यम से ही वह के भोजन उत्पन्न है।

वे सारी पृथ्वी और मनुष्य का शरीर भी एक त्वचा से ढका हुआ है। वह के ऊपर रोम-देह की रक्ता करते हैं उसी प्रकार सर्वांग पृथ्वी पर बनस्पति या, औषधियों इत्यादि उगा हुई है।

मनुष्य के नीवन में हृदय प्रमुख भाग है और इदय में ही मन स्थिति त्रै मन के देवता चन्द्रमा माने जाये हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा में भी घटन बढ़त चलती

रहती है उसी प्रकार मन में भी निरतर चित्तन विचार चलते ही रहते हैं।

नाभि से अपान वायु और अपान वायु से मनुष्य देखता की उत्पत्ती मानी गई है। मलमूत्र त्याग अपान वायु के कारण ही होता है। उसके नीचे लिंग और योनि स्थित हैं और इन गुबा,

इन्द्रियों का अधिकार मृत्यु है। इस प्रकार गुडा इन्द्रियों से ही जल तत्वों के माध्यम से जीव की उत्पत्ति होती है। अर्थात् इन इन्द्रियों से ही उनका देव प्रब्रह्मपति उत्पन्न हुआ। जल ही उत्पादन शक्ति का आधार है।

इस प्रकार चार लोकों को बनाकर 'अग्निं', 'वायुं', 'आदित्यं' 'दिशाएँ', 'वनस्पतिं' 'चंद्रमा', 'मृत्युं' तथा 'जलं' इन आठ लोकपालों को ब्रह्माण्ड के आधार भूत तत्वों के विराट पुरुष ने रचना की और विराट पुरुष का सुरक्षा रूप ही इस सुष्ठु में मनुष्य और स्त्री है जो इन आठ लोक पालों से रक्षित होते हैं।

विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इन आठ लोकपालों से यहि कोई एक लोकपाल भी अपना कर्तव्य यालने करे तो मनुष्य का जीवन अधूरा हो जाता है। जीवन के लिए नेत्र शक्ति शब्द शक्ति, धारा शक्ति, मनः शक्ति, उत्पादन शक्ति, आवश्यक हैं। इन लोक पालों को अपने जीवन का अधिपति मानकर मनुष्य अपना जीवन श्रेष्ठतम् रूप से निर्वाह करता हुआ मृत्यु लोक से द्वा लोक की प्राप्ति कर सकता है।

यही ऐतिहासिक उपनिषद के प्रथम छण्ड का सार-भूत रूप है।

ऐतरेय उपनिषद प्रथम अध्याय द्वितीय छण्ड

ता एता देवता: सृष्टा अस्मिन् महत्यणवि
प्रपतंस्तमशना

यापि-पासाऽभ्यामन्वावार्जत् ता
एनमबूवन्नायतनं
प्रजानीहि यस्मिन् प्रतिष्ठता
अन्नमदामेति ॥१॥

ताभ्यो गामानयता अबूवन्न वै
नोऽयमलमिति
ताभ्याऽश्वमानयता अबूवन्न वै
नोऽयमलमिति ॥२॥

ताभ्यापुरुषानयता अबूवन् सुकृतं वतेति ।
पुरुषो वा सुकृतम् । ता अब्रवीद्यथायतनं
प्रविशतेति ॥३॥

अग्निवाञ्भूत्वा मुखं प्राविशद्वायुः प्राणो
भूत्वा नासिके
प्राविशदादित्य रचक्षुभूत्वाक्षिणी
प्राविशदिशः श्रोत्रं भूत्वा
कर्णो प्रविशन्नोषधिवनस्पतयो लोमनि भूत्वा त्वचं
प्राविशं श्रन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं
प्राविशन्मृत्युरपानो
भूत्वा नाभिं प्राविशदापो रेतो भूत्वा शिशं
प्राविशन् ॥४॥

तमाशनायापिपासे
अबूतामादाऽभ्यामधिप्रजानीहीति ।
ते अब्रवीदेतास्वेव वां देवतास्वाभजाप्येतासु
भागिन्योकरोपिति ।
तस्माद्यस्यै कस्यै च देवतायै हविर्गृह्णते ।
भागिन्या वेवास्यामशनाया पिपासे
भवतः ॥५॥

अर्थ प्रथम छलोक-परमात्मा छारा रवित ये आठों देव लोकपाल अग्निं वायु इत्यादि जब दस संसार रूपी महासमुद्र में आ पढ़े तब परमात्मा ने सभी देवताओं को भूख और प्यास से बुक्त कर दिया। इन आठों देवताओं ने परमात्मा से नियेद्धन किया कि हमारे लिये रहने के स्थान कि अवस्था भी की जाए नहुं ज्युत हो कर हम अब इत्यादि का भक्षण कर सकें।

अर्थ द्वितीय छलोक- परब्रह्म परमात्मा ने उनके रहने के लिए सब प्रथम गाय का निर्माण किया देवताओं ने उसे देखकर कहा कि यह छारे लिए पर्याप्त नहीं है तबन्तर अश्व या निर्माण किया

देवताओं ने उन्हें भी नकार दिया। इस प्रकार विभिन्न जीवों के निर्माण को बेख़कर देवता उसमें निवास का मना ही करने रहे।

अर्थ तृतीय श्लोक- इसके पश्चात परमात्मा ने मनुष्य शरीर का निर्माण किया। उसे देखकर भल देवता बोले यह अत्यंत सुन्दर रचना है। इसमें हम अवश्य ही रह सकते हैं। तब परमात्मा ने सभी लोकपाल देवताओं को कहा कि इस रचना में अपने अपने, योग्य जो स्थान उचित समझो वह स्थान ग्रहण कर शरीर में प्रविष्ट हो जाओ।

अर्थ चतुर्थ श्लोक- इस प्रकार अग्नि देवता वाक् इन्द्रीय बनकर मूरख में प्रविष्ट हो गये। वायु देवता प्राण बनकर नरसिंह के छिप्रों में प्रविष्ट हो गये। सूर्य देवता नेत्र इन्द्रीय बनकर नेत्रों में प्रविष्ट हो गये। विश्वाओं के देवता स्त्री इन्द्रीय बनकर कानों में प्रविष्ट हो गये। बीजाधि और वनस्पतियों के देवता रोम बनकर त्वचा में प्रविष्ट हो गये। चन्द्रमा मन के देवता बनकर हृदय में प्रविष्ट हो गये। मृत्यु देवता आपान वायु बनकर नाभि में प्रविष्ट हो गये। नल के शशिमानी देवता रुज और वीर्य बनकर लिंग स्थान में प्रविष्ट हो गये।

अर्थ पञ्चम श्लोक- देवताओं के साथ ही भूख और प्यास संयुक्त हुई थी और भूख और प्यास ने निवेदन किया कि हमारे लिए भी स्थान की व्यवस्था की जाए तो परमात्मा ने कहा कि मैं तुम्हें इन देवताओं का ही भग बना देता हूँ। इस लिए ये आठों देवता जो ग्रहण करेंगे उसमें तुम अपने आप भागीदार हो जाओगे।

सम्पूर्ण व्याख्या

ऐसैरीय उपनिषद के इस खण्ड में ये विशेष बातें रूपाणि की गई हैं प्रथम तो रासायन में जो कुछ भी है वह परब्रह्म परमेश्वर का ही स्वरूप है और विशाट पूरुष परमात्मा की रचना से ही संसार के सारे प्राणियों की रचना हुई है। कीट पतंगे जलधरों तथा मृगि पर रहने वाले जनवर तथा आकाश में उड़ने वाले पक्षियों की रचना भी क्रमबद्ध रूप में की गई है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी आपीबा से लेकर मन्त्र्य वर्ग, रेणने वाले प्राणी, पक्षी और अन्न में स्तनधारी प्राणी अर्थात गाय, भैंस, अश्व, हाथी इत्यादि का निर्माण हुआ और सबसे अन्त में मनुष्य नामक प्राणी जिसमें नर और मादा दोनों सम्मिलित है का निर्माण हुआ।

संसार में प्रत्येक प्राणी को एक आश्रय स्थान अवश्य चाहिए औपर वह आश्रय स्थान उसे प्राप्त हो ही जाता है। जिसकी नेसी वृत्ति होती है वह ऐसे ही स्थान पर रहता है। जैसे- महली इत्यादि जल घर प्राणी जल में रह सकते हैं। रेणने वाले प्राणी बिलों में ही रह सकते हैं। उड़ने वाले प्राणी आकाश में उड़कर ही जीवित रह सकते हैं। वनस्पतियों पेड़- पौधे भी भूमि का आधार बनाकर वृद्धि कर सकते हैं। इस व्यवस्था क्रम में कोई भग होता है तो वह प्राणी जीवित नहीं रह सकता।

सारी रचनाएँ देवताओं ने देखी लेकिन उन्हें अपने रहने लायक कोई रचना नहीं लगी। द्यारो हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार हम यब प्राणियों में प्रणियों पर दया का रूप अवश्य रखते हैं और अष्टोंग दोष में भी अहिंसा को एक योग्य माना गया है। अर्थात हमारे से जानवरों का कोई हिस्सा या इत्या की क्रिया नहीं हो।

क्योंकि सब प्राणियों में हम इश्वर का ही अंश देखते हैं उपनिषद कारों ने इस विवेचना में ये स्पष्ट किया है कि परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य ही है, जिसमें देवताओं ने भी निवास करना पसंद किया। इन आठ भादि देव, अग्नि, वायु, मातित्य, दिशाएँ, वनस्पति, चन्द्रमा, मृत्यु और जल का निवास भी मनुष्य का शरीर ही है। और सभी देवता मनुष्य के शरीर में अपना-अपना कार्य सहभागी रूप में कर रहे हैं। इनमें से किसी भी एक की स्थिति विपरीत होने पर वह में विकृति आ जाती है यदि नेत्र ज्योति समाप्त हो जाए तो संसार अंधकार में हो जाता है। चन्द्रमा की स्थिति विपरीत हो जाए तो मन में कृतिचार आने लगते हैं, अग्नितत्व समाप्त हो जाए तो वाता ग्रात हो जाती है। मृत्यु तत्व विकृत हो जाए तो, अपान वायु के माध्यम से शरीर से निकल जाता है। जल तत्व विकृत हो जाए तो मनुष्य की उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है।

इसी उपनिषद में मनुष्य को देह और देह में स्थित देवताओं के माध्यम से यह समझाने का प्रयत्न है कि देवता कहीं आकाश मण्डल में स्थित नहीं है। उन्होंने स्वयं मनुष्य की देह को चुना है। इसलिए जो व्यक्ति अपनी देह को और अपने जीवन को शुभ-कार्यों में नहीं लगाता है उसका जीवन मनुष्य जीवन नहीं होकर पशुवत्त जीवन ही है। इसलिए सदैव ये ध्यान रखो की 'यथा पिण्डे यथा ब्रह्माण्डे' 'अर्थात इस पिण्ड स्थी देह में ही यात्रा ब्रह्माण्ड समाहित है।

जीवान चार्य



यह तो किसी भी मेज के मकान हेतु आव विकित्ता विश्वान के पास अपूरक इतान है, परन्तु मंत्रों के माध्यम से विकित्ता के पाँच धारणा वह है, कि मात्र मंत्रों का उद्देश्य मनुष्य के कब रोही होता है। मन पर पड़े उपचारों को यदि मंत्र होता लिखेंगित कर लिया जाए, तो मेज रखावी रूप से शान्त हो जाते हैं।

१. दत्ता आपका भाग्य आपका साथा नहीं दे रहा है ?

किसी भी कर्द में सफलता के लिए मूलन, वो ही आधर होते हैं, एक तो कर्म और दूसरा भाग्य। मात्र भाग्य के ही मरो से बेठने वाले व्यक्ति को भी सफलता नहीं मिलती। वैवी सहायता भी उसी को प्राप्त होती है, जो पुरुषार्थी होते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि भाग्य अन्यतं क्षीण हो, तो भी व्यक्ति अथक परिश्रम करने के पश्चात भी बहुत थोड़ा ही तरक्की कर पाता है। भाग्य कोई आसामान से टपकती चीज़ नहीं होती। पितृ स्वयं व्यक्ति के ही पूर्व में किए गए संचित कर्मों के आधार पर ही निर्मित एवं फलित होता है। भाग्य दोष से ग्रस्त व्यक्ति को जीवन में प्रायः अलफलता का मुँह ही देखते रहने के लिए विश्व होता पड़ता है, अब वह हरे वह ईश्वर की मर्जी भी कह सकता है या कुछ और।

परन्तु सत्य तो यही है, कि भाग्य दोष का प्रभाव उसे भुगतना ही पड़ता है। साधना द्वारा भाग्य दोष निवारण का उपाय है। भाग्य पक्ष का सहयोग मिलने पर जब व्यक्ति किसी कार्य के लिए प्रयाप्त करता है, तो किर सफलता असन्दिग्ध नहीं रहती। तब वह किसी नौकरी के लिए आवेदन करता है, या किसी व्यापार में पूजी लगता है, तो सफल रहता है। यह

प्रयोग जापक स्वेच्छा हृषि भाग्य को जड़ देने के लिए पर्याप्त है।

इसके लिए विस्तृ मंगलवार को रानानाति कर गुरु मूर्जन सम्पन्न करें। फिर अपने सामने असत का आसन देकर 'भाग्य बाधा निवारण वश' को लेसो ताम्र भाव में स्थापित करें। फिर यत्र के मध्य में कुकुम से एक बड़ी गोल बिन्दी बनाएं। अब इस बिन्दी पर ब्राटक करके हरे १५ मिनट तक नप करें।

॥ॐ पूर्ण भाग्योदयं फूरु ऊरायामणाय ततः ॥

Om Hreem Poornna Bhaagyodayam Kuru Om
Naaraayannaay Namah

जब ऊरु से पानी आने लगे, तो ऊरु बंद कर पुनः ब्राटक करने हरे मंत्र जप प्रारंभ करें। ऐसा १५ दिन तक करना पर्याप्त है। इसके बाद यंत्र को जल में अर्पित कर दें।

साधना सामग्री-300/-

२. अपने व्यक्तित्व को निखारिए ?

व्यक्तित्व एक ऐसी विधि होनी है, जो प्रत्यक्ष व्यक्ति की एक अलग पहचान बनाती है। अपने व्यक्तित्व के द्वारा ही मनुष्य प्रशंसनीय या निन्दनीय बनता है, पृथिव अथवा समाजित बनता है। व्यक्तित्व के अनर्गत कई चीजें आती हैं—शारीरिक भी-न्द्रय, चरित्र, बौद्धिक स्तर, वार्ता शैली, स्वभाव, एवं सम्मोहक शक्ति। यृष्ण ऐसे व्यक्तित्व थे, कि जहाँ जाते सब लोग उन्होंके सम्मोहन में बंध जाते थे, ये उनके अद्वितीय

व्यक्तिसत्त्व का ही प्रभाव था, उनके सम्मोहन का ही प्रभाव था।

व्यक्तिसत्त्व के निर्माण के लिए यह निर्भर करता है, कि व्यक्ति किस बातावरण में पला बढ़ा है, मात्र पिता से उसे कैसे संस्कार प्राप्त हुए हैं, क्या शिक्षा प्राप्त हुई है आदि। कई बार दुर्बल व्यक्तिसत्त्व की बजहसे व्यक्ति को समाज में उचित सम्मान नहीं मिलता है, तब उसे वह प्रयोग करना चाहिए। इससे उसकी प्रत्येक हीन भावना तो समाप्त होती है। उसके अन्दर आत्म विश्वास की भावना विकसित होती है।

किसी मंगलवार के दिन अपने सामने एक थाली में कुकुंड से दो स्वस्त्रिक बनाएं, एक पर 'धैषज' तथा दूसरे पर 'निवला' को स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र का १५ निमट तक नित्य १ माह तक जप करें-

मंत्र

॥ॐ यं भद्राय दिव्याय हुं फट॥

Om Yam Yam Bhadraay Divyaay Hum Phat

प्रयोग समाप्ति पर सामग्री को जल में विसर्जित तथा दीपक की लौ पर बाटक करने का अभ्यास करें।

साधना सामग्री - 120/-

३. आप बहु वौष औ कारण तो पठेणाम नहीं हैं?

व्यक्ति जहां इतनी मेहनत करता है, वर-परिवार का पालन पोषण करता है, लेकिन फिर भी किसी न किसी कारण वह पर्याप्त धन नहीं कमा पाता है। उसका व्यापार ठीक से चलता नहीं, उप हो जाता है, जिस कार्य में भी वह हाथ ढालता है नुकसान ही रहता है- प्रायः इसका कारण यह एवं नक्षत्रों की वशाओं में भी छिपा होता है। कई बार तो व्यक्ति किसी परिदृष्टि आदि के बचकर मैं फेस कर कोई सत्त्वादि धारण कर लेता है, फिर भी लाभ कुछ होता नहीं है। कई बार तो ऐसा देखा गया है कि व्यक्ति लाघना से अथवा जीवन के दायित्वों से थक-हार कर निराश हो गये हैं, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद उनके जीवन में पुनर्जीवन आई है, यहां का विपरीत प्रभाव समाप्त होकर अनुकूलता प्राप्त हुई है।

प्रातः रविवार के दिन किसी पात्र में 'शण्ड' को स्थापित कर उसका कुकुंड, पुष्प, धूप, वीप व अक्षत से पूजन करें। उसके समाधि निम्न मंत्र का ३१ दिन तक नित्य ४५ निमट तक करें।

॥ऊं हुं हुं ऐ ही ही ऊफट॥

Om Hoom Hoom Ayeem Ayeim Hreem Hreem Om Phat

प्रयोग समाप्ति पर 'शण्ड' को जलमें विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट-60/-

४. किसी पर भी दिव्य प्राप्त करनी ही है, तो... सम्मोहन का उपयोग करिये?

सम्मोहन का अर्थ है- लवय में इतना आकर्षण उत्पन्न हो जाय, जिससे सामने खड़ा व्यक्ति स्वतः गोहित हो जाय और स्वयं ही आपका सामा कार्य कर दे।

जीवन में कई बार ऐसे नीके आते हैं, जब व्यक्तिसत्त्व का उपयोग होता है, अगर आप में इतना सम्मोहन नहीं है, तो आप से प्रभावित कौन होगा? अपका व्यापार कैसे चलेगा? आपको व्यापार में सफलता किस प्रकार ये मिलेगी? अब इतना आकर्षण उत्पन्न कराये, जिससे लोग आपसे स्वयं सम्बन्ध बनाने के इच्छुक हों और प्रयासरत रहें। आप किसी से प्यार करते हैं और वह आपकी ओर ध्यान भी नहीं देता है तो आप इस प्रयोग के द्वारा भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

'सम्मोहन माला' का पूजन कर उससे ? ? विनौं तक एक माला निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

॥उर्ली सम्मोहनाय फट॥

न्यारहवें दिन ही माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 150/-

५. कर्द रोगों की रामेश्वर औषधि ध्यान

ध्यान सिर्फ आंख बढ़ करके बैठने की किया नहीं है। यह स्वयं को पूर्ण रूप से ऊँजावान बनाने के लिए है, बशर्ते भूमि में गहनता हो। ध्यान के लिए उपयुक्त नमय है, प्रातः, काल, जब बालावरण भी पूर्ण चेतन्य रहता है और प्रकृति भी नूतनता एवं स्फुर्ति का अहसास करती है। मन को पूर्ण रूप से शांत करने की प्रक्रिया एवं बाहरी विचारों से सप्रसाम करने की क्रिया से अनेक रोग ठीक होते हैं, शरीर स्वस्थ एवं मन प्रकुपित रहता है।

आप भी जब गुरु मंत्र या इष्ट मंत्र का जप करते हुए ध्यान प्रक्रिया में संलग्न होंगे, तो निश्चय ही आप स्वयं को अनेक बीमारियों से मुक्त कर पाएंगे। आप ध्यान करते समय 'बुरु रहस्य सिद्धि माला' धारण करके बैठें।

साधना सामग्री- 150/-

सूर्य धृतिम् चिकित्सा

सूर्य सबके लिए सूहज प्राप्य है, सूर्य रशिमयों से चिकित्सा के माध्यम से कई रोगों का इलाज सूहज संभव है, आयुर्वेद की यह पद्धति केवल भारत में बहीं संपूर्ण विश्व में व्याप्त है, रोमन सभ्यता में इसे इलाज का प्रमुख साधन माना जाता था जिसे हिलीयोथेरेपी तथा क्रोमोपेथी कहा जाता है।

इटलीकी साजधानी 'रोम' अति प्राचीन नगर माना गया है। उसकी नीच 'पेलेटाइन' नामक पहाड़ी पर रहने वाले एक देवता 'रोमुलस' ने हाली थी। उनके नाम के आधे आदि शब्द 'रोम' को लेकर इस शहरका नाम 'रोम' पड़ा।

रोमके सुप्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक डा. टिलनि का मानना है कि प्राचीन रोम में प्रायः ६०० वर्ष तक कोई वैद्य ही नहीं था, वैद्यकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी, क्योंकि रोमन लोग सूर्यकिरणों, विविध रंगों तथा जल, वायु और मिही एवं व्यायाम इत्यादि के सही उपयोगों द्वारा अपना उत्तम स्वास्थ्य बनाये रखते थे। उन दिनों रोमन-साम्राज्य विश्व में महान् शक्तिसम्पद माना जाता था।

प्राकृतिक चिकित्सक डा. रेस्सन कहते हैं कि 'अपना स्वास्थ्य अच्छा बनाये रखने के लिए और दीर्घायु की प्राप्ति के लिए हमें प्रकृतिदेवी ने असंख्य अमूल्य उपाय प्रदान किये हैं। फिर भी हम उनका सदृप्योग न कर विष जैसी झींघथियों का खेदन करते रहते हैं, विपुल घनराशि व्यथा करते हैं और बदले में हानि ही प्राप्त करते हैं। क्या हमारे लिये यह शोचनीय बात नहीं है।'

रोमन भाषा में 'हिलियो' का अर्थ है 'सूर्य' और 'थेरपी' का अर्थ है 'चिकित्सा-पद्धति'। प्राचीन रोम में यह 'हिलियोथेरपी' अर्थात् सूर्य-किरणों एवं रंगों द्वारा विविध प्रकार के रोगों का निवारण करने की एक ज्ञानोद्धी पद्धति थी था, जिसको क्रोमोपेथी (CHROMOTHERAPY) कहा जाया

है। 'क्रोमो' से तात्पर्य रुग्ण से है और पिथा का तात्पर्य चिकित्सा से है।

सूर्यी के सभी पदार्थों में रुग्ण विद्यमान है। आकाशीय पदार्थ भी पृथ्वी पर रंगीन किरणों के कते हैं। जगली पशु-पक्षी आदि जब बीमार पड़ जाते हैं, तब स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु वे अपने बीमार देह पर प्रातः काल के सूर्य की किरणों पड़ने देते हैं।

इस प्रकार सूर्यस्नान (SUN-BATH) करने से वे बिना दबाइयों के ही पुनः स्वास्थ्य-लाभ कर लेते हैं। दुःख की बात है कि मनुष्य इस सूर्य-चिकित्सा - पद्धति (हिलियोथेरपी) - की उपेक्षा करते हैं।

विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद में सूर्य के विषय में अनेकों क्रचाएं (मंत्र) विद्यमान हैं। सूर्योपासना तो प्राचीन भारत की धरोहर ही है। वेदों में निहित गायत्री-मंत्र सूर्यप्रार्थनापरक ही है, जिसमें साधक-उपासक सवितादेव से 'धी' (प्रजा) - प्राप्ति की महती इच्छा करता है। सविता या सवित्री या सवित्री तो सूर्य के ही सृजनकर्ता-रूप के शक्तिरूप हैं।

ऋग्वेद (८। ११। २) - में कहा है कि-

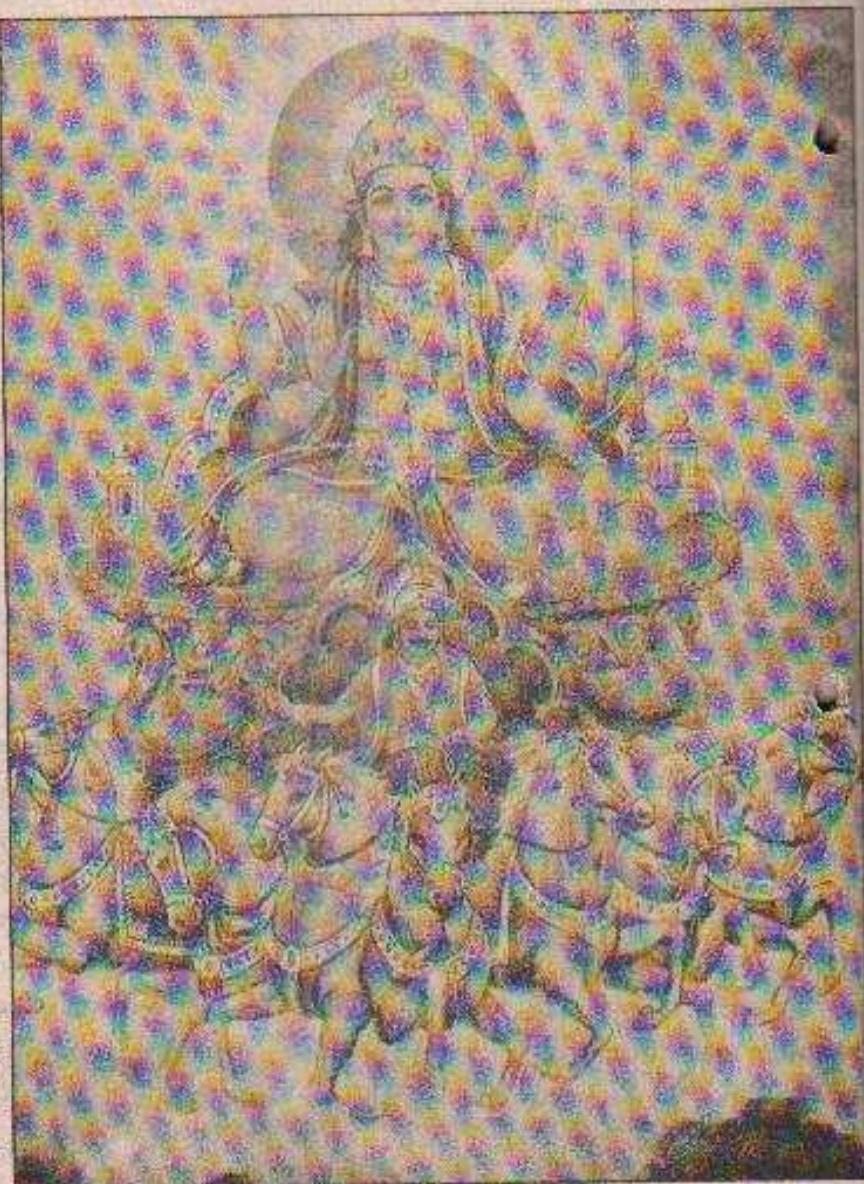
**'ऋगु मर्तेषु दृजिना च
पश्चन् ॥'**

अर्थात् 'सूर्य मनुष्यों के अच्छे-बुरे कृती को देखते हैं।' प्राचीन काल में सूर्य के प्रकाश में शपथ-कस्तम् - (OATH) ली जाती थी और

लोग पाप करने से उरते थे।

सूर्य को वेव में स्थावर तथा जंगम-सुषिका आत्मा कहा है- 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्युष्वन्'। ऋग्वेद (७। ६३। ४) - में कहा है कि 'मूनं जना, सूर्यण प्रसूता जयन्नर्थानि कणवन्मपांसि।' अर्थात् राशी को निद्रा से आश्रित करने वाले सूर्य ही हैं, उनकी प्रेरणा से लोग अपने अपने विविध कार्यों में लग जाते हैं। ऋग्वेद (१। १५४। १०) - में कहा है कि

सूर्य के सभी प्राणियों का जीवन सूर्य पर अवलम्बित है, सूर्य मनुष्यों की आरोग्यिक, मार्गसिक तथा लौकिक व्याधियाँ



सूर्य के प्रकाश में उड़ते हैं जो दूधा न थहर
जाते हैं तथा बातापन। पानी इब जमीनी की छापुओं से भा
वारा करते हैं। यह सूर्य निष्ठानिक रूप से निष्ठानिक होता है।
यह सूर्यों की सुखायिसना और अमरज्ञा
भास्तव्यात्मिक है। आदि यज्ञों से यह सूक्ष्म व्रात
होता है जो अर्थ से अस्तव्य-व्रात होता है। सूर्य किंचित्पन्था
पद्धति से सभी प्रकार की पुरानी तथा नई विमारियाँ
जीक होती हैं।

— दर्शते हैं, स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करते हैं। विशेषतः
— व्यग्र, आचू का विनियोग, कुप्रयोग, वशराग,
उच्चान्वया इत्याति निरापद है।

अथवेद (१३।३।१०) में सूर्य के सात नाम आये हैं, जो सूर्य की सातारण्यों के द्योतक हैं। वेद में सूर्य का एक नाम सप्तरश्मि भी है। वेदकालीन प्राचीन ऋषियों ने उन्कठ नष्टस्यादारा सूर्य के विषय में अन्वेषण कर उत्तर के सामने यह असत्य प्रस्तुत किया है कि सूर्य ने सात नाम है।

विजानी न्यूटनने भात रंग के चक्र (Wheel of seven colours) का जो पिछाना विश्व के समृद्ध प्रस्तुत किया है उस वास्तव में वैदिक ऋषियों का 'सातरश्मि' या 'सप्तरश्मि' ही है। विजान कहना ऐसि सात रंगों (VIBGYOR) (ब्रह्मलिंग, इंद्रिय, ब्राह्मन, गीति, वलो, वारिज और रेत) से एक चक्र पर आकेत कर उत्तर चक्र जो शोश्रता में प्रमाणने ने चक्र का रंग इवेत (White), विश्वायी पढ़ता है। इसी कारण में सूर्य शुभ ढीकता है।

सूर्य के ये सातों या हमारे स्वास्थ्य के लिए बड़ी गहरापूर्ण हैं। यदि हम प्रातः, आनन्दान करने के प्रश्नान् नेत्र स्थान और सूर्य-स्थान करें तो प्रातःकालीन सूर्य की रण्डियाँ हमें शारीरिक शेज़-निवारण तथा दुःखबलवधक प्रतीत होंगी।

सूर्योकरण-चिकित्सा (हिन्दूयोगशास्त्री) वे निष्ठानिकित

लाभ प्राप्त होते हैं-

१-जहा-नहा सूर्य का प्रकाश पहुँचा है, वहाँ वहाँ से रोग की नियुक्ति होती है।

२-सूर्य-किरणों आधुनिक औषधियों-जैसी दृष्टिभावी तथा तुग्नन्द-भरी नहीं होतीं, प्रत्युत उनके सेवन से शरीर में स्फूर्ति तथा चैतन्यता आती है और आनन्द की अनुभूति होती है। उनका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

सूर्य-स्नान-सूर्य-किरणों के सेवन से हमारे देहके कोन कीन, केसे-केसे रोगों का निवारण होता है और अन्य ब्या-कथा लाभ मिलते हैं, उसके विषय में कहा गया है कि-

सूर्यतापः स्वेदवहः सर्वरोगविनाशकः ।
मेवच्छेदकरश्चैव बलोत्साहविवर्धनः ॥
वद्रुविस्फोटकष्ठधः कामलाशोथनाशकः ।
ज्वरानिसारशूलानां हारको नात्र संशयः ॥
कफपितोद्धवान रोगान् वातरोगांस्तथैव च ।
तत्सेवनाङ्गो गिर्वा जीवेच्च शरदां शतम् ॥

अर्थात् सूर्य का ताप स्वेद को बढ़ाने वाला और सभी प्रकार के रोगों को नष्ट करने वाला, बद्र का छेदन करने वाला, बल तथा उत्साह को बढ़ाने वाला है। यह द्रु, विस्फोट,

कुष्ठ, कामला, शोथ, ज्वर, अतिसार, शूल तथा कफ एवं बात और पित्त-इन चिकित्सों से उत्पन्न रोगों को दूर करने वाला है। इसके सेवन से मनुष्य रोगों पर विजय प्राप्त करके दीर्घायु प्राप्त करता है। सारांश यह है कि सभी प्रकार के रोगों का निवारण सूर्य-किरणों के सेवन से होता है। शक्ति एवं उत्साह में वृद्धि होती है और शतायु की प्राप्ति होती है।

सूर्य के प्रकाश से हमें प्राण-तत्व तथा उष्णता-ये दोनों प्राप्त होते हैं, जो हमारे जीवन को स्वस्थ तथा दीर्घजीवी बनाते हैं। सूर्य किरणद्वारा 'ओजोन वायु' उत्पन्न होती है, जो हमें और हमारी पृथ्वी को सुरक्षित रखती है। यह 'ओजोन' हमारी शक्ति को बढ़ाती है तथा रक्त को विशुद्ध करती है, हृदय को शक्तिशाली बनाती है और हड्डी तथा नाड़ी हृत्यादि को सक्षम बनाती है।

प्राचीन रोम शहर में कई स्थानों पर Solarium (सोलोरियम्) -सूर्य-उपचारगृह में रोगों को दूर किया जाता था। यह पद्धति इस प्रकार है-

वर्षा का जल अथवा कूप-तड़ाग-निर्झरका विशुद्ध जल लाकर समर्पण (VIBGYOR) में से घिर-घिन्न रंग की बोतलों में भरे और बोतल का मुख बंद करके उसके ऊपर चिकनी मिट्ठी लगा दे। इसके बाद उन रंगीन बोतलों को 'सोलोरिया' (गच्छी) में, सूर्य-किरणों नहां पड़ती हैं, वहाँ पर रखे। इस प्रकार दो-चार दिन तक रखने पर सूर्य-किरणों के प्रभाव से रंगीन बोतलों का जल जीवन-जल बन जाता है, उसमें रोग के निवारण की शक्ति (Healing properties) आ जाती है। रोगी को ऐसा जल थोड़ा-थोड़ा पिलाने पर वह रोगमुक्त हो जाता है।

'क्रोमो-हाइड्रोपिथी' के निष्णात डा. लेविट का अभिमत है कि लाल (red) रंग की बोतल का जल शक्तिदायक है (पृष्ठा 1) है। ऐसा जल त्वचा के रोगों को नष्ट करने की क्षमता रखता है।

बीले (white) रंग की बोतल का जल ब्रह्ममी (Convolvulus), पेशाब के वर्द्ध इत्यादि को मिटाता है।

नीले (blue) रंग की बोतल का जल असाध्य चर्म रोग का निवारण करता है, यह 'पोटाश परमैगेनेट' से भी अच्छा काम देता है।

संतरा-जैसे (Orange) रंग की बोतल का जल भूख-वृद्धि करता है तथा संधिवात दूर करता है। हरा भूख में वृद्धि करता है तथा संधिवात दूर करता है।

हरा (Green) रंग की बोतल का जल आंखों के रोग, इन्फ्लूएन्जा (शीतज्वर), सिफिलिस मिटाता है।

जामुनी रंग की बोतल का जल रक्त की शुद्धि करता है, रक्त के रोगों का निवारण करता है, लौवर-पित्ताशय के रोग मिटाता है।

बायोलेट पुष्प के रंग की बोतल का जल नाड़ियों के रोग को मिटाता है।

रंग द्वारा रोग-निवारण-पद्धति के विषय में कठिन निष्णात डॉक्टरों का स्वानुभव इस प्रकार है-

१. चेचक-शीतल (Chalkool) के मरीज को लाल रंग की बोतल का जल पिलाने रहने पर तथा लाल रंग के कमरे में रखने पर कुछ ही दिनों में वह अच्छा हो जाता है।

२. पक्षाधात (Perelelismus)-के मरीज को लाल रंग का जल पिलाकर और लाल रंग से रंगे कमरे में रख कर रोगमुक्त किया जा सकता है।

३. तीव्र ज्वरग्रस्त मरीज (हायफिवर)-को और मन्दवृद्धि के व्यक्तियों को कभी भी लाल रंग के कमरे में नहीं रखना चाहिए। मरीज अधिक बीमार हो जाएगा।

४. सर्दी-जुकाम से ग्रस्त मरीज को, लौवर के रोगी को बदहजमी (कोन्सटीपेशन) के मरीज को, जॉडिक्स, किडनी, ब्रेन ट्रूबल, ड्रोकाईटिस, न्यूमोनिया, आतंके रोगी आदि को पीले रंग (yellow-orange)-की बोतल का सूर्य किरणद्वारा जल पिलाने पर तथा पीले रंग से रंगे कमरे में रखने पर मरीज रोगमुक्त हो जाते हैं।

५. चिन्नभ्रम हुए (ब्रेन रिटार्टेड) मरीज को नीले रंग की बोतल का जल पिलाने रहने से और नीले रंग से रंगे कमरे में रखने पर वह कुछ ही दिनों में अच्छा हो जाता है।

६. हरे रंग की बोतल का जल पिलाने रहने से आंखों के मरीज और जानतन्तु के कमजोर पड़ने वाले मरीज अच्छे हो जाते हैं। हरे रंग से रंगे कमरे में रखने पर ऐसे रोगों के मरीज शीघ्र रोग-मुक्त हो जाते हैं।

(डा. श्रीवेष्टन्ती जाचार्य, पर्याय,

शिवपूर्वजन्म दीक्षा

पूर्व जन्म को नकारा नहीं जा सकता है और न ही नकारा जा सकता है पूर्व जन्म में किए गए कर्मों की श्रुंखला को, जो कि इस जीवन में भी प्रभावी रहती है। पूर्व जन्मों में जाने-अनजाने में हुए किसी पाप-शाप का भोग तो मनुष्य को भोगना ही पड़ता है।

बिना इन शापों का शमन हुए व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता, चाहे वह अध्यात्म से सम्बंधित हो अथवा भौतिक जीवन से सम्बद्ध हो। शापोद्धार दीक्षा से उन कर्मों का क्षय होना प्रारंभ हो जाता है और व्यक्ति शनै-शनैः वह सब कुछ प्राप्त करने लगता है, जो आगीरथ प्रयास करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पा रहा था।

जीवन वह नहीं है जो जन्म से लगाकर मृत्यु तक होता है। हमने काल खण्ड को देखा नहीं, और हस सम्बंध में कभी चिन्तन भी नहीं किया। समय तो अनस प्रवाह है, जिसका न हमें ओर का पता है, और न छोर का। इस बीच हम कई बार जन्म लेते हैं और कई बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

यह हमारी अज्ञानता है कि हमने जीवन का आरंभ उस दिन से मान लिया, जिस दिन हमने जन्म लिया और जीवन

को उतना ही मान लिया है जिस दिन हमारी मृत्यु होती है। सामाजिक दृष्टि से तो निश्चय ही यही जीवन है, पर शास्त्रीय दृष्टि से यह जीवन का मात्र एक भाग है। इसले पहले भी हम कई बार जन्म ले चुके हैं, और मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, तथा भविष्य में भी कई बार जन्म लेंगे और हमारी मृत्यु होगी। यह तो प्रकृति का विधान है।

प्रभु ने कुछ ऐसी व्यवस्था कर दी है, कि हमें अपने पिछले

जीवन का स्मरण नहीं रहता और वेसा हमलिए किया गया है, जिससे पीछे के जीवन के सोह, हिंसा, देर आदि हमें स्पर्श नहीं रहे, और वर्तमान जीवन उच्चाव अशात न हो। अप कल्पना करें कि यदि व्यक्ति को पिछला जीवन याद हो और यह भी स्मरण हो, कि उनके ग्राम या गड्ढ में अपुक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी थी, तो वह कोई और घटने की भवना में जलता रहेगा, और तब तक वह शारीर से नहीं बेट भक्तग, तब तक वह अपनी मौत का अवलोकन न लेंगे।

पूर्व जन्म के नकारा नहीं ना सकता है और न ही नकारा जा सकता है पूर्व जन्म में किए गए कर्मों को श्रृङ्खला को, जो कि इस जीवन में भी प्रभावी रहती है। पूर्व जन्मों में जाने अनुलेने में हूँ, किसी पाप शाप का योग तो मनुष्य को भोगना ही पड़ता है तथा जिन आर्णे का शमन हूँ व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सकल भी नहीं को सकता, वह वह अनुलेन से सम्बंधित हो अथवा भैतिक जीवन से। और इनके गमन का एकमात्र उपाय, एकमात्र साधन है शापोद्धार दीक्षा कर्योंके इस दीक्षा से उन पापों और शापों का काय होना। इनमें ही जाता है और व्यक्ति इन्हीं जीवन, वह सब कुछ ग्राम करने लगता है, जो भगीरथ ग्राम करने के बाद भी ग्राम नहीं कर पा रहा था।

आश्चर्य शास्त्रों के पुनर्जन्म तत्त्व के माध्यम से व्यक्ति अपने पिछले जीवन में इंग्रंक सकता है और देख सकता है, कि उसका पिछला जीवन वर्तमान जीवन से अच्छा था अथवा

जनवरी 1999 में खिली में हुए शहावर्चरुव शिष्यामिश्रक दीक्षा
शिविर में साधकों ने आगे लिया। तथा
उस शिविर में गुरुदेव ने शापोद्धार
दीक्षा के महात्व का उद्घाटन किया
था। इसके महात्व को समझते हुए
अनेकों शिष्यों ने इस दीक्षा को
ललक कर बहन किया था। क्योंकि
उन्हें समझा आ गया था कि खिला
शापोद्धार दीक्षा के अन्य किसी दीक्षा
या साधना में प्रयुक्त होना ही अधूरा
है, और एक दरह से निरर्थक है।



बुरा या किर पिछले जीवन में कोन सी गलतियों की थी, जिसका परिणाम इस जीवन में भूगतना पड़ रहा है, या पिछले जीवन के कोन से ऐसे भले कार्य किए थे, जिनका लाभ इस जीवन में हमें मिल रहा है।

यदि वर्तमान जीवन में परस्पर लड़ाई या मतभेद है, तो इनका कारण पिछले जीवन की प्रट्टनाओं में रहा होगा, कौन सी घटनाएँ थीं, जिनकी उन्ह से इस जीवन में मतभेद है, उदाहरण के लिए यदि आपके किसी आप्य रसी से सम्बंध बन गए हैं, तो जल्द उस सी से पिछले जीवन में भी आपसे कोई न कोई सम्बंध रहा ही होगा।

कई बार व्यक्ति को इन्द्रिय पर झोप आता है और उसके न्याय पर सन्देह भी होने लगता है, क्योंकि वह जीवन भर कान, पुण्य, गुरु की सेवा, इष्ट की पूजा करता हुआ सात्त्विक जीवन व्यर्तीत करता है, फिर भी वह गरीब और पेसे-पेसे के लिए मोहनाज रहता है। जबकि दूसरी ओर वद्याश, ठग, छत्यार, लूट खसोट करने वाले, जुठे और सक्कार व्यक्ति लगाज में सम्माननीय कहे जाते हैं, उनके जीवन में कोई अभाव नहीं होता। ऐसे में विधाता के न्याय पर सन्वेद होना स्वाभाविक ही है।

परंतु इन्द्रिय के प्रति झोप करने से कुछ नहीं होता क्योंकि इन सारे उश्नों के उत्तर उनके पूर्वजन्मों में विषमान है, उन

जब मदनुरु देख ले हैं, कि उनका शिष्य बहुत प्रयासों
के बाद भी साधनाओं में सफल नहीं हो पा रहा है, और न ही
भौतिक क्षेत्र में ही उन्नति पा रहा है, और एक तरह से विस्ट-
विस्ट कर जीने वाली जिन्दगी को जीने को विवश हो जाता है,
तब वे शापोदार दीक्षा का उपक्रम करते हैं।.... क्योंकि इसी
दीक्षा के द्वारा उसके अतीत के व पूर्व जन्मों के उन शापों
को धोया जा सकता है, जिनकी वजह से इस जीवन में भी

रुकावट उत्पन्न हो रही है।

जन्मों को और उन जन्मों के दिया कल्पणों को लेखने के बाद
चतुर्थ ढी इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है, कि क्यों पति-
जन्मी में परस्पर सत्त्वभेद बना रहता है, क्यों बाप के कंधे पर
बेटे की लाला अमर्शान तक पहुँचती है, क्यों व्यक्ति के परिवर्तन
करने के बाबजूद भी वह गरीब बना रहता है, नहीं समझ में
जाने वाली बीमारों का रहन्य क्या है या क्यों हनना दुःख
मुग्धता पड़ रहा है? जब तक हम पिछला जीवन नहीं पूछ
नेतृ तत्त्व तक इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त नहीं हो सकते।

जन्मों की ये श्रृंखला और कर्मफल का रहन्य उत्त्यन्त
पैचीदा है। हन्हीं के संयोग से व्यक्ति का अगला जीवन निर्धारित
होता है। जगत में शिशु जब सांके के गर्भ से उत्पन्न होता है, तो
वह अकेले ढी नहीं उत्पन्न होता है, उसके साथ होता है, हजारों
मिलों का वह बीड़ा, जो कि उसके पूर्व जन्मों के कर्म का पूर्जीभूत
स्वरूप है। जैसे-जैसे वालक बढ़ा होता जाता है, वैसे-वैसे
उसके संचित कर्म उसके जीवन पर प्रभाव विद्युत है।

मात्र परिश्रम और पुरुषार्थ ये ही मध्य कुछ सम्भव हो जाना,
फिर तो दिन भर परिश्रम करने वाला मनवर जो कहीं मेडनत
करता है, जैकिन फिर भी बड़ी बमुश्किल से गुनर-बरार कर
पाता है, वह सर्व संप्रद जाता। क्यों ऐसा हो जाता है कि आपके
मित्र के कार्य बड़ी आसानी से पूर्ण हो जाते हैं और आप हर
प्रकार से सजग और सचेष्ट रहने के बाव भी अपने सोचे हुए
कार्य को पूरा नहीं कर पाते? क्यों आपके जीवन में बाधाएं
आती हैं, जबकि अन्य लोगों के कार्य बैठे-बिठाए हो जाते हैं।

साधारणतः ऐसा होने पर मनुष्य अपने भाज्य को दोषी
तुष्टान लगता है, और ईश्वर के प्रति अविश्वास करने लगता
है। परंतु सत्य तो यही है, कि यदि दुःख है, तो दुःख का
कारण भी है। और दुःख का यह कारण इस जीवन एवं पूर्व
जन्मों के कृत्यों में छिपा होता है।

सत्य तो यह है, कि कर्मफल की एक बहुत बड़ी राशि पूर्व
जन्मों से सम्बद्ध होती है। इस जन्म में आने वाली
अन्यकलनाओं, परेशानियों का, बाधाओं का, रोग-शोक,
निर्धनता एवं अपमान का कारण पूर्व जन्म में हुए पाप ही होते
हैं अथवा किसी आत्मा का शाप होता है, जिसका प्रायशिचित
इस जीवन में हमें करने पड़ता है।

जाने-अनजाने में पूर्व जन्मों में हमसे किसी जीव को अथवा
किसी मनुष्य को कष पहुँचता है, अथवा उसके साथ तुर्बवहार
होता है, तो उसकी आत्मा का वह शाप निरंतर हमारा बीड़ा
करता ही रहता है। और समय आने पर वह पाप राशि, वह
अभिशाप हमारे मार्ग में एक दैत्य की तरह आ खड़ा होता है,
और हमें विवश हो जाना पड़ता है, विधि के विधान के जागे।

हमारे ही कर्म, हमारे ही लोष हमारे मार्ग में रुकावट बन
कर खड़े हो जाते हैं, और पूर्व जन्म रमरण न होने के कारण
हम अपने उस कर्म से अनभिज्ञ रहते हुए इन रुकावटों को
ईश्वर के ऊपर थोपते रहते हैं, जिसके जिस्मेवार प्रायः हम
स्वयं ही दुआ करते हैं।

कर्म का कल मनुष्य तो क्या अवतारी पुरुषों को भी

भुगतना पड़ा है। पुराणों में प्रसंग आता है, कि एक बार सीता जी राज वाटिका में अपनी सहियों के साथ विचरण कर रही थीं, कि तोतों की सुन्दर युगल जोड़ी ने उनका ध्यान आकर्षित किया।

बृह की डाल पर कुरकने हुए तोते व तोती से सीताजी अति मुम्हु हुईं और उन्होंने अपनी सहियों को तोते को पकड़ने का आवेदन दिया। तोते को पकड़कर सीताजी ने यन बहलने के लिए पिंजड़े में डाल दिया। उधर तोती गर्भिणी अवस्था में थीं, उससे विद्योग में रहा नहीं जा रहा था, अतः उसने तड़प-तड़प कर विरह में प्राण त्याग दिए और सोनाजी के शाप दिया कि जिस तरह तूने मुझे इस गर्भिणी अवस्था में पति से अलग किया है, उसी तरह तू भी अपने पति से विलग होना पड़ेगा।

काल चक्र घूमा और शास्त्र इस बात का प्रमाण है, कि सीताजी को धोबी के आक्षण के कारण स्वयं अपने पति रम द्वारा गर्भावस्था में अयोध्या से निष्कासित किया गया और बाद में राजमहलों में रहने वाली सीताजी को वाल्मीकी आश्रम में पति के विद्योग में मृत्यु तुल्य जीवन जीने को विवश होना पड़ा था। कर्मों के फल की तो भुगतना ही पड़ता है।

पूर्व जन्म के इन शायों का शमन करना अति आवश्यक है, क्योंकि इन पाप शाय के रहने व्यक्ति का सफल होना उड़कर ही होता है। अध्यात्म एवं साधना पथ पर बढ़े साधक को तो विशेष प्रयास कर अपने गुरु से इन शायों ओर पाप दोषों का निवारण कर उद्धार करने की प्रार्थना करनी ही चाहिए। साधनाओं में सफलता या जीवन के किसी भी धेर में सफलता तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि इन शायों का शमन न किया जाए। और यह शमन ही सकता है वस्त्रगुरु कृपा से दीक्षा के रूप में और दीक्षा के इसी रूप की शास्त्री में शायोद्धार दीक्षा के नाम से जाना जाता है।

वह दीक्षा तो एक तरह से सभी साधकों के लिए अनिवार्य ही है, क्योंकि बिना पूर्व जन्म के गायों का, पापों का उद्धार किए सिद्धि की कल्पना करना ही मर्खता है। कड़े के दूर पर सुगन्ध की स्थापना नहीं हो सकती है, अतः जब सद्गुरु के शक्तिपात्र से, सद्गुरु के शक्ति प्रबाह से कर्म दोषों का भस्मीकरण होता है तभी जीवन में सोभाग्य का उदय होता है, तथा किर व्यक्ति जिस भी विश्वा में प्रयास करता है, उसे देवीय कृपा, पितृ कृपा, गुरु कृपा, कुदुम्ब कृपा सभी सहयोग रूप में प्राप्त होती ही है और वह अत्यन्य प्रयास से ही वह सब

कुछ प्राप्त कर लेता है, जिस हेतु वह कर्मशील होता है।

इस जन्म में तो गुरु से दीक्षा प्राप्त होने के बाव छी मन का सार्वजन प्रारंभ होता है, उचित-अनुचित में धेद समझ आने लगता है, और जीवन का मार्ग तथा लक्ष्य स्पष्ट होने लगता है। तब ऐसी चेतना आने पर व्यक्ति सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है एवं दुष्कर्मों से सप्रवाच निवृति लेने को ही प्रयत्नशील रहता है।

जब शिष्य गुरु से दीक्षा प्राप्त होने के बाद भी साधनाओं में सफल नहीं हो पा रहा होता है, और न ही भौतिक क्षेत्र में उत्तरि पा रहा होता है, तो एक तरह से घिसट-घिसट कर जिन्दगी को जीने को विवश हो जाता है, तब सद्गुरु शायोद्धार दीक्षा का उपक्रम करते हैं।.... क्योंकि इसी दीक्षा के द्वारा ही उसके अनीत के व पूर्व जन्मों के उन शायों की धोया ज्ञान सकता है, जिनकी वज्रन द्वे इस जीवन में भी सुकाबट उत्पन्न हो रही होती है। जब गुरुदेव देखते हैं, कि शिष्य का पूर्व जन्म बहुत ही दीख्युक्त है, तो उन्हें यह दीक्षा कई चरणों में सम्पन्न करनी पड़ती है। अन्यथा सामान्यतः गुरुदेव एक ही चरण में इस दीक्षा को पूर्णता के साथ शिष्य को प्रदान कर देते हैं।

यह दीक्षा नो प्रस्तु, हर साधक को अनिवार्यतः लेनी ही चाहिए, क्योंकि जब तक शायों से उद्धार नहीं होगा, तब तक वह किनी ही साधनाएं क्यों न कर ले, साधनाओं में अनुकूलना यंदिग्ध ही रहेगी। जन्म-जन्म की इस जमी धूल को छाल कर पोछ देने का ही उपाय है शायोद्धार दीक्षा।

दीक्षा सफलता का आधार

दीक्षा वास्तवमें गुरु का एक अनुग्रह है जिपने शिष्य पर, अनुकूलन के विशेष क्षण हैं त्रैष वे अपने तप की पूर्ती का अपने स्पर्श, अपने चालुधी स्पर्शों के अध्यात्म का नायान ते अपने शिष्य की प्रदान करते हैं। हेसे ही अनेक साधक गुरु कृपा स्वपी दीक्षाएं प्राप्त कर अपना दीक्षित संबंध तुराते हैं।

साधनाओं का मार्ज अहो जटित है, वही दीक्षा सरल उपाय है। कहलेस सोभाग्यशानी सादाकर्त्ता हैं, जो दीक्षाओं के माध्यम से कहलेस साधनाओं और लिंगियों को हसागत कर सकते हैं। इसके लिए उद्देश्यद्वय कहल परिवर्ष करज्ञ पात्रा। उदाग-उदाग प्रकार की दीक्षाएं तेजे के उपरोक्त साधकों को तो अनुभूतियाँ हुईं, उक्से यही लिंग होता है कि दीक्षाएं विद्वनी प्रभावी हैं।

न का
अने
नता
प्रवृत्त
शील

नाओ
रव में
इ कर
जार
जारा
गा गा
स्वप्न
नम्म
म्पन
ण में
है।
नी ही
तब
में में
धूल

र

पर,
जीवन
ज के
जेक
रवार
प्राय
धर्म
हैं।
जग-
तो
दर्जी

निः श्रुतक उपहार

दिव्य उपहार !!

जगद्भासा रक्षा कवच

आज जब जीवन विलक्षण असुराधिकार बन गया है, पर-पर पर राक्ष, और रुक्षरे मुह बाए रखते हैं, तो अपनी प्राण रक्षा अरथात् आवधार ही जाती है। यदि किसी शत्रु अधरा किसी आकर्षित कुर्हिटना से जान का मरा हो, तो व्यक्तित्व का जीवन ताहु कितना ही दश-दाश से पूरित हो, उसका कोई भी अर्थ नहीं। प्रत्येक व्यक्तित्व अपनी ओर से अपने सुरक्षा की ओर ले संचेष्ट रहता ही है, परंतु दुर्घटनाएँ विला सूखना दिये आती हैं।

जीवितीनीया दृष्टि से दुर्घटना का कारण होता है, कि अमुक व्यक्ति अमुक समय पर अमुक रथान पर उपर्युक्त हो ही है। परंतु वहीं के प्रभाव से यदि दुर्घटना किसी विशेष स्थान पर लिखी लम्बा पर होती ही है, परंतु यदि व्यक्ति उस विशेष क्षण में उस रथान पर उपर्युक्त न होकर समय थोड़ा आगे-पीछे हो जाए, तो उस दुर्घटना से बच सकता है। वहीं का प्रभाव ऐसा होता है, कि अपने आप ही उस विशेष समय में व्यक्ति को द्विवित्त दुर्घटना रथान की ओर लगाता ही है, परंतु 'जगद्भासा रक्षा कवच' एक ऐसा उपाय है, जो वहीं के दृस प्रभाव को क्षीण कर देता है। इस कवच को धारण करने से व्यक्ति के अलद्दर रूप हो जाएगी, कि वह अमुक जगह उस समय न जाए, प्रथमा हर नगह न जाकर अल्पाक्र जाए ग्राहि। जगद्भासा रक्षा कवच यो भी जगद्भासा की शक्तित से आपूर्तिकरत है, जिसके प्रभाव से साहार का यो भी दूष, कहराण एवं मंगल होता ही है।

जीवन की जुड़वाएँ को प्राप्त, जाल इस कवच जो सामने रखकर कुकुम, जशन, पुजा व शूष्प अर्पित करें और 'अंतर्ज्ञान कर कुरु फट' मन का १० मिनट जप करें। फिर कल्प जी किसी आले घोंगे में फिरोकर जगने में प्राप्ति करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञान दान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया जाया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ प्राप्त कर मंडिरों में, अस्पतालों में, समाजीयों में, ज्ञानगणों और धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अपनी तक इससे बचत है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ प्रथ पर अग्रसर हो सकता।

आप क्या कहें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड झंगाम 3) में दें, कि 'मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ मंगाना चाहता हूँ। आप निः श्रुतक 'मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित जगद्भासा रक्षा कवच' ३९०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + डाक व्यय ९०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैल को धन राशि देकर दुड़ा लूंगा। बी. पी. पी. छुटने के बाद मुझे २० पत्रिकाएँ रजिस्टर्ड डाक ज्ञान दें।' आपका पत्र आपे पर, ३००/- + डाक व्यय ९०/- = ३९०/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित जगद्भासा रक्षा कवच' भिजवा दें, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. छुटने पर आपको २० पत्रिकाएँ दें तो जाएंगी।

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, डाईकोट कॉलोनी, जोधपुर - ३८२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेलीफोन: ०२९१-४३२०१०

Maatra-Tantra-Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

हुक्मदीन दिव्यांगी

जिस अवृत्ति पर गैंड़ों प्रयोग और अलंखा दीक्षाएं
समझ हो चुकी हैं, उस सिद्ध घैतन्त्र विज्ञानी—
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धांश्म' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 बजे 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है। यदि अद्वा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

27.10.2001 शनिवार

गणपति कार्य सिद्धि प्रयोग

बरोडगारी की नमस्त्या आजकल इनी अधिक खड़ा गई है, कि इसमें पूरा युवावर्ष ही शस्त्र है। व्यवों के सघन अध्ययन के बावजूद जब प्रयास के बाद प्रशास्त्र करने पर भी प्रतियोगी परीक्षाओं में एवं साक्षात्कार परीक्षाओं में सफलता नहीं मिलती तो जीवन में कुछ आ जाती है।

भगवान गणपति विष्णु विनाशक है, किसी भी कार्य की असफलता कई कारण होते हैं, ऐसे यमी विष्णों का नाश भगवान गणपति को उस साधना द्वारा सम्भव होता है, और यह आशीर्वाद से उस शोध ही मनोवांछित व्यवस्थाय, नौकरी अथवा व्यापार की प्राप्ति होती है।

गणपति साधना जीवन में मग्नलक्षणी एवं अल्पत अल्पकूल सिद्ध होती है। देवताओं में प्रथम आराध्य भगवान श्री गणेश की इस साधना द्वारा जीवन में प्रर्णता की प्राप्ति हो सकती है। साधक सफल एवं समृद्ध जीवन व्यापी वर भक्ता है।

हन तीनों लिखकों पर साक्षा ने आठ टेम्पो वाले साइक्से के लिए लिखा निवाले हैं।

1. आप अपने किन्हों दो जिन्हों अश्वा रखते हों (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मैत्र-तत्र-यत्र विष्णान पत्रिका का यार्थिक सदस्य इन्हें गुरुदेव में सम्बन्ध होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्धीय शुल्क रु. 235/- है। परन्तु आपके गाड़ी रु. 460/- ही उस फारसे है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष सत्र रिड्ड, प्राण-प्रतिष्ठित लागती (एवं गुटिका आदि) आपके निशुल्क प्रदान हो जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक निवाले लिए पत्रिका यार्थिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को अपने परम्परा की इस पाइन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुर्वोत्तम एवं प्रशंसनीय कार्य करते हैं। यदि आपको प्रयोग से एक परिवार में अध्यक्ष कुछ प्राप्तियाँ ने इश्वरीय विष्णान साधनात्मक विचार आ पाता है, तो उन आपके जीवन की सफलता को ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वधा निशुल्क हैं और एक कृपा हारा ही वरदान स्वरूप साधक को जाप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराश्य में नहीं रोक सकते।

कोटों हारा 'मुख्योद्दती दीक्षा' देवताल २७ दो ८२

अक्षरदावर को हो

आप जाहे नो निधरित विवरों से पूर्व भी अपना फोटो एवं नौकरवर राशि का बैंक डाफ्ट ('यत्र-तत्र-यत्र विज्ञान' के नाम से) अजबकर भी इन विवरों पर होने वाली विकास को आपन कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच सदस्यों के पते विली कार्यालय को समय पर प्राप्त हो सके, इस हेतु आप अपना पत्र स्पष्ट-पोस्ट द्वारा ही भेजें। पत्र विवरम से विली परवाना सम्बन्ध न हो सकेगी।

28.10.2001 रविवार तत्र बाधा शांति ज्वालामुखियों प्रयोग

इसने प्रयासों के बावधी आज तक के नाम से लोग ध्यय खाने हैं, तो उनके पीछे कारण यहाँ है कि लोगों ने इसका उपयोग डिट की बनाय निजी व्यापार और लानच के सिए अधिक किया है। आज कल गोव और झारखंड में ऐसे अनेक दुष्ट एवं न्यायी नांविक अपने ग्राहकों से कुछ समय लेकर किसी के ऊपर घटिया स्नार के टोनेंटोटके कर देते हैं, जिससे एक गीधे गादे व्यक्ति का हृषता-खेलता नावन खिलाश के क्रनार पर आ जाता है। व्यक्ति समझ नहीं पाता, कि वर्षों अचानक उसके परिवार में लोग बीमार पड़ रहे हैं, वर्षों उसके बचे कभी भी पिछड़ रहे हैं, वर्षों हर जगह जस्फलता ही मिल रही है? इन नावके पीछे प्राच: उससे इर्ष्या करने वाले किसी शब्द शब्द कराये गये मृठ अवितंत्र प्रयोग होते हैं। न्यालामालिमी प्रयोग ऐसे सभी प्रयोगों को समाप्त कर साधक के नीवन में आ रही सभी बाधाओं का नाश कर सीधार्य पथ खोल देता है।

29.10.2001 सोमवार दीप लक्ष्मी वशीकरण प्रयोग

लक्षणी को उपकी पूजा या ग्राराधना कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। लक्षणी तो पुरुषार्थ के द्वारा ही साधक के पास आ सकती है। यदि लक्षणी का बड़ीकरण कर लिया जाए, तो वह साधक को सिद्ध होकर उसके भौतिक जीवन को संबलने को बाध्य हो जाती है। यह ऐसा ही सफल प्रयोग है जिसके द्वारा लक्षणी को पूर्ण आबद्ध कर वह में स्थायित्व दिया जा सकता है। इस अद्युत प्रयोग को संपन्न कर जीवन में धन, वश, सम्मान प्राप्त किया जा सकता है। यह एक अचूक प्रयोग है जिसके द्वारा शीघ्र अतिशीघ्र धन प्राप्त कर संपन्न हुआ जा सकता है। जिस भी साधक ने इस प्रयोग को संपन्न किया उसे सफलता आवश्यक प्राप्त होती है।

दैशा आज के दुन ने एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की उत्तराधिकारी को छापत कर लेने का, जिसके अभाव के, अर्थेष्य को कर लेने का, जीवन में उत्तुलबीच बल, हारस, ठीक्कर इवं शीघ्र प्राप्त कर लेने का, लाल्हगा ने लिखि गए कह लेने का

बुझ करते तकियाल लोटा थिए
जिस काट हेतु वह छीका पाएं करता
है, उसमें लिपुलां प्राप्त कर लेता है,
कर्तवीक वह सफलता और शैखना प्राप्त
करने का एक लड़ उपाय है।

करने का एक लंबा उपयोग है आज्ञा चाहीं। यह भ्रम देने वाले हैं किंतु यह अपेक्षित है। मुद्रण करने के उत्तरान संशोधन करने पर ब्रह्मवाल किसान जाएगा। यह वीक्षा इन विद्रवनान् तीनि किसी को साथ न लें। ब्रह्मवाल इस महान् की जाएगी। वीक्षा के उत्तरान इन उपयोगों पर ब्रह्मवाल किस जाएगा। होता है।

जो जना केवल है तो उसे किये
किन्तु पाप त्वरिती
को बाहिर करने का काम
उसके द्वारा परी तिक्षणा का
उपहार भवन्ति से दीवा आय
तो गले घुटा कर मरना है

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएँ

भुवनेश्वरी दीक्षा

235x5
=Rs 1175/-

राष्ट्रपति सिद्धाभ्यु 306 कोहार एस्टेट पीटनाम नवे डिली - 34 फ़ॉन: 011-71622448 ई-मील: 011-2620

सूर्यरेखा विद्या कहती है

हस्तरेखा अध्ययन के क्रम में इस बार प्रस्तुत है सूर्यरेखा का विशद विवेचन है, सूर्यरेखा जितनी ज्यादा स्पष्ट सुन्दर और गहरी होगी, वह व्यक्ति जीवन में उतना ही यश और सम्मान प्राप्त करता है। इसी सम्बंध में उचित दिशा निर्देश आपको दे रहे हैं जिससे कि आप अध्ययन कर पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें।

अधिनो में इस गेला के 'भन लाइन' एवं हिन्दी में 'यश रेखा' भी वर्णन है। प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना इच्छा होती है कि वह जीवन में कुछ ऐसा कार्य करे, जिसमें समाज में उसके कार्यों का सराहना हो। लोग उसके विचारों को आदर दे और उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी उश्मा कीति बनी रहे। इन सबके अध्ययन के लिए सूर्यरेखा का सजारा लेना अन्यन्त आवश्यक होता है। यह सूर्यरेखा ही मानव को उसके जीवन में यश, मान, रानिधा, विवर्य तथा कीति दिलाने में सहायक होती है। यदि किसी व्यक्ति के जीवन में स्वास्थ्यरेखा, हृदयरेखा और जीवनरेखा यहे कितनी ही अधिक पुष्ट हो, परंतु उसके हाथ में सूर्यरेखा कमज़ोर होती है, तो उस व्यक्ति का जीवन नगण्य-सा होकर गह जाता है। स्वास्थ गहरी और निर्देश सूर्यरेखा ही मानव को ऊंचा उठाने में सहायक होती है। हस्तरेखा विशेषज्ञ के लिए इस रेखा का सूक्ष्मता से अध्ययन अन्यन्त आवश्यक है।

यद्यपि विद्वानों के अन्तर्गत हृथिलो में केवल सूर्यरेखा को ही महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि जब तक हृथिलो में

प्राण्यरेखा प्रबल नहीं होती तब तक सूर्यरेखा का प्रभाव विशेष नहीं मिलता। अतः सूर्यरेखा का अध्ययन करने समय भाग्यरेखा पर भी विचार करना चाहिए।

मेरे अनुग्रह में इस आया है कि सभी व्यक्तियों के हाथों में सूर्यरेखा नहीं होती और यह बात भी सही है कि सूर्यरेखा का उद्घाटन भी अलग-अलग हाथों में अलग-अलग व्यक्तियों से होता है। इसका प्रभाव इसकी लम्बाई तथा गण्डाना ने ही अनुग्रह होता है। इसलिए हाथ देखने समय सूर्यरेखा के उद्घाटन पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यह रेखा सूर्यपर्वत के नीचे होती है। इसकी पहचान यह है कि इस रेखा का उद्घाटन चाहे कहाँ से भी हुआ हो, परंतु इस रेखा की समाप्ति सूर्यपर्वत पर ही होती है। जो रेखा सूर्यपर्वत तक नहीं पहुंचती वह रेखा सूर्यरेखा नहीं बढ़ला सकती। पाठकों के हित के लिए मैं इस रेखा के उद्घाटन स्पष्ट कर रहा हूँ-

१. कुछ लोगों के हाथों में यह रेखा शुक्रपर्वत से प्रारंभ होकर सूर्यपर्वत तक जाती है।

२. कुछ हथेलियों में यह रेखा जीवन रेखा के समाप्ति के स्थान से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत तक जाती है।

३. इसका उद्गम माल पर्वत से भी देखा गया है। यहाँ से प्रारंभ होकर यह रेखा हृदय रेखा के काली दुई सूर्य पर्वत पर पहुँचती है।

४. कुछ हथेलियों में यह रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत को स्पर्श करती है।

५. इसका उद्गम हृदय रेखा से भी होना देखा गया है। यहाँ से यह सूर्य पर्वत तक जाती है।

६. कपों-कपी यह रेखा अपेक्षा से प्रारंभ होकर सूर्य तक पहुँच जाती है।

७. कधीं कभी यह रेखा चन्द्रपर्वत से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत की ओर जाती हुई दिखती रहती है।

८. कुछ हाथों में यह रेखा मणिकन्ध से प्रारंभ होकर सूर्य पर मार्ग की भागी रेखाओं को काटती हुई जा पहुँचती है।

९. हथेली में इस रेखा को केतु पर्वत से प्रारंभ होकर भी अनमिका के मूल तक पहुँचते हुए देखा गया है।

१०. कई बार इस रेखा का उद्गम राहु क्षेत्र से भी देखा गया है।

११. कुछ हथेलियों में यह रेखा बुध पर्वत से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत तक पहुँचने में जड़ता होती है।

१२. कुछ हथेलियों में यह रेखा बुध पर्वत से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत तक पहुँचने में सहज होती है।

जहाँ तक मेरी जानकारी है, इस रेखा के उद्गम यहीं है। परन्तु इसके अलावा भी इस रेखा के उद्गम ढो सकते हैं, परन्तु जटियों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि सूर्य रेखा वही मार्ग जा सकती है, जिसकी समाप्ति सूर्य पर्वत पर होती है।

अब मैं प्रत्येक उद्गम स्थल से प्रारंभ होने वाली सूर्य रेखा का संकेत में वर्णन स्पष्ट कर रहा हूँ-

१. जीवनी अवस्था

यह रेखा गुरु पर्वत से प्रारंभ होकर सूर्य पर्वत तक पहुँचती है। ऐसी रेखा अपने आप में जटाना अनुकूल मानी जाती है। ऐसी रेखा रखने वाला व्यक्ति आर्थिक बुद्धि से सम्पन्न होता है। जीवन में पल्ली के अलावा अन्य कई जटियों से सम्पर्क रहता है और उनसे छन्-लाभ बरता है। अथवा ऐसे व्यक्ति जो साकुराज से विशेष धन प्राप्त होता है। सही शब्दों में कहा जाए तो ऐसे व्यक्ति का भास्योदय विवाह के उपरान्त ही होता है और अधिकतर ऐसे लोगों के भास्योदय प्रेमिका के माध्यम से होते रहते गए हैं। कई बार ऐसे व्यक्ति गोद चले जाते हैं, जिससे उन्हें विशेष धन-प्राप्त होता है।

२. दूसरी अवस्था

बहुत कम हाथों में ऐसी रेखा देखाने को मिलती है, परन्तु जिन लोगों के हाथों में ऐसी रेखा होती है, वे व्यक्ति उच्च काटि के बहाकार तथा भाषुक होती है। साथ ही वस्तु के माध्यम से धन-

संचय करते हैं। उनका भास्य अपने आप में उच्चावल होता है। रवभाव से वे व्यक्ति रसिक, मिलनसार तथा सम्मोहक व्यक्तिगत बाले होते हैं।

तीसरी अवस्था

इस प्रकार की सूर्य रेखा जिन हथेलियों में होती है, वे व्यक्ति मिलन्टी में या पुलिस विभाग में उच्च पद पर पहुँचते हैं तथा अपने कार्यों में राज्यसंसदीय अथवा राष्ट्रसंघीय सम्मान प्राप्त करते हैं। व्यापि ऐसे व्यक्ति अपने ही प्रवालों में सफलता प्राप्त करते हैं, परन्तु धीरे-धीरे परिव्राम करके अपने लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं।

चौथी अवस्था

ऐसे व्यक्ति प्रमुखत, बुद्धिमती होते हैं। इसके अन्तर्गत उच्च कोटि के वैज्ञानिक तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक व्यक्ति होते हैं। ये जीवन में यह किसी भी प्रकार का बार्य प्रारंभ करे, इहे पूँछ सफलता मिलती है और प्रत्येक देश में वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग करते हैं। इनके कार्य अपने आप में महत्वपूर्ण होते हैं। जीवन के रुपें वर्ष से इनका भास्योदय होता है तथा समाज में इनके विशेष सम्मान तथा यश प्राप्त होता है।

पांचवीं अवस्था

जिन हथेलियों में इस प्रकार की रेखा होती है, वे अपने जीवन में पूँछ सफलता प्राप्त करते हैं। व्यापि यह बात सही है कि इनका प्रारंभिक जीवन गरुड़त से ज्यादा कष्टमय होता है, परन्तु अपने प्रयत्नों से ये इन्हीं अधिक प्रगति कर लेते हैं कि लोग दातों तले उंगली बढ़ाते हैं। जीवन के १५ वर्षों के बाद इनका सम्बन्ध और यथा अन्यत्व उच्च स्तर का हो जाता है। इनके कार्य चमत्कारपूर्ण ढंग से सम्पन्न होते हैं तथा जीवन में और मृत्यु के बाद भी इन्हें अक्षण्य यश मिलता है। परन्तु यदि यह रेखा मार्ग में ही टूट जाती है, तो उसे जीवन में बदनामी का भी सामना करना पड़ता है।

छठी अवस्था

ऐसे व्यक्ति को जीवन में बहुत अधिक परिव्राम करना पड़ता है; न तो उसे जीवन में व्यवर्जित होना में विक्षा मिलती है और न उसे जीवन में उच्च उम्र में कोई सहायता देता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में जो भी उत्तरि करते हैं, अपने प्रयत्नों में ही कर जाते हैं। किंतु भी आगे चलकर ये व्यक्ति न्यायोदय, वैरस्तर अथवा प्रशुद्ध दिक्षा-शास्त्री बन जाते हैं। जीवन में कई बार विशेष यात्राएँ करते हैं तथा विश्वा में प्रेम सम्बन्ध के कारण बदनामी भी सहन करती होती है।

सातवीं अवस्था

ऐसे व्यक्तियों का भास्योदय विवाह के बाद ही होता है। विवाह के बाद ये व्यक्ति आश्वयनक स्थल से प्रगति करते हैं, अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं, तथा अपने लक्ष्य तक पहुँचने की योग्यता जट लेते हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, सहज एवं रसिक होते हैं। शान-शोकत, विश्वावा आदि इनका प्रिय लगता है। आँखबार प्रिय ये व्यक्ति अपने चारों ओर धम का बातावरण

बनाए रखते हैं।

आठवीं अवस्था

बहुत ही कम लोगों के हाथों में इस प्रकार की सूर्य रेखा देखने को मिलती है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति आदि का कोई प्रभाव नहीं रहता। ये व्यक्ति सदृशीपूणी जीवन व्यतीत करने वाले तथा धर्म में पूरी आस्था रखने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति उच्च करेटि के व्यापारों पर सफल साहित्यकार होते हैं।

नौवीं अवस्था

यह रेखा सुन्दर, स्पष्ट और लालिमा लिए हुए जिस व्यक्ति की हथेली में होती है, उस व्यक्ति का बचपन ऊँचन्हा रुखमय व्यतीत होता है। उसके जीवन में धन, ऐश्वर्य का कोई कमी नहीं रहती। जीवन में ऐसे लोगों को बहुत अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता। योहे से प्रवर्णनों ये ही इनको जीवन में सफलताएं मिलती रहती हैं। ऐसे व्यक्ति ऊँचे स्तर के व्यापारों में व्यक्ति द्वारा होता है। परन्तु इन लोगों में एक कमी यह होती है कि इनका सम्बन्ध निम्नरक्षर के व्यक्तियों से विशेष होता है, जिसकी वजह से स्पष्ट में इनका सम्मान कुछ कम होता है। परन्तु दो अपने जीवन में न तो राष्ट्राजी की पश्चात् लकड़ी है और न अपने ऊपर लिली प्रकार का अकूश ही मिलते हैं।

दसवीं अवस्था

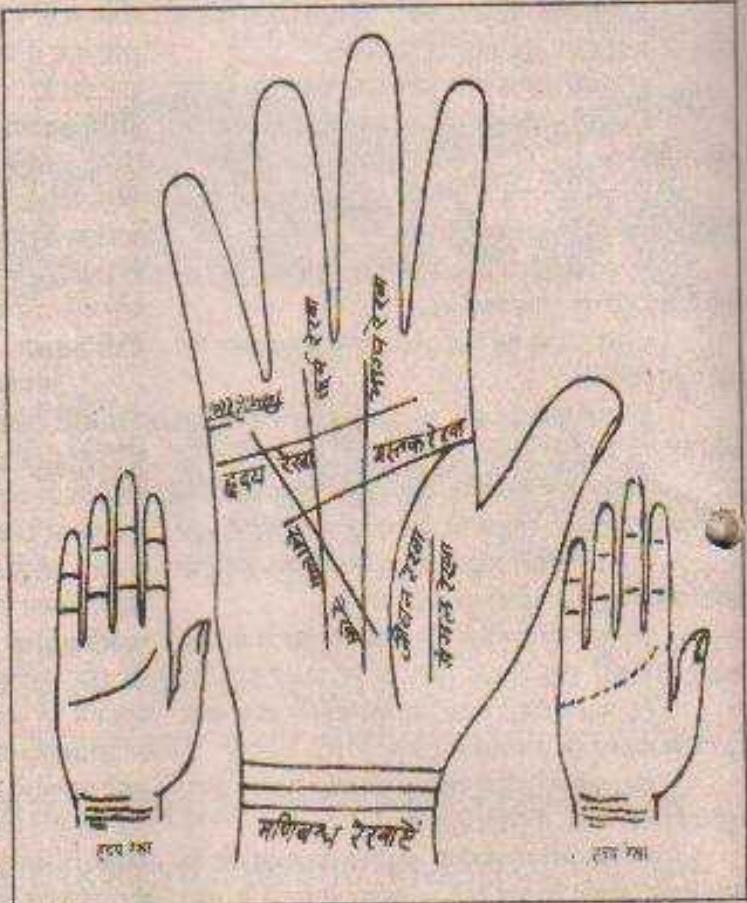
जिन व्यक्तियों में इस प्रकार की रेखा रेखा या सूर्य रेखा देखने का मिलता है, वे व्यक्ति बहुत तथा उत्साही होते हैं। बात के मूल में ये तुलत पहुँच जाते हैं और सभी वाले व्यक्ति के चेहरे को देख बर ही उसके मन के भावों को पहचान लेते हैं। जीवन में ये एवंत्र प्रकृति से बने रहते हैं। एक बार ये जो भी विषय जी लेते हैं, उस पर पूरी तरह से अग्रणी करते हैं। जीवन में ऐसे व्यक्ति सफल एवं श्रेष्ठ भिन्न करे जा सकते हैं।

चारहीं अवस्था

जिन लोगों के हाथों में यह रेखा पाई जाती है, वे व्यक्ति प्रबल भग्यशाली होते हैं, उनको जीवन में कई बार आकर्षिक धन-लाभ होता है। स्पष्ट में भौतिक दृष्टि से इनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। सभी दृष्टियों से ये व्यक्ति सुखी और सफल कहे जाते हैं।

बारहवीं अवस्था

बहुत कम व्यक्तियों के हाथों में इस प्रकार की सूर्य रेखा देखने को मिलता है, जिन व्यक्तियों के हाथों में ये रेखा होती है, वे सफल अभिनेता होते हैं, तथा अपनी कला के मध्यम से अतुल्य



धन तथा यश प्राप्त करते हैं।

उब मैं सूर्य से सम्बद्धित कुछ नये तथा पाउँको के सामने स्पष्ट कर रहा हूँ-

१. लालों, स्पष्ट और सीधी सूर्य रेखा व्यक्ति को यश, मान, प्रतिष्ठा दिलाने में सक्षम होती है।

२. यदि दोनों हाथों में यह रेखा स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में पूरी सफलता प्राप्त करता है।

३. यदि यह रेखा बिना कहीं से कटे हुए अपनी पूरी लम्बाई लिए हुए हो, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कमी नहीं रहती।

४. छोटी सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन में परिश्रम एवं संघर्ष के बावही सफलता देने में सक्षम होती है।

५. सूर्य रेखा जिस नगाह कट जाती है, आधुके उस भाग में वह व्यक्ति अपने व्यापार अधिक बढ़ाव लेता है।

६. यदि छोटी गहरी हो और सूर्य रेखा स्पष्ट हो, तो उस व्यक्ति की प्रतिगति का सही स्पष्ट में उपयोग नहीं हो पाता।

७. यदि यह रेखा पतली या फिक्की हो, तो वह व्यक्ति अपनी कला का पूरा-पूरा उपयोग नहीं कर पाता।

८. यदि सूर्य रेखा के माझे में छोप के चिन्ह हो, तो वह

जीवन में विवर्जिया होता है तथा उसको समाज से अपवश मिलता है।

१०. यदि हथेली में बृहस्पति पर्वत उभय फुल हो और सूर्यरेखा गहरी हो, तो उस व्यक्ति के सम्बन्ध अत्यन्त ऊँचे स्तर के व्यक्तियों से होते हैं।

११. यदि सूर्यरेखा पर नरों का चिन्ह हो, तो वह व्यक्ति अपनी कला के माध्यम से विज्वव्यापी सफलता प्राप्त करता है।

१२. हथेली में निसर स्त्रान पर सूर्यरेखा सबसे अधिक गहरी हो, आधु के उम्र भाग में वह व्यक्ति विशेष धन लाभ प्राप्त करता है।

१३. यदि सूर्यरेखा की समाप्ति पर जिन्द वा चिन्ह हो, तो उसे जीवन में बहुत अधिक कष्ट उठना पड़ता है और अन्न में सफलता मिलती है।

१४. यदि हथेली में रुद्ररेखा घलती हो, परंतु सीधी और ऊँच हो, तो वह व्यक्ति समुद्रितान होता है।

१५. यदि सूर्यरेखा के अन्त में नक्षत्र का चिन्ह हो, तो उसे रात्रियाणी सम्मान मिलता है।

१६. यदि सूर्यरेखा की समाप्ति कई छोटी-छोटी रेखाओं से हो, तो वह जीवन में भली प्रकार से प्रगति नहीं कर पाता।

१७. यदि सूर्यरेखा की समाप्ति किसी निराली रेखा से हो, तो वह जीवन में भली प्रकार से प्रगति नहीं कर पाता।

१८. यदि सूर्यरेखा की समाप्ति पर ब्रांस का चिन्ह हो, तो व्यक्ति का अन्त अत्यन्त दुखमय होता है।

१९. यदि सूर्यरेखा कई नग्न से दूरी हुई हो, तो उसमें ग्रनिभा तो होती है, परंतु उसके मध्यमें न तो वह शेष धन लाभ कर सकता है और न उसे उच्च कोटि का सम्मान ही मिलता है।

२०. यदि सूर्यरेखा हाथ में हो तो उस व्यक्ति का जीवन लगभग बेकार रहता है।

२१. यदि नूररेखा पर वर्ग चिन्ह हो, तो उसे जीवन में कई बार अपमान सहन करना पड़ता है।

२२. यदि तीनों हाथ में यह रेखा जीवन रेखा में प्रारंभ होती हो, तो वह कला के माध्यम से सफलता प्राप्त करता है।

२३. यदि सूर्यरेखा का अन्त वे भासाओं से होता हो या अन्त में यह रेखा वे भासाओं में बट जाती हो, तो समाज में उसे सम्मान नहीं मिलता।

२४. यदि सूर्यरेखा के साथ-साथ कई और सहायक रेखाएं दिखाई दें, तो वह जीवन में अश्चरणजनक प्रगति प्राप्त करता है।

२५. यदि विशाल रेखा के द्वारा सूर्यरेखा की हुई हो, तो उसका गुहमय जीवन पूर्ण दुखमय होता है।

२६. यदि सूर्यरेखा से कोई एक रेखा मस्तिष्करेखा की

ओर जाती हो, तो उसे जीवन में पूर्ण धन-लाभ रहता है।

२७. यदि इस रेखा पर चन्द्रमुख का चिन्ह हो, तो उसे प्रारंभ में बहुत ज्यादा असफलताएं मिलती हैं, परंतु अन्त में पूर्ण सफलता मिल जाती है।

२८. यदि इस रेखा को नीन-चार रेखाएं काटी हो, तो वह जीवन में किसी भी कार्य में सफल नहीं होता।

२९. यदि शनि पर्वत से कोई रेखा निकलकर रुद्ररेखा को काटी हो, तो आर्थिक कमी की वजह से वह जीवन में सफल नहीं हो पाता।

३०. यदि यह रेखा स्पष्ट हो पर साथ में कुह लघुवार रेखाएं दिखाई दें तो उस व्यक्ति की प्रतिभा का कोई उपयोग नहीं होता।

३१. यदि सूर्यरेखा गहरी हो और इसके दोनों ओर सहायक रेखाएं चल रही हों, तो उस व्यक्ति को उच्चस्तरीय सम्मान मिलता है।

३२. यदि सूर्यरेखा से कोई शाखा निकलकर शनि पर्वत के ओर जाती हो, तो उस पर्वत के विशेष गुण व्यक्ति को प्राप्त होते हैं।

३३. यदि सूर्यरेखा से कोई शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर पहुंच तो उस व्यक्ति को जीवन में श्रेष्ठ साज्य पद प्राप्त होते हैं।

३४. यदि इस रेखा के आल-पास बहुत सी छोटी-छोटी रेखाएं दिखाई दें तो उसके जीवन में आर्थिक बाधा रहती है।

३५. यदि छह यरेखा से निकलकर कोई शाखा विशुल्वत बन कर सूर्यरेखा को स्पर्श करे, तो उसे व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं के प्रयत्नों से ही सफलता प्राप्त करता है।

३६. यदि अनामिका ऊंचाई टेढ़ी-मेड़ी हो पर सूर्यरेखा स्पष्ट हो, तो उसे अपराध पूर्ण कार्यों से यश मिलता है।

३७. यदि सूर्यरेखा के अन्त में तीन रेखाएं दिखाई दें तो उसे जीवन में आर्थिक वृद्धि से कोई कमी नहीं रहती।

३८. यदि यह रेखा बार-बार टूट कर बढ़ रही हो, तो वह अपने आलस्य के कारण ही सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है।

३९. यदि यह रेखा जोनीरवार हो, तो उस व्यक्ति के जीवन में काफी बाधाएं रहती हैं।

४०. यदि यह रेखा टेढ़ी-मेड़ी हो तो उस व्यक्ति के कार्य ही उसके जीवन में बाधाएं उत्पन्न करते हैं।

४१. यदि छब्बेली में भास्य रेखा तथा सूर्यरेखा दोनों ही शेष हों, तो उसका जीवन सभी दृष्टियों ने शेष होता है।

४२. यदि रेखा के अन्त में ढीप हो, तो वह व्यक्ति जीवन-भर बीमार बना रहता है।

वल्लुत: सूर्यरेखा व्यक्ति के जीवन को और उसके प्रभाव को समझने के लिए बहुत अधिक उपयोगी है। अतः हस्तरेखा विशेषज्ञों को सूर्यरेखा का अत्यन्त भूलभासा और गहराई से अध्ययन करना चाहिए।

पुक्त दृष्टि में:
साधना शिविर पुर्वं दीक्षा
समारोह

23	सितम्बर	2001
	मुबई बोरावली (पूर्व) मुबई	
बगलामुखी साधना शिविर		
शिविर स्थल — सीताराम बाग मेरिज हॉल जेन मंदिर गोड नं. ९ बोलतनगर बोरावली पूर्व मुबई - ४०००६६		
आयोजक — * सनोज मिश्रा ०२२-८०५०३२३ * जगेंज मिह ०२२-४३१३७७२ * चन्द्र टवर मलानी ४९२९०९० * कीर्ति भाई ९५२५०-४१२१६६ * कृष्णा गोडा ०२२-८४१२८६० * हरिशंकर पांडे ०२२-८८३६८०८ * एडवंकेट एकनाव शय ०२२- ८८८६०९४ * प्रकाश शर्मा * पा. एस. खान्ना ९८२०१११९५० * भास्करन जी		
17-18	अक्टूबर	2001
	कानपुर	
शारदीय नवरात्रि साधना शिविर		

शिविर स्थल — बुजेन्द्र स्वरूप पांडे कानपुर (उ. प्र.)
.आयोजक — * राजवीर सिंह ०५१२-६१२०१६ * गोवर्ण मिह
०५२८२२२००२ * राकेश निषाठी ७७००२३ * सत्य नारायण
२४३४२७ * नितिन चन्द्र पंचारिया ३५९४५३ * एस. के. बनजी
६०६५१० * डॉ. प्रमोद कुमार सच्चान * सुरेश पाण्डे * कैलाश
वर्मा * वी. पी. निवारी * श्रीमनि कोता मिह * कुवर
संजय मिह * वर्षन मिह यादव * प्रमोद कुमार मास्टर
फैम. के. वीथित * राजीव श्रीवास्तव * अनय कुमार
कनौजिया * विजय गुप्ता * डॉ. रमेश चन्द्र शास्त्री *
राजकुमार रस्सोंगी, लखीमपुर * राम मिह राठोर, सीतापुर
* लाल माटी निखिल, अम्बेडकर नगर टोडा * सुनील कुमार
ठंडन, शाहजहांपुर * लाल जी त्रिपाठी, उक्ता * अच्छेलाल
यादव, फेजाबद * ओम कुमार अस्त्रिया।

23-24 अक्टूबर 2001
नवसारी (गुजरात)
शारदीय नवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल — साधा कृष्ण मंदिर दूधिया तलाव, नवसारी
आयोजक — * रमेश पाटेल ०२६३२-५३१८८.५६९८० * विल
डॉ. राणा बलसाड * रमेश प्रजापति बलसाड ४६७३८ *
राजाराम वर्मा तमण * प्रविज पटेल खिलवासा * वेन्द्र
पंचाल उवाडा * संजय पारेख बलसाड * जयरा भाई बलसाड
बलसाड ४१६९०

13-14 नवम्बर 2001
जोधपुर
दीपावली महोत्सव

शिविर स्थल — परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण
दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले एवं वन्दनीय माता
भगवती के चरणारविन्दो तल जोधपुर की
दिव्यतम भूमि में आप सभी गुरु भाई बहिनों को
प्यार भरा आमंत्रण, हम तो केवल अपने हृवय के
भावों द्वारा आप से निवेदन कर सकते हैं, आप
भी सदगुरुदेव के आत्म अंश हैं आप अवश्य ही
आएंगे। — समस्त जोधपुर स्टाफ

साधक, पाठक कृपया ध्यान दें

- पत्रिका एवं पुस्तकों से सम्बन्धित शुल्क
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान जोधपुर के नाम से भेजें।
- साधना सामग्री केसेट्स आदि से सम्बन्धित
शुल्क मंत्र शक्ति केन्द्र जोधपुर के नाम से भेजें।
- साधक साधना सामग्री वी. पी. फेक्स के
लिए जोधपुर कार्यालय ही सम्पर्क करें।
- साधक साक्षी एवं पाठकों के पत्र (साधक
साधिका) कृपया अपनी अनुभूति बड़े एवं स्पष्ट
अच्छे अक्षरों में लिखें।

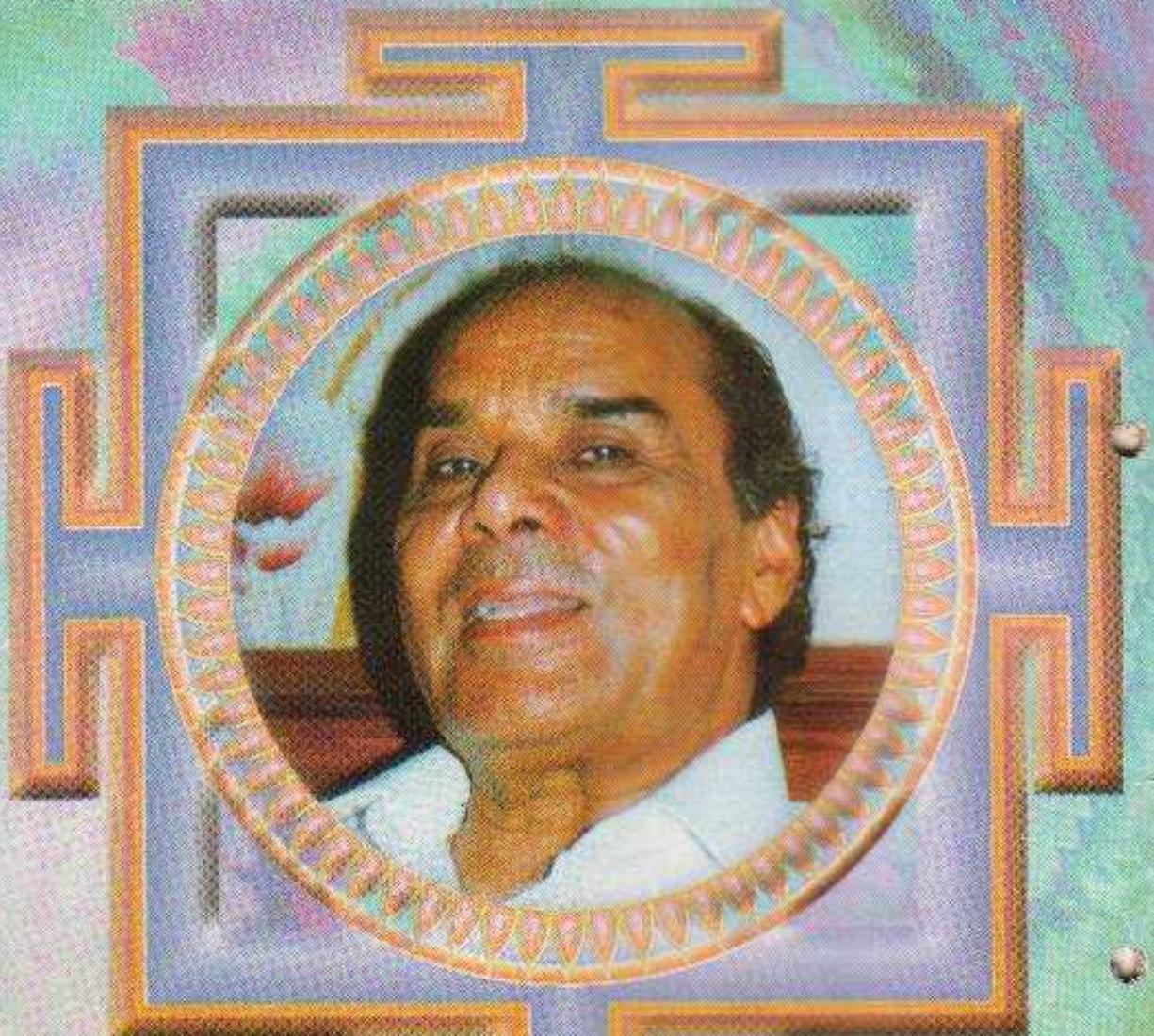
रजिस्ट्रेशन नं० 35305/61

With Registrar Newspapers of India.
Posting Date 14-15 every month.

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2001

Licence to Post without Pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2000



माह : अक्टूबर में दीक्षा के लिए विधीय उद्योग विशेष दिवस

दिनांक
6-7-8 अक्टूबर 2001
स्थान
गुरुदाम, जोधपुर

पहला गुरुदेव जिक्र लिंगिं दिवसों पर
आश्वारों से जिलों व दीक्षा प्रदान करें।
इससे क आश्वार जिदार्शित दिवसों
पर पहुँच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
जिदार्शित दिवसों पर भी दीक्षाएं
चाल - २२ बजे से २५ बजे के अवधि
लांडा ५ बजे से ७: ३० बजे के
अवधि प्रदान की जायेंगी।

दिनांक
27-28-29 अक्टूबर 2001
स्थान
गिरावंश, विजली

वर्ष - 21

अक

सम्पर्क :

पंथ-तंत्र-कर विज्ञन, डॉ० श्रीमती सरी, हाईट्रो लॉटोनी, जोधपुर-342001 (राजस्थान), फोन: 0291-432209, टेली फैक्स: 0291-432-

फिलांड्रा २७६, कोशर एक्स्प्रेस वर्क विली-३४, फोन: 011-7182248, टेली फैक्स: 011-7196700

१४



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

